अल-बरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, अलीगढ़
की
मतबूआ किताबें
नाशिर
अल-बरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, अलीगढ़
पोस्ट सी.डी.एफ., अनूपशहर रोड, अलीगढ़ (उ0प्र0)
Ph.: 0571-6500603, Fax: 0571:2720967
हयाते मशायख़े मारहरा
डॉ० अहमद मुजतबा सिद्दीकी
हयाते मशायख़े मारहरा
तालीफ
डॉ० अहमद मुजतबा सिद्दीकी
अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़

इन्तिसाब

मुअर्रिख़े ख़ानदाने बरकात ताजुल उल्मा सिराजुल उ़रफ़ा
सय्यद शाह औलादे रसूल
मुह़म्मद मियाँ क़ादरी अ़लैहिर्रह़मा के नाम

जिन्होंने सबसे पहले इस ख़ानदाने आ़लीशान की तारीख़ नवीसी की इब्तिदा

और

ह़ज़रत सय्यद शाह आले अ़बा क़ादरी नूरी अ़लैहिर्रह़मा

के नाम

जिनके दोनों फ़र्ज़न्दों

ह़ज़रत सय्यदुल उल्मा और ह़ज़रत अह़सनुल उल्मा ने अपनी दीनी, मिल्ली व रूह़ानी ख़िदमात से ख़ानक़ाहे बरकातिया को अ़स्रे ह़ाज़िर की ख़ानक़ाहों की आबरू बनाया।

अह़मद मुजतबा सिद्दीक़ी

.

पेश लफ़्ज़

ख़ानवाद–ए–बरकातिया के बुज़ुर्ग हर ज़माने में अपने इल्मो फ़ज़्ल के सबब एक ख़ास अहमियत और मक़बूलियत के हामिल रहे। इल्मो फ़ज़्ल, इस्तिक़ामत व करामत के बावुजूद भी अपने आपको ख़ौफ़े ख़ुदा के दाइरे में रखकर मख़लूक़ के साथ जिस तरह से पेश आए उसकी मिस़ाल और जगह मुश्किल से मिलती है। बादशाह से लेकर फ़क़ीर तक एक ही रवय्या, एक ही सुलूक। बस! इसी शाने बेनियाज़ी ने इन ह़ज़रात को ज़माने की तवज्जो का मरकज़ बनाया।

अल–ह़म्दु लिल्लाह! आज हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तान से बाहर ईमान की मज़बूती और अ़क़ीदे की ताज़गी के साथ जो अह्ले सुन्नत और अह्ले मुह़ब्बत की जमाअ़त है उसकी तरबियत और रूह़ानी इस्लाह़ में ख़ानक़ाहे बरकातिया का कलीदी किरदार सामने है और इसकी सबसे बड़ी वजह यहाँ से तरबियत पाए हुए ख़ुलफ़ा की दीनी ख़िदमात और बुज़ुर्गों का फ़ैज़ाने तसर्रुफ़ है।

ख़ानक़ाहें दर अस्ल रूह़ानी तरबियतगाह हुआ करती हैं जहा दिलों और ज़ह्नों की सफ़ाई का काम ज़िक्रे ख़ुदा और इश्क़े रसूल के ज़रिये हुआ करता है। वक़्त के साथ ख़ानक़ाहियत, दरगाहियत में तब्दील हुई, इस्लाहे़ क़ल्ब से ज़्यादा ध्यान रस्मो रवाज पर दिया जाने लगा और उनमें बिदअ़ात का दख़्ल शुरू होने लगा और यही वजह है कि जमाअ़ते ह़क़ बातिल फ़िर्क़ों का निशाना बनी। हमसे जैसे जैसे दीन दूर हुआ वैसे वैसे दूसरी ग़ैर ज़रूरी चीज़ें हमारा पीछा करने लगीं। मारहरा शरीफ़ को ये इम्तियाज़ हमेशा ह़ासिल रहा कि यहाँ के मशाइख़ क़दीम दौर से लेकर अब तक साह़िबे इल्म और साह़िबे क़लम रहे। अगर इनके इल्मी कारनामों की

फ़ेहरिस्त मुरत्तब की जाए तो 250 से ज़्यादा किताबें और रिसाले मशाइख़े मारहरा के हमारे सामने होंगे। अकाबिरे मारहरा ने इ़ल्म और अह्ले इ़ल्म दोनों को सराहा, अपने मुरीदीन और चाहने वालों को इ़ल्म ह़ासिल करने की तरग़ीब दी और उसके लिये रास्ते भी हमवार किये। आज भी अल–ह़म्दु लिल्लाह बुज़ुर्गाने मारहरा के रूह़ानी फ़ैज़ान का यह सिलसिला जारी व सारी है। ख़ानक़ाह, पीरी मुरीदी सब अपनी जगह है ही लेकिन साथ साथ दीनी व दुनियावी तालीम से अ़वाम को फ़ाइदा पहुँचाने के सामान भी ख़ानक़ाह में मुहय्या हैं। अल–बरकात जैसा दुनियावी तालीम का इदारा भी है और जामिया अह़सनुल बरकात जैसा दारूल उ़लूम भी।

ज़माना भले ही करवटें ले रहा हो, क़दरों में भले ही ज़वाल आया हो, रूह़ानी मरकज़ों के मिज़ाज गरचे बदल गए हों लेकिन ख़ानक़ाहे बरकातिया के निज़ाम में तबदीलियाँ सिर्फ़ सुहूलत के ह़वाले से आई हैं वरना सब कुछ वही है चाहे रिवायतें हों या इ़नायतें, ख़िदमते ख़ल्क़ या अख़लाक़ी बुलन्दियाँ सब में यहाँ वही पुराना तौर तरीक़ा, वही ख़ानक़ाही रंग, वही रिवायतों की पासदारी, वही आला किरदार के नमूने, **अल–ह़म्दु लिल्लाह**!

ख़ानक़ाहे बरकातिया के बुज़ुर्गों की ह़यात व ख़िदमात को लोगों तक पहुँचाने का वाहि़द मक़सद यह है कि यहाँ से जुड़े लोग, ख़ास तौर से नौजवान साथी इन बुज़ुर्गाने दीन की ज़िन्दगी के तौर तरीक़ों से आगाह हो जाएँ और कम से कम यह समझ सकें कि अच्छे बन्दे कैसे होते हैं और अच्छा बन्दा बनने के लिये काम क्या करने होते हैं?

मौजूदा दौर में ख़ानक़ाहे बरकातिया ने अपना मिशन इ़ल्म को आ़म करने का बनाया है। अपने चाहने वालों से गुज़ारिश भी की जा रही है और नसीह़त भी कि पढ़ें, लिखें, ज़ह्न को रोशन रखें। यह तमाम किताबें इसीलिये तैयार की

जा रही हैं कि लोगों को जिन ह़ज़रात से अ़क़ीदतें हैं वह उनको पहले जानें और फिर उनको मानें। इसी में अ़क़ीदत और वाबस्तगी का लुत्फ़ है।

अल्लाह तआ़ला का शुक्र व एह़सान है कि उसने ख़ानक़ाहे बरकातिया से जुड़े नौजवान बरकातियों को अपने मुर्शिदाने गिरामी का वफ़ादार भी बनाया और जाँनिस़ार भी और इन दोनों चीज़ों की तसदीक़ कहने से नहीं बल्कि अ़मल से होती है।

मुझे बेह़द ख़ुशी है कि पिछले साल Barkaati Youth Meet बिरादरे अ़ज़ीज़ सय्यद मुह़म्मद अमान क़ादरी (वली अ़ह्द) के ज़ेरे क़ियादत हुई और उसमें उन बरकाती नौजवानों में एक अलग हौसला देखने को मिला। उन पुरअ़ज़्म साथियों ने ख़्वाहिश ज़ाहिर की कि हम अब अपने बुज़ुर्गों पर लिट्रेचर तैयार कराकर लोगों में तक़सीम करेंगे जिसकी पहली कड़ी आपके सामने ''**ह़याते मशाइख़े मारहरा**'' है। इस किताब की इशाअ़त का एहतिमाम तमाम बरकाती नौजवानों ने "Barkaati Boys Fund" बनाकर किया है इस उम्मीद के साथ कि यह सिलसिला आगे भी ऐसे ही जारी रहेगा।

मैं उन तमाम नौजवान बरकाती भाईयों का शुक्रिया अदा नहीं करूँगा बल्कि हम सब मिलकर मशाइख़े मारहरा का शुक्रिया अदा करेंगे कि उनकी नज़रे इन्तिख़ाब हम पर पड़ी।

इससे क़ब्ल राक़िम ने हिन्दी और उर्दू में बुज़ुर्गाने मारहरा की सवानेह़ ह़यात किताबचे की शक्ल में नाना ह़ज़रत अह़सनुल उल्मा के चहल्लुम पर मुरत्तब की थी जिसे MSO of India ने शाए किया था। इरादा था उसी को जदीद शक्ल में दुबारा प्रिन्ट कर दें लेकिन मोह़तरम मामूजान ह़ज़रत शर्फ़े मिल्लत का हुक्म हुआ कि किताब थोड़ी ज़ख़ीम होना चाहिये ताकि सवानेह़ लिखने का कुछ तो ह़क़ अदा हो। मुझे

इस मौक़े पर अपने अ़ज़ीज़ दोस्त और सुन्नी नौजवानों के लिये नमूनए अ़मल शहीदे बग़दाद आ़लिमे रब्बानी अ़ल्लामा उसैदुल हक़ क़ादिरी अ़लैहिर्रहमा बहुत याद आए क्योंकि बेशतर मक़ामात पर मैं उनको फ़ोन करके इसकी तरतीब में परेशान ज़रूर करता ह़ालाँकि वह मारहरा शरीफ़ के किसी भी काम के लिये आधी रात को तैयार हो जाते थे। अल्लाह तआ़ला उसैद मियाँ के दरजात बुलन्द फ़रमाए। **(आमीन)**

मैं अपने शफ़ीक़ मामूओं की शफ़क़तों का शुक्रिया क्या अदा कर सकूँगा, वह तो मेरे लिये शजरे सायादार हैं जिनकी छाँव में ज़माने की ह़िद्दत से बेनियाज़ और पुरसुकून बैठा हूँ। अल्लाह तआ़ला इन शफ़ीक़ सरपरस्तों की उ़म्र और सेह़त में बरकत अ़ता फ़रमाए। **(आमीन)**

मौलाना मुग़ीस़ साह़ब ने हिन्दी टाईपिंग की पूरी ज़िम्मेदारी लेकर उसको पाए तकमील तक पहुँचाया। अल्लाह उनको जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए। **(आमीन)**

अल्लाह तआला मेरे वालिदैन का साया मेरे ऊपर क़ायम व दायम रखे और अपने ह़बीबे पाक के सदक़े में सिराते मुस्तक़ीम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। बुज़ुर्गाने मारहरा के अलताफ़ो करम की बारिशें उनके मौरूस़ी गुलाम अह़मद मुज्तबा पर ऐसे ही होती रहें। **(आमीन)**

''हम तो इक ख़ाक का टुकड़ा था जहाँ ओस न फूल
हम पे बरसा ये तेरा अब्रे इ़नायत ही तो है।''

अह़मद मुजतबा सिद्दीक़ी

ह़र्फ़े ज़र्री

आबरूए ख़ानदाने बरकात अमीने मिल्लत प्रोफ़ेसर
सय्यद शाह अमीन मियाँ क़ादरी बरकाती
ज़ेबे सज्जादा, आस्तानए आ़लिया बरकातिया मारहरा शरीफ़

ये मेरे लिये बड़ी ख़ुशी की बात है कि नौजवान बरकाती अह़बाब की ख़्वाहिश पर अज़ीज़म अह़मद मुजतबा सल्लमहु ने ''ह़याते मशाइख़े मारहरा'' तरतीब दी है। अल्लाह तबारक व तआ़ला का बेह़द शुक्र है कि ख़ानदाने बरकात से मुह़ब्बत करने वाले बरकाती अह़बाब दामे, दिरमे, क़दमे, क़लमे, सुख़ने दीनो सुन्नियत व बरकातियत की ख़िदमात में ख़ुद को वक़्फ़ किये हुए हैं और बिल ख़ुसूस नौजवानों में तो यह हौसला देखने के क़ाबिल है। अल्ह़म्दुलिल्लाह! ह़याते मशाइख़े मारहरा में तक़रीबन तमाम ही बुज़ुर्गों के ह़ालाते ज़िन्दगी को बड़े सहल और सादा तरीक़े से पेश किया गया, साथ ही एक और बात आसानी की यह है कि यह किताब हिन्दी रसमुल ख़त में है, जिसकी वजह से एक बड़ा तबक़ा इससे फ़ायदा उठा सकेगा। एक नसीह़त ख़ास कर अपने नौजवान बरकाती अह़बाब से करूँगा कि वह उर्दू पढ़ना लिखना सीखें ताकि ज़्यादा से ज़्यादा मज़हबी किताबों से फ़ायदा उठा सकें।

अपने Barkaati Boys Fund के मिम्बरान को इस किताब की इशाअ़त और उनके मुख़लिस तआ़वुन पर दिली मुबारकबाद और दुआ़एँ।

गुलहाए शफ़क़त

फ़ख़्रे बरकातियत शर्फ़े मिल्लत
हज़रत सय्यद मुहम्मद अशरफ़ मियाँ क़ादरी

ख़ानक़ाहे बरकातिया के मुरीदीन व मुतवस्सिलीन के लिए यह बड़ी मसर्रत की बात है कि उन के मख़्दूमाने गिरामी के हालाते ज़िन्दगी ''हयाते मशाइख़े मारहरा'' बज़ुबान हिन्दी मुरत्तब होकर मन्ज़रे आम पर आ रहे हैं। ख़ादिमाने ख़ानदाने बरकात के लिये यह बात हमेशा ख़ुशियों में इज़ाफ़े का बाइस रही कि हमें अहबाब बहुत चाहने वाले मिले और हमारे अहबाब के लिये यह बात बाइसे सुकून है कि उनको उनके पीरख़ाने से हमेशा मुहब्बतें मिलती रहीं।

अल्हम्दुलिल्लाह आज यह देख कर बड़ी ख़ुशी होती है कि ख़ानदाने बरकात से वाबस्ता नौजवानों में लिल्लाहियत, हिम्मते दीनी और अपने पीरख़ाने के तईं गहरी अक़ीदत और वाबस्तगी है और उम्मीद है कि इंशाअल्लाह उसमें इज़ाफ़ा ही होता रहेगा।

अज़ीज़ी अहमद मियाँ सल्लमहू की मुरत्तब करदा किताब भी इन्हीं चाहने वालों की तमन्ना का एक हिस्सा है। हयाते मशाइख़े मारहरा का मुताला करने पर यह अन्दाज़ा हुआ कि इंशाअल्लाह वाबस्तगाने सिलसिल–ए–बरकातिया अपने मशाइख़े एज़ाम की हयात व ख़िदमात से कमा हक़्क़हू रौशनी हासिल कर सकेंगे।

अहमद सल्लमहू ने ख़ानदाने बरकातिया से मुतअल्लिक तमाम किताबों से अर्क़ रेज़ी कर के तमाम अहम वाक़ियात और ख़िदमात का इहाता करने की कोशिश की है। लिखने–लिखाने, पढ़ने–पढ़ाने का सिलसिला

अल्ह़म्दुलिल्लाह ख़ानवाद–ए–बरकात में रोज़ अफ़रोज़ है और उम्मीद है आगे और मज़बूत होगा। इंशाअल्लाह आने वाले वक़्तों में और भी ज़्यादा मवाद और मालूमात के साथ तारीख़े ख़ानदाने बरकात को शाए किया जाएगा।

मुअर्रिख़े ख़ानदाने बरकात और मेरे पीर व मुर्शिद हज़रत ताजुल उ़लमा अलैहिर्रह़मा ने तारीख़ नवीसी की जो इब्तिदा अपने दस्ते मुबारक से की थी इंशाअल्लाह यह रौशन सिलसिला नस्ल दर नस्ल इस ख़ानक़ाह से जारी व सारी रहेगा। मैं उन तमाम नौजवानों को दिल से दुआ़ देता हूँ जिन्होंने बाहमी तआ़वुन के साथ इस इल्मी काम को अन्जाम देने की पेशकश की। अल्लाह तबारक व तआ़ला उनकी इस नेक नियती को क़ुबूल फ़रमाए और मज़ीद कारे ख़ैर अन्जाम देने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। **(आमीन)**

मैं अपने इन तमाम अह़बाब व मुतवस्सिलीन से गुजारिश करना चाहता हूँ कि वह इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुताला करें और अपने मशाइख़ के ह़ालाते ज़िन्दगी को मशअ़ले राह बनाएँ। रब्बे करीम अपने ह़बीबे पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदक़े तुफ़ैल ख़ानक़ाहे बरकातिया के वक़ार और इक़बाल में दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए। इस रूहानी ख़ानवादे के मुतवस्सिलीन को अपने ख़ज़ानए ग़ैब से नेमतें और बरकतें अ़ता फ़रमाए और किताब के मुअल्लिफ़ अ़ज़ीज़ी डॉ0 अह़मद मुजतबा सिद्दीक़ी को दारैन में जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए। **(आमीन)**

सुल्तानुल आ़शिक़ीन साह़िबुल बरकात
ह़ज़रत सय्यदना शाह बरकतुल्लाह
इश्क़ी व पेमी मारहरवी रह़मतुल्लाह अ़लैह

शाहे बरकात बरकात पेशीनियाँ
नौ बहारे तरीक़त पे लाखों सलाम

इमामे सिलसिलए बरकातिया हुज़ूर सय्यद शाह बरकतुल्लाह इश्क़ी व पेमी मारहरवी रह़मतुल्लाह अ़लैह की विलादत 26 जमादिल आख़िर 1070 हिजरी में बिलग्राम शरीफ़ में हुई।आपके वालिदे माजिद ह़ज़रत शाह उवैस इब्ने अ़ब्दुल जलील बिलग्रामी रह़मतुल्लाह अ़लैह हैं।

आपका नसब नामा इस तरह हैः ह़ज़रत सय्यद शाह बरकतुल्लाह बिन ह़ज़रत सय्यद शाह उवैस बिन सय्यद शाह अ़ब्दुल जलील बिन मीर सय्यद अ़ब्दुल वाह़िद बिलग्रामी (साहिबे ''सबअ़ सनाबिल'') बिन सय्यद इब्राहीम बिन सय्यद कुतबुद्दीन बिन सय्यद शाह माहरू बिन सय्यद शाह बुढा बिन सय्यद कमाल बिन सय्यद क़ासिम बिन सय्यद हुसैन बिन सय्यद नसीर बिन सय्यद हुसैन बिन सय्यद उ़मर बिन मीर सय्यद मुह़म्मद सुग़रा उर्फ़ दावतुस्सुग़रा बिन सय्यद अ़ली बिन सय्यद हुसैन बिन सय्यद अबुल फ़रह़ स़ानी बिन सय्यद अबू फ़राश बिन सय्यद अबुल फ़रह़ बिन सय्यद दाऊद बिन सय्यद हुसैन बिन सय्यद यह़्या बिन सय्यद ज़ैद सोम बिन सय्यद उ़मर बिन सय्यद ज़ैद दोम बिन सय्यद अ़ली इराक़ी बिन सय्यद ह़सन बिन सय्यद अ़ली बिन सय्यद मुह़म्मद बिन सय्यद

ईसा मूतिमुल अशबाल (शेरों को यतीम बनाने वाले) बिन सय्यद ज़ैद शहीद बिन इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन बिन सय्यदुश्शुहदा ह़ज़रत इमामे हुसैन बिन ह़ज़रत अमीरूल मोमिनीन सय्यदना ह़ज़रत अ़ली–ए–मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम ज़ौज (शौहर) सय्यिदतुन्निसा फ़ातिमतुज़्ज़हरा बिन्त सय्यदुल अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा तक पहुँचता है (सल्लल्लाहु अ़लैह व सल्लम व रदियल्लाहु अ़न्हुम अजमईन)

हुज़ूर साहिबुल बरकात सिलसिलए बरकातिया के बानी और अपने दौर के मशहूर सूफ़ी, आ़लिम, मुसन्निफ़ और शायर बुज़ुर्ग हैं। साहिबुल बरकात को बैअ़त और ख़िलाफ़त सिलसिलए चिश्तिया में अपने वालिदे माजिद शाह उवैस से ह़ासिल थी। इसके अ़लावा अपने चचाज़ाद भाई सय्यद मुरब्बी इब्ने सय्यद अ़ब्दुल नबी से भी सिलसिलए क़ादरिया आबाई में इजाज़त व ख़िलाफ़त ह़ासिल थी।

हुज़ूर साहिबुल बरकात सरकारे ग़ौसे आज़म के इ़श्क़ में सरशार थे और इ़श्क़ इस दरजा पहुँचा हुआ था कि सैराबी न होती थी। मअ़रिफ़त और तरीक़त की प्यास और इ़श्क़े ग़ौसे़ आज़म में सरशार होकर मख़्दूमे काल्पी ह़ज़रत सय्यदना शाह फ़ज़्लुल्लाह रहमतुल्लाह अ़लैह की बारगाह में ह़ाज़िर हुए। कुतुबे मारहरा का सरकारे काल्पी ने सीने से लगाकर इस्तिक़बाल किया, अपनी टोपी अ़ता फ़रमाई और दरिया–ब–दरिया पेवस्त फ़रमाते हुए सिलसिलए क़ादरिया की ख़िलाफ़त व इजाज़त अ़ता फ़रमाई।

सरकारे काल्पी ने हुज़ूर साहि़बुल बरकात को रूख़सत करते हुए फ़रमाया कि तुम्हारा सुलूक कमाल की इन्तिहा को पहुँचा, तुम अपने मकान में क़याम करो। उसी जगह तुम्हारी ज़ाते बाबरकत इस्तिक़ामत के साथ रहे, वहाँ के तालिबों और फ़ैज़ पाने वालों को कहीं जाने की ज़रूरत नहीं। मख़्दूमे काल्पी की ज़ुबान का यह अस़र था कि हुज़ूर साहि़बुल बरकात ने 34 साल तक सज्जादए बरकातिया से अपने आपको जुदा ना किया।

सिलसिलए क़ादरिया की दौलत हा़सिल करके हुज़ूर साहि़बुल बरकात अपने दादा सय्यद शाह जलील अ़लैहिर्रह़मा के विसाल के बाद (औरंगज़ेब के ज़माने में) मारहरा शरीफ़ तशरीफ़ लाए और ''पेम नगर बरकात नगरी'' आबाद की जो इस वक़्त ''मुह़ल्ला बस्ती पीरज़ादागान'' मारहरा शरीफ़ के नाम से मशहूर है और इसी जगह उन्हें नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अ़लैह व सल्लम और ह़ज़रत सय्यदना ग़ौसे़ आज़म की ज़ियारत का शर्फ़ हा़सिल हुआ और आपको बशारत दी गई कि तुम इस जगह मुस्तक़िल सुकूनत इख़्तियार करो। सरकारे ग़ौसे आज़म ने हुज़ूर साहि़बुल बरकात की आल में सात कुतुब पैदा होने की बशारत फ़रमाते हुए ह़ज़रत बू अ़ली शाह पानीपती रह़मतुल्लाह अ़लैह के ज़रिये अपनी तस्बीह के सात दाने इस बशारत की तसदीक़ में अ़ता फ़रमाए, साथ ही सरकारे ग़ौसे आज़म ने हुज़ूर साहि़बुल बरकात से ऐसा जुमला अ़ता फ़रमाया जिस पर सुबहे़ क़यामत तक बरकाती गुलाम फ़ख़्र भी करेंगे और मुतमइन भी रहेंगे। सरकारे बग़दाद ने फ़रमायाः ''बरकतुल्लाह! अ़ब्दुल क़ादिर जब तक

तेरे मुरीदो को जन्नत में न दाख़िल करा देगा खुद जन्नत में दाख़िल न होगा।''

हुज़ूर साहि़बुल बरकात की इ़बादतो रियाज़त का आ़लम निराला था, आपने सुलूको तसव्वुफ़ की उन तमाम मन्ज़िलों को तय फ़रमाया जिसके बाद मक़ामे महबूबियत और ताजे विलायत हा़सिल होता है। इ़बादतों का यह आ़लम था कि तारीख़दॉ लिखते हैं कि 26 साल मुसलसल हा़लते रोज़ा में रहे और खजूर और क़लील ग़िज़ा से इफ़तार फ़रमाते, हर वक़्त यादे इलाही में ग़र्क़ रहते और मुद्दतों रात भर बेदार और मशगूले इ़बादत रहे।

दरवेशी और इन्किसारी का यह आलम था कि कभी दुनिया और दुनियादारों की तरफ़ तवज्जो न फ़रमाई और पूरी ज़िन्दगी दीन की तब्लीग़ और मख़लूक़े ख़ुदा की रहनुमाई में गुज़ारी। आपके रूहानी कमाल और शख़्सिय्यत का यह शोहरा था कि बड़े–बड़े बादशाहों से लेकर अमीर कबीर हा़ज़िरी देने के लिये अ़र्ज़ियाँ पेश करते थे।

औरंगज़ेब से लेकर बादशाह मुह़म्मद शाह तक सरकार साहि़बुल बरकात की बारगाह में अ़र्ज़ी पेश करते लेकिन बारयाबी मुश्किल होती। हुज़ूर साहि़बुल बरकात की बेनियाज़ी और तवक्कुल का यह आ़लम था कि एक मर्तबा आपके ख़लीफ़ा अ़ब्दुल्लाह शाह साह़ब को बादशाह मुह़म्मद शाह ने उनकी क़यामगाह पर हा़ज़िर होकर कुछ नज़्र पेश कर दी थी तो हुज़ूर साहि़बुल बरकात ने सख़्त नाराज़गी का इज़हार करते हुए फ़रमायाः ''हम जानते हैं तुम्हारी ख़्वाहिश मुलाक़ात की न थी लेकिन अगर बादशाह के आने की ख़बर मिल गई थी तो तुम्हे वह जगह छोड़ देनी चाहिए थी।'' आगे फ़रमायाः ''फ़क़ीर तो तुम्हारे दिलों को

अल्लाह के नाम से रोशन करता है और तुम अपने दिल पर मुहम्मद शाह का नाम लिखते हो।''

यह हुज़ूर साहि़बुल बरकात के फ़ैज़ान ही का अस़र है कि मौजूदा दौर में भी उनके वारिस़ो जानशीन हुकूमत व स़रवत से ख़ुद को बेनियाज़ रखते हैं।

सिलसिल–ए–क़ादरिया बरकातिया के 33वें शैख़े तरीक़त हुज़ूर साहि़बुल बरकात ने पूरी ज़िन्दगी मज़हबे इस्लाम और सुन्नते रसूल की ख़िदमत में गुज़ार दी, न जाने कितने वीरान दिलों को आबाद किया। आप तफ़सीर ह़दीस़, फ़िक़्ह, मन्तिक़, तारीख़, शायरी सब में बेमिस़ाल सलाहि़यतों के ह़ामिल थे। बृज भाषा के ऐसे बड़े शायर थे कि मशहूर माहिरे लिसानियात (Linguistics) प्रोफ़ेसर मसूद ह़सन ख़ाँ ने अपने तारीख़े उर्दू ज़ुबान व अदब के मुक़द्दमे में लिखा कि ''भाषा की शायरी शाह बरकतुल्लाह पेमी की शायरी के बग़ैर अधूरी है।''

साहि़बुल बरकात ने तमाम रियाज़तों, इ़बादतों और सुलूक व तसव्वुफ़ की मंज़िलों के सफ़र करने के बावुजूद किताबों के मुताले का बहुत शौक़ रखते और ख़ुद भी किताबें तसनीफ़ फ़रमाते। चहार अनवाअ़, सवाल व जवाब, मजमउ़ल बरकात, बयाज़े ज़ाहिर व बातिन, रिसाला तकसीर, अ़वारिफ़े हिन्दी, रिसाला तसव्वुफ़, वसीयतनामा वग़ैरा आपकी क़लमी यादगार हैं।

साहि़बुल बरकात का शुमार उस दौर में बृज भाषा, अ़रबी और फ़ारसी के मुम्ताज़ शायरों में था। दीवाने फ़ारसी, पेम प्रकाश, मस्नवी रियाज़े इ़श्क़, रूक़आ़ते सूफ़िया आपकी शायरी की तसनीफ़ात हैं। साहि़बुल बरकात फ़ारसी

और अ़रबी में ''इ़श्क़ी'' और हिन्दी में ''पेमी'' तख़ल्लुस फ़रमाते।

आपकी शादी सय्यद मौदूद साह़ब की साह़बज़ादी से हुई। आपके दो साह़बज़ादे और तीन साह़बज़ादियाँ हुईं। बड़े साह़बज़ादे सय्यद शाह आले मुह़म्मद और छोटे सय्यद शाह नजातुल्लाह रह़मतुल्लाह अ़लैहिमा हैं। दोनों साह़बज़ादे वालिदे माजिद के विसाल के बाद सज्जादानशीन हुए। बड़े साह़बज़ादे की निस्बत से मौजूदा दौर में ख़ानवादा ''बड़ी सरकार'' से जाना जाता है और छोटे साह़बज़ादे की औलादें छोटे सरकार के नाम से मशहूर हैं।

हुज़ूर साहि़बुल बरकात सय्यद शाह बरकतुल्लाह का विसाल आ़शूरा (दसवीं मुह़र्रम) की रात 1142 हिजरी/1729 ई0 को मारहरा शरीफ़ में हूआ।

नवाब मुह़म्मद बंगश ख़ाँ वाली–ए–फ़र्रूख़ाबाद हुज़ूर साहि़बुल बरकात का अ़क़ीदतमंद और बहुत ख़िदमतगुज़ार थे। नवाब बंगश ख़ाँ ही फ़क़त ऐसे अमीर थे जिनको अ़क़ीदत और इन्किसारी की वजह ह़ज़रत की बारगाह में ख़िदमतगुज़ारी का मौक़ा ह़ासिल था। उनकी गुज़ारिश पर ''मसारिफ़े मेहमानाने दरबारे मारहरा'' के नाम से दो जागीरें तिलकपुर और दादनपुर साहि़बुल बरकात ने कुबूल फ़रमाईं। नवाब बंगश ख़ाँ ने हुज़ूर साहि़बुल बरकात के विसाल के बाद आपका रौज़ा भी तामीर कराया।

हुज़ूर साहि़बुल बरकात अ़लैहिर्रह़मा के बेशुमार ख़ुलफ़ा थे जिनमें से चन्द मशहूर ख़ुलफ़ा का नाम और मुख़तसर तआ़रूफ़ यहाँ ज़िक्र किया जा रहा है।

ह़ज़रत सय्यद शाह आले मुह़म्मद (आपके बड़े साहब़ज़ादे) जिनका तज़किरा आगे आ रहा है।

शाह अ़ब्दुल्लाहः आप मारहरा के रहने वाले थे और इनका तअ़ल्लुक़ ज़ुबैरी ख़ानदान से था। हिन्दी में शायरी करते थे। 1140 हिजरी में इन्तक़ाल हुआ।

शाह मुशताक़ुल बरकातः यह साहि़बुल बरकात के बहुत चहीते ख़लीफ़ा थे। इनका विसाल 11 सफ़र 1167 हिजरी में हुआ।

शाह राजूः यह बिलग्राम के बाशिन्दे थे और सय्यद अबुल फ़रह़ की औलाद में थे। इनका इन्तिक़ाल 1143 में हुआ।

शाह सादिक़ः यह क़सबा भरगैन ज़िला एटा के रहने वाले थे। वहीं पर विसाल फ़रमाया।

बुरहानुल मुवाहिदीन हज़रत सय्यद शाह आले मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह

आप हज़रत सय्यद शाह बरकतुल्लाह साहब के बड़े साहबज़ादे हैं। आप ही की निसबत से आज मौजूदा ख़ानवादा बड़ी सरकार के नाम से जाना जाता है।

आपकी विलादत 18 रमज़ान 1111 हिजरी में बिलग्राम में हुई। तमाम ज़ाहिरी और रूहानी तालीमात अपने वालिदे माजिद से हासिल फ़रमाईं। आपको बैअ़तो ख़िलाफ़त अपने वालिदे माजिद साहिबुल बरकात से थी। आप ख़ानवाद–ए–बरकातिया के उन बुज़ुर्गों में हैं जिन पर इबादत नाज़ करती है। आप जैसी इबादत व रियाज़त, मुजाहदा और सुलूक की राहें पाने वाली मेहनत किसी ने न फ़रमाई। 18 साल मुकम्मल रियाज़त और अ़मलियात में मशग़ूल रहे, तीन साल तक एतिकाफ़ फ़रमाया। इबादत की कस़रत से सर में गड्ढा पड़ गया था। बहुत कम ग़िज़ा नोश फ़रमाते। इबादत की कस़रत से दिक़ का मर्ज़ हुआ, देहली के हकीमों ने कहा कि इस मर्ज़ का इलाज हकीमों के यहाँ नहीं, साहिबुल बरकात के पास है। आपके दरबार में बादशाह और नवाब लोग हाज़िर होने की ख़्वाहिश ज़ाहिर करते लेकिन इजाज़त अ़ता न होती।

आप अपने वालिदे गेरामी के बड़े चहीते फ़रज़न्द थे। आपके साहबज़ादे हज़रत सय्यद शाह हमज़ा ऐ़नी लिखते हैं:

''हज़रत शाह आले मुहम्मद से हुज़ूर साहिबुल बरकात को ख़ुसूसी लगाव और बेपनाह मुहब्बत थी। पूरी ज़िन्दगी आप अपने वालिदे बुज़ुर्गवार के ज़ेरे साया फ़ुयूज़ो बरकात हासिल करते रहे, एक लम्हे के लिये भी उनसे जुदा न होते। अगर हज़रत शाह आले मुहम्मद किसी शरई वजह की बिना पर मस्जिद की नमाज़े बाजमाअत में शरीक न हो पाते तो हुज़ूर साहिबुल बरकात फ़रमाते कि आज मुझे नमाज़ की हलावत न मिल सकी। हज़रत वालिदे माजिद भी दादाजान के बेहद शैदाई थे, आपकी मुहब्बत अपने वालिद से बयान नहीं की जा सकती। आप अपनी तमाम मसरूफ़ियात से हुज़ूर साहिबुल बरकात को बाख़बर रखते।'' आपसे बड़ी बड़ी करामतें ज़ाहिर हुईं। आपके दरबार में हमेशा फ़क़ीरों और दरवेशों का मजमा रहता। आपके दरबार में हाज़िर रहने वाले सब अफ़राद आलिमे ज़ाहिरो बातिन थे। आपने एक बड़ी तादाद में ज़रूरतमंदों को ख़िलाफ़त से नवाज़ा।

आपके वालिदे माजिद ने सालिकों की तरबियत आपके ज़िम्मे कर दी थी, यह काम आप बड़ी ख़ूबी के साथ अन्जाम देते रहे। हज़रत हमज़ा ऐनी रहमतुल्लाह अलैह तहरीर फ़रमाते हैं:

हज़रते वाला की तरबियत का अन्दाज़ यह था कि अगर दूसरे मशाइख़ का हाज़िरबाश कोई ऐसा दरवेश आपकी ख़िदमत में हाज़िर होता जिसने क़ाइदे से राहे सुलूक तय न की और अभी बीच रास्ते ही में ठहरा हुआ है या पहले ही क़दम पर हादसे का शिकार है तो हज़रत उस शख़्स को उन्हीं वज़ाइफ़ और आमाल के ज़रिये मंज़िल पर पहुँचाते जो पहले उसके शेख़ ने उसे बताए थे

वह दरवेश हैरान हो जाता और समझता कि यह मेरे शेख़ की करामत है फिर अपने शेख़ से उसकी अ़क़ीदत और बढ़ जाती।

एक साहब हज़रत शाह आले मुहम्मद के पास हाज़िर हुए और फ़रमाया कि हज़रत मुझे ख़ुदा की याद में सैराबी नहीं होती। मैं यादे इलाही के जुनून में रहना चाहता हूँ लेकिन हो नहीं पाता। हज़रत ने फ़रमायाः इसका जवाब बाद में देंगे। यह कहकर ख़ादिम को हुक्म हुआ कि इनको हुजरे में बाजरे की रोटी और मछली देकर आगे से दरवाज़ा बन्द कर दो। जून की गर्मी थी वह साहब यह ग़िज़ा खाकर पानी के लिये तड़पने लगे लेकिन दरवाज़ा तो बन्द था लिहाज़ा तड़पते ही रहे आख़िरकार शाम में बाहर निकाला गया तब हज़रत ने फ़रमायाः तुमको क्या पूछना है? पूछो! तब वह साहब तड़पकर बोलेः मुझे पानी चाहिये। यह कैसा निज़ाम कि बिना पानी के बन्द कर दिया, मैं प्यास से तड़प गया, हर जगह पानी ही पानी नज़र आता था। हज़रत ने मुस्कुराकर फ़रमायाः अगर इस तड़प से ख़ुदा को याद किया होता तो ख़ुदा की याद में भी सैराबी हो जाती। बस! इन साहब को जवाब मिल गया। यह था सुलूको मारिफ़त की तालीम का आले मुहम्मदी तरीक़ा जिससे इन्सान को मंज़िले मक़सूद मिलती है।

मौलाना तुफ़ैल इतरौलवी बिलग्रामी हाज़िरे ख़िदमत हुए और चन्द बातिनी तवज्जो के लिये तड़पने लगे। लोग उठाकर ख़ानक़ाह में लाए, हाथ पैर की मालिश की, सय्यदुना शाह आले मुहम्मद ज़ुहर की नमाज़ बाजमाअ़त और दूसरे मामूलात से फ़ारिग़ हो चुके तब तशरीफ़ लाए, मौलाना को उठाकर सीना मुबारका से लगाया और

तसल्ली दी। अब मौलाना के तअस्सुरात मुलाहज़ा कीजिये। हज़रत ऐनी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैंः मौलाना ने अर्ज किया: मैं दुनिया छोड़ता हूँ और बाक़ी उम्र इस आसताने के तले रहकर इसी बारगाह की ख़ाक को अपनी बसीरत व बसारत का सुरमा बनाता हूँ। मैं बहुत से औलिया अल्लाह की बारगाह में हाज़िर हुआ लेकिन जो तपिशे इश्क़ यहाँ देखी वह कहीं न मिली......अब मेरी यह पुरशौक़ आरज़ू कुबूल कीजिये, उम्र आख़िर मंज़िल को पहुँची, अब यही बेहतर है कि बाक़ी ज़िन्दगी इस बारगाह में गुज़र जाए। हज़रत वालिदे माजिद ने बहुत दिलदारी की, दिलासा दिया और फरमाया कि अभी आप अपने भाइयों के इस क़ाफ़िले को अपने वतन बिलग्राम पहुँचा दें फिर जब मैं बुलाऊँ तब आप आ जाएँ फिर उन्हें बहुत ज़्यादा तसल्ली दे दिलाकर रूख़सत किया।

आपकी शादी आपके हक़ीक़ी चचा शाह अ़ज़मतुल्लाह की साहबज़ादी से हुई जिनसे हज़रत सय्यद शाह हमज़ा ऐनी और हज़रत सय्यद शाह हक़्क़ानी रहमतुल्लाह अ़लैहिमा और एक साहबज़ादी पैदा हुईं।

आपकी वफ़ात 16 रमज़ान 1164 हिजरी में मारहरा शरीफ़ में हुई। साहिबुल बरकात के रौज़े के सामने एक अलग इमारत में आप आराम फ़रमा हैं।

आपके ख़ुलफ़ा की तादाद शुमार से बाहर है अलबत्ता चन्द मशहूर ख़ुलफ़ा के नाम ये हैं:

हज़रत सय्यद शाह हमज़ा ऐनी, हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद हक़्क़ानी, हज़रत शाह बुज़ुर्ग मारहरवी, हज़रत मुफ़्ती जलालुद्दीन, हज़रत शाह मुहम्मद शाकिर रहमतुल्लाह अ़लैहिम अजमईन।

शहज़ादए साहि़बुल बरकात ह़ज़रत सय्यद शाह नजातुल्लाह ''शाह मियाँ'' रह़मतुल्लाह अ़लैह

आप हुज़ूर साहि़बुल बरकात के छोटे साह़बज़ादे हैं। 25 जुमादल आख़िर 1117 हिजरी को बिलग्राम में पैदा हुए और वहीं पले बढ़े।

तालीमो तरबियत अपने वालिदे माजिद से ह़ासिल, वालिदे माजिद के विसाल के बाद अपने भाईजान की मर्ज़ी से सज्जादानशीन भी हुए और अपनी सरकार अलग बनाई जो ''छोटी सरकार'' के नाम से जानी जाती थी और उसमें मस्जिद व ख़ानक़ाह भी बनाई।

अ़ल्लामा आज़ाद बिलग्रामी लिखते हैं: ''सय्यद बरकतुल्लाह के साह़बज़ादे सय्यद नजातुल्लाह रह़मतुल्लाह अ़लैह अपने अन्दर बहुत से फ़ज़ाइल और कमालात को जमा करने वाले, अच्छी आ़दतों के मालिक, बड़े अख़लाक़ वाले और सख़ावत करने वाले थे। शुरू से आख़िर तक मअ़रिफ़त के फल वालिदे माजिद से लेते रहे, रूह़ानी ज़ौक़ से पूरा ह़िस्सा पाया। सय्यदुल आ़रिफ़ीन की बारगाह में ख़त भेजकर ख़िलाफ़त माँगी, ह़ज़रत ने अपनी अ़ता से ख़िलाफ़तनामा और दस्तारे मुबारक से नवाज़ा। आज कल मारहरा में हिदायत का झण्डा बुलन्द किये हुए हैं। दिलों को ज़िन्दा करने में मसीह़ा हैं। आपके लुत्फ़ो करम से टूटे दिलों को सुकून ह़ासिल हुआ। अच्छी तबीअ़त और उ़म्दा ज़ौक़ रखते हैं, अच्छी शायरी करने में महारत ह़ासिल है। इस दयार की एक दुनिया आपसे मुरीद होकर फ़ाइदा उठा रही है।''

आपका निकाह़ सय्यद लुत्फ़ुल्लाह बिन सय्यद काफ़ी की तीसरी साह़बज़ादी से हुआ जिससे आपके दो साह़बज़ादे सय्यद शाह इमाम उ़र्फ़ शाह गदा और सय्यद शाह मक़बूल आ़लम उ़र्फ़ शाह सोंधा और एक साह़बज़ादी बूबू साहिबा हुईं जो अपने बड़े चचा के साह़बज़ादे शाह ह़क़्क़ानी से मन्सूब थीं मगर निकाह़ की नौबत न आई और उ़म्र को पहुँच कर इन्तिक़ाल किया।

सय्यद इमाम उ़र्फ़ शाह गदा साह़ब आपके बड़े साह़बज़ादे थे। आपकी विलादत 1138 हिजरी में हुई। आपका निकाह़ सय्यद अ़ज़ीमुद्दीन बिन सय्यद नजाबत बिन सय्यद अ़ब्दुल्लाह की बेटी से हुआ और दो साह़बज़ादे सय्यद शाह बरकात बख़्श भिकारी साह़ब और सय्यद शाह नजात बख़्श फ़क़ीर साह़ब पैदा हुए।

सय्यद शाह मक़बूल आ़लम उ़र्फ़ शाह सोंधा आपके दूसरे साह़बज़ादे हैं। विलादत 1140 हिजरी में हुई और विसाल 19 शाबान 1113 हिजरी में हुआ। आपका निकाह़ सय्यद मुह़म्मद यह़या बिन सय्यद मुहि़ब्बुल्लाह की तीसरी साह़बज़ादी से हुआ जिनसे एक साह़बज़ादे सय्यद मख़दमू आ़लम प्यारे साह़ब और एक साह़बज़ादी पैदा हुईं।

सय्यद शाह नजातुल्लाह साह़ब रह़मतुल्लाह अ़लैह का विसाल 29 शाबान 1190 हिजरी में हुआ और अपने बड़े भाई ह़ज़रत सय्यद शाह आले मुह़म्मद के पहलू में दफ़्न हुए।

असादुल आ़रिफ़ीन ह़ज़रत सय्यद शाह ह़मज़ा ''ऐ़नी'' मारहरवी रह़मतुल्लाह अ़लैह

ह़ज़रत असदुल आ़रिफ़ीन सय्यद शाह ह़मज़ा ऐ़नी मारहरवी रह़मतुल्लाह अ़लैह ह़ज़रत शाह आले मुह़म्मद के बड़े साह़बज़ादे थे। आप 14 रबीउ़स्सा़नी 1131 हिजरी की सुबह़ मारहरा शरीफ़ में पैदा हुए। ह़ज़रत शाह ह़मज़ा अ़लैहिर्रह़मा अपने दौर के साहि़बे जलाल और फ़ज़्लो कमाल बुज़ुर्ग हैं। आपका शुमार अपने दौर के बहुत मुम्ताज़ आ़मिलों में होता था। दुआ़ए सैफ़ी जो एक बहुत ही जलाली वज़ीफ़ा है उस वज़ीफ़े के आप माहिरीन में शुमार किये जाते थे। सरकार ह़मज़ा की वह छुरियाँ आज भी ख़ानदाने बरकात के तबर्रूकात में मौजूद हैं जिन पर आप दुआ़ए सैफ़ी तिलावत फ़रमाते थे।

आपका बचपन अपने दादा हुज़ूर साहि़बुल बरकात की तरबियत में बीता। चार बरस की उ़म्र में हुज़ूर साहि़बुल बरकात ने अपनी टोपी मुबारक, सैली (एक तरह की कमर में बाँधने की पेटी) और ''बड़े मियाँ'' का ख़ि़ताब इ़नायत फ़रमाया। आपने तालीम अपने वालिदे माजिद शम्सुल उल्मा सय्यद मुह़म्मद बाक़र और शेख़ लुद्धा बिलग्रामी से हा़सिल की।

बचपन ही से ज़हानत और करामत के आसा़र पेशानी पर रौशन थे। ह़ज़रत साहि़बुल बरकात आपसे खुसूसी मुह़ब्बत फ़रमाते। वालिदे माजिद ह़ज़रत सय्यदना आले मुह़म्मद ने अपनी इ़बादतों के तमाम रंग आपको अ़ता फ़रमा दिए।

सय्यद शाह ह़मज़ा अपने वालिद के नक़्शे क़दम पर पूरे तौर से क़ायम थे। जब सज्जादानशीन हुए तो पूरे तौर से ख़ुद को आले मुह़म्मदी रंग में रंग लिया, सारे मामूलात, आमाल, अशग़ाल, मुरीदीन और ख़ुलफ़ा की तरबियत सब कुछ आले मुह़म्मदी सीरत का नमूना था।

आप तहज्जुद के बड़े पाबन्द थे इसलिये एक तिहाई रात बाक़ी रहते ही जाग जाते और तहज्जुद की नमाज़ अदा फ़रमाते फिर ज़िक्रे ख़ुदावन्दी में लग जाते। नमाज़े फ़ज्र की सुन्नतें अव्वल वक़्त में पढ़कर ख़ानदानी वज़ीफ़ों की तिलावत फ़रमाते फिर नमाज़े फ़ज्र के बाद बाग़ की सैर को तशरीफ़ ले जाते, उसके बाद पढ़ना पढ़ाना, तालिबाने ह़क़ की बातिनी तरबियत, ज़ुहर के बाद क़ुरआने ह़कीम की तिलावत और दुनियादारों की ज़रूरतें पूरी करने के सिलसिले रहते। इ़शा की नमाज़ से फ़राग़त के बाद वज़ाइफ़ व विर्द दरगाहे मुअ़ल्ला में अदा फ़रमाते फिर सुन्नत के मुताबिक़ जल्द ही सो जाते।

आपने बड़े मुश्किल मुजाहदे अन्जाम दिये जिसकी वजह से सेह़त मुतास़्स़िर होने लगी और आप मर्ज़ों में गिरफ़्तार रहने लगे। यहाँ तक कि आप पर फ़ालिज के आस़ार नुमूदार होने लगे।

आप अख़लाक़े नुबुव्वत के पैकर थे, सरापा अदबो एह़तेराम, तवाज़ो और अख़लाक़ वाले, हमदर्द व ग़मगुसार, दुनियादारी से दूर, इ़रफ़ाने ह़क़ की मंज़िल से क़रीब, शरीअ़त के पासदार, तरीक़त के राज़दार, सरापा जमाल, वफ़ा का नमूना, मख़लूक़े ख़ुदा के ह़ाजतरवा, सदाक़त, अ़दालत, शुजाअ़त और सख़ावत के मज़हर। ग़रज़ यह कि

अल्लाह के महबूब बन्दे और इताअ़त गुज़ार वली–ए–कामिल और कुतुबुल अक़ताब।

आप मख़लूक़े ख़ुदा की ख़िदमत करने में बहुत आगे आगे रहते। दुनिया का तलबगार हो या ख़ुदा का, जो ख़ुदा का तलबगार बनकर आया उसे मंज़िल तक पहुँचाया गया, दुनिया का तलबगार बनकर आया उसे दुनिया की सहूलतें बख़्शी गईं। काशिफुल असतार के तिब्बी नुस्ख़ों और अ़मलियात के बयान में आप जगह जगह इस बात की तसदीक़ करने वाले मंज़र देखेंगे। तिब्बी नुस्ख़े ख़ानक़ाहे आ़लिया में तैयार रहते, ज़रूरतमंद हाज़िर होते और करामत आसा़र दवाएँ लेकर रूख़सत होते। सख़ावत, अ़ता और आ़म ज़ियाफ़त की सुन्नत तो आपके ख़ानदाने आ़लीशान में सैकड़ों साल से जारी है जिसको हज़रत हमज़ा की ज़ात ने दो चन्द फ़रमाया। हज़रत साहिबुल बरकात के उ़र्स मुबारक में सौ सौ क़िस्म के खाने तैयार होते और हाज़िरीन की ख़िदमत में पेश किये जाते। हज़रत ऐनी तहरीर फ़रमाते हैंः ''एक साल एक लाख चौंतीस हज़ार आम और बेर शाम को रोज़ा इफ़तार करने के बाद उ़र्स में तक़सीम हुए, इरशादे बारी 'अपने रब की नेमत का चर्चा किया करो' के मुताबिक़ यह खाने की क़िस्में बयान हुईं। यह फ़क़ीर इरशादे बारी तआ़ला 'पाकीज़ा और उ़म्दा चीज़ें खाओ' के ज़ाहिरी मफ़हूम पर अ़मल करते हुए उ़म्दा चीज़ों का तालिब रहता है और जो भी इस बाबे इलाही पर हाज़िर होता है रोटी के टुकड़े से महरूम नहीं लौटता। उम्मीदे ग़ालिब है कि इलाही नेमतों से कोई ख़ाली न गया होगा। घर में जो कुछ होता है वह सब के लिये होता है,

फ़क़ीर का घर तो अल्लाह का घर है (जो हर एक के लिये खुला रहता है)''

हुज़ूर सय्यद शाह ह़मज़ा मारहरा मुतह्हरा के उन सात कुतुबों में एक थे जिनकी बशारत साहिबुल बरकात को हुई लेकिन ख़ुद को हमेशा ख़ुदा की राह में चलने वाला ही समझा जो ख़ास बन्दों का हि़स्सा हुआ करता है।

ह़ज़रत सय्यद शाह ह़मज़ा अपने इ़ल्मो फ़ज़्ल में एक रौशन हैसि़यत रखते थे। तफ़सीर, ह़दीस़, फ़िक़्ह, तसव्वुफ़, जफ़र, तकसीर, तिब्ब व अदब सभी कुछ आपकी फ़िक्र में रौशन थे। इसके साथ ही इ़ल्मे सीना तो आपका हि़स्सा था ही। अगर किसी को सय्यद ह़मज़ा के इ़ल्मी जौहर का मुज़ाहरा देखना हो तो इन तमाम उ़लूम का निचोड़ इनकी मारिकतुल आरा तसनीफ़ ''काशिफुल असतार'' का मुतालआ़ करे। ह़ज़रत ह़मज़ा को आ़म उ़लूम के अ़लावा उन नादिर उ़लूम में भी कमाल ह़ासिल था जो उ़लूमे इस्लामिया के जानने वालों को अजनबी अजनबी से लगते हैं। ह़ज़रत को जफ़र, तकसीर, फ़लकिय्यात और अर्ज़िय्यात और खुसूसन इकसीरसाज़ी के इ़ल्म में भी महारत ह़ासिल थी। ह़ज़रत ने इ़ल्मे तिब्ब 12वीं सदी हिजरी के मुम्ताज़ ह़ाज़िक़ ह़कीम अ़ताउल्लाह अ़लैहिर्रह़मा से ह़ासिल किया जिनको ह़ज़रत ऐ़नी के बक़ौलः ''दस्ते मसीह़ाई बिफ़ज़्लिही तआ़ला ह़ासिल था'' और यही वजह थी कि दरबारे ऐ़नी से जिस्मानी व रूह़ानी दो फ़ाइदे मख़लूक़े ख़ुदा को पहुँचे।

ह़ज़रत ऐ़नी की अदबी सलाहि़यतें कैसी रौशन थीं इसकी दलील उनके कलाम से ज़ाहिर है। ह़ज़रत ह़मज़ा ने फ़ारसी ज़ुबान में जो शायरी फ़रमाई उसकी सलालत और

रवानी देखने के क़ाबिल है। क़सीदा ग़ौसिया उनका एक अ़ज़ीम शाहकार है जिसकी पूरी इ़बारत सरकारे क़ादरियत के अ़क़ीदतमंदों के लिये वज़ीफ़ा की हैसियत रखता है।

ग़ौसे आज़म ब—मने बे—सरो सामाँ मददे
क़िब्ल—ए—दीं मददे, काब—ए—ईमाँ मददे

आपका निकाह़ सय्यद मुह़म्मद बिलग्रामी की साह़बज़ादी दयानत फ़ातिमा से हुआ जिनसे आपके तीन साह़बज़ादे शम्से मारहरा सय्यद शाह आले अह़मद अच्छे मियाँ, सय्यद शाह आले बरकात सुथरे मियाँ, सय्यद शाह आले हुसैन सच्चे मियाँ और एक साह़बज़ादी सय्यदा वाफ़िया बेगम हुईं।

14 मुह़र्रमुल ह़राम 1198 ई0 को ह़ज़रत सय्यद शाह ह़मज़ा ऐनी अ़लैहिर्रह़मा का विसाल हुआ। दरगाहे बरकातिया मारहरा के अन्दर पत्थर की एक ख़ुशनुमा सहदरी में आपका मज़ारे मुबारक है।

ह़ज़रत सय्यद शाह ह़मज़ा ऐनी अ़लैहिर्रह़मा के ख़ुलफ़ा में आपके साह़बज़ादगान और छोटे भाई के अ़लावा इन ह़ज़रात के नाम ख़ास तौर से क़ाबिले ज़िक्र हैं:

ह़ज़रत शाह नसीरूद्दीन लंग, ह़ज़रत शाह ह़िफ़्ज़ुल्लाह, ह़ज़रत शाह रमज़ानुल्लाह, ह़ज़रत शाह रह़ीमुल्लाह, ह़ज़रत शाह दीदार अ़ली, ह़ज़रत शाह सैफुल्लाह रह़मतुल्लाह अ़लैहिम अजमईन।

आ़लिमे रब्बानी बरकाते स़ानी ह़ज़रत सय्यद शाह मुह़म्म्द ह़क़्क़ानी रह़मतुल्लाह अ़लैह

ह़ज़रत सय्यद शाह मुह़म्मद ह़क़्क़ानी मियाँ, सरकारे कलाँ ह़ज़रत सय्यद शाह आले मुह़म्मद के छोटे साह़बज़ादे थे। ख़ानक़ाही बरकतों से मालामाल घराने में 1145 हिजरी की किसी मुबारक सुबह़ को मारहरा शरीफ़ में पैदा हुए। वालिदे माजिद, वालिदा माजिदा ग़नीमत फ़ातिमा और बिरादरे मुअ़ज़्ज़म सय्यद ह़मज़ा जैसे मीनार–ए–हिदायत आपकी तरबियत, इ़ल्म की फ़राहमी और शख़्सियत साज़ी के लिये आप के पास नेमते ख़ुदावंदी के तौर पर मौजूद थे। इनकी रहनुमाई और शफ़क़तों में आपने ख़ुद को सजाया, सँवारा। कुरआन, ह़दीस़, तफ़सीर, उसूले फ़िक़्ह के साथ तमाम राइज फ़नों की तालीम अपने बुज़ुर्गों से ह़ासिल फ़रमाई लेकिन रूह़ानी तरबियतें ख़ुसूसी तौर से अपने वालिदे माजिद से ह़ासिल की। आपको किताबें पढ़ने का बहुत शौक़ था जिसके लिये घर का कुतुबख़ाना ही काफ़ी था जिसमें मुख़्तलिफ़ इ़ल्मो फ़न की हज़ारों किताबें मौजूद थीं। बचपन ही में वालिद का विसाल हो गया तो सारी निगरानी आपके बड़े भाई सय्यद शाह ह़मज़ा ही ने फ़रमाई। आप अपने भाई का लिह़ाज़ एक उस्ताद, निगराँ और मुर्शिद की मानिन्द फ़रमाते थे।

ह़ज़रत ह़क़्क़ानी मियाँ साह़ब अपने चचा की साह़बज़ादी से मन्सूब थे उनसे निकाह़ न हो सका तो आपने सारी ज़िन्दगी शादी न करने का फ़ैसला फ़रमाया। ह़ज़रत शाह ह़क़्क़ानी ख़ानक़ाही निज़ाम से जुड़े हुए थे

इसलिये अ़मलियात और वज़ीफ़ों के साथ ख़ानक़ाही इन्तज़ाम और निगरानी में भी ख़ुद को मसरूफ़ रखते। यादे इलाही से जो वक़्त मिल जाता उसमें अ़ज़ीज़ों की ख़बरगीरी, ख़ानदानी मामलात की देख रेख, किताबों का पढ़ना, आमद ख़र्च का हिसाब वग़ैरा पूरे तौर से मुलाहज़ा फ़रमाते।

हज़रत हक़्क़ानी के अख़लाक़ो किरदार का बयान करते हुए हज़रत असदुल आ़रिफ़ीन सय्यद शाह हमज़ा ऐनी फ़रमाते हैं: ''मेरा हक़ीक़ी भाई शाह हक़्क़ानी फ़क़ीर से चौदह साल छोटा है। हज़रत वालिदे माजिद के विसाल के वक़्त उसकी उ़म्र 20 साल थी। करीमुल अख़लाक़ है और हर शख़्स की ख़िदमत का जज़्बा रखता है। हज़रत वालिदे माजिद से उसे जिन आमाल व अशग़ाल की इजाज़त है उन पर पाबन्दी से अ़मल करता है और मख़लूक़े ख़ुदा के साथ सख़ावत का मामला करता है। इस फ़क़ीर से बहुत नियाज़मन्दाना पेश आता है।''

अल्लाह तआ़ला ने आपको ख़ुलूस का पैकर बनाया था। आप ख़ुदा के उन बन्दों में से थे जिनकी हर साँस अल्लाह की रज़ा और आख़रत की फ़िक्र के लिये थी।

ख़ानक़ाहे आ़लिया बरकातिया के तमाम इन्तज़ामी मामलात आपके सुपुर्द रहते ख़ास तौर से तामीरात का काम तो आप ही के साथ ख़ास था। आप इन कामों को निहायत ज़िम्मेदारी से निभाते, मामलात का फ़ैसला करते। सिला रहमी और एक दूसरे के हक़ का लिहाज़ रखने में अपनी मिस़ाल आप थे। अ़ज़ीज़ो अक़ारिब भी आपकी इस ज़िम्मेदाराना दयानत की वजह से आप पर एतमाद किया करते थे।

शाह हक़्क़ानी अ़लैहिर्रहमा को इमारत बनाने और बाग़ लगाने का बहुत शौक़ था। बड़े बाग़ को पक्का इहाता

के साथ तामीर कराया, इस बाग़ में तरह तरह के फल और मेवे पैदा होते थे।

हज़रत शाह हक़्क़ानी के बारे में हज़रत शर्फ़े मिल्लत सय्यद मुहम्मद अशरफ़ मियाँ साहब क़िब्ला ने हक़्क़ानियत पर मबनी एक जुमला इरशाद फ़रमायाः

''हज़रत हक़्क़ानी ख़ानदाने बरकात के शाहजहाँ थे।'' ख़ानक़ाहे बरकातिया की अक्स़र क़दीम इमारतें हज़रत हक़्क़ानी की तामीर कराई हुई हैं। दीवानख़ाना हवेली सज्जादगी, मुख़तलिफ़ मकानात और बस्ती पीरज़ादगान ख़ुसूसी तौर पर तामीर कराए।

हज़रत शाह हक़्क़ानी इल्मो फ़न के शनावर थे और क़लमी फ़ज़्लो कमाल के मालिक। आपने दो अहम क़लमी यादगारें छोड़ीं: ''इनायत रसूल की'', ''नात रसूल की''

इनायत रसूल कीः 900 सफ़हात पर कुरआन हकीम की तफ़सीर आपने साठ साल की उम्र में सिर्फ़ चार महीने में तसनीफ़ फ़रमाई। इसकी जदीद इशाअ़त हज़रत अमीने मिल्ल्त के दस्ते मुबारक से है।

नात रसूल कीः हदीस़ों के इन्तख़ाब ''किताबुल अख़यार'' का तर्जुमा है। इसमें 400 हदीस़ें जमा हैं।

शाह हक़्क़ानी का विसाल 17 ज़िलहिज्जा 1201 हिजरी में जुमा के दिन हुआ। हज़रत शाह हक़्क़ानी ख़ानदाने बरकात के वह बुज़ुर्ग हैं जिन्होंने न किसी को मुरीद किया, न ही ख़िलाफ़त से नवाज़ा।

शम्से मिल्लतो वद्दीन, शम्से मारहरा सय्यदना शाह अबुल फ़ज़्ल आले अहमद हुज़ूर अच्छे साहब रहमतुल्लाह अ़लैह

क़िब्ल–ए–जिस्मो जाँ सय्यदी, सनदी, आक़ाई व मौलाई शम्से मारहरा हुज़ूर आले अहमद अच्छे मियाँ साहब मरहरा शरीफ़ में 28 रमज़ान 1160 हिजरी में पैदा हुए। आप हज़रत सय्यद हमज़ा के बड़े साहबज़ादे हैं। तारीख़ी नाम ''सुल्ताने मशाइख़े जहाँ'' है, आपको शम्से मारहरा के लक़ब से याद किया जाता है। आप नाइबे ग़ौस़, मज़हरे ग़ौस़े आज़म, कुतुबिय्यत को आला दर्जे पर फ़ाइज़ बुज़ुर्ग हैं। ख़ानवाद–ए–बरकात में हुज़ूर शम्से मारहरा का मक़ाम व मर्तबा बहुत बुलन्द है।

आपकी पैदाइश से पहले हुज़ूर साहिबुल बरकात ने बशारत फ़रमाई कि हमारे ख़ानदान में एक साहबज़दे होंगे जिनकी रौनक़ से ख़ानदान में चार चाँद लगेंगे और अपना एक ख़रक़ा आपकी दादी को सुपुर्द फ़रमाया। शम्से मारहरा के दादाजान हज़रत शाह आले मुहम्मद ने उनकी बिस्मिल्लाह के मौक़े पर वह ख़रक़ा मँगाकर फ़रमाया कि यह ख़िरक़ा इन साहबज़ादे के लिये है जिनकी बशारत हज़रत वालिदे माजिद ने दी थी।

हुज़ूर शम्से मारहरा के लिये की गई बशारत अ़मल में आई, ख़ानदाने बरकात का नाम आपके फ़ैज़ान से पूरी दुनिया में रौशन हुआ। आपका फ़ैज़ान अ़रबो अजम में आ़म हुआ, ग़ौसे़ आज़म के दरिया–ए–क़रदीरियत से आपने

अपने गुलामों को सैराब किया। आपको अपनी ज़ाहिरी व बातिनी तालीम के सारे जौहर अपने वालिदे माजिद सय्यद शाह ह़मज़ा ऐ़नी मारहरवी से ह़ासिल हुए। फ़न्ने तिब्ब ह़कीम नसरूल्लाह मारहरवी से ह़ासिल किया। आपकी रूह़ानी तरबियत सरकार ग़ौसे़ आज़म ने फ़रमाई, वालिदे माजिद से बैअ़तो ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ हुए, वालिदे माजिद के विसाल के बाद सज्जादए बरकातिया पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए और 37 साल तक सज्जादए बरकातिया को रौनक़ बख़्शी। एक अ़ालम ने उस दौर में आपकी ज़ाते मुबारक से फ़ैज़ान ह़ासिल किया। न जाने कितने गुमराह और अंधेरों में भटक रहे लोग आपकी एक निगाहे करम से सीधा रास्ता पा गए।

हुज़ूर शम्से मारहरा ग़ौसे़ आज़म की नाएबे मुतलक़ थे, आपकी ज़िन्दगी के मामूलात ऐसे ही थे जैसे ग़ौसे़ आज़म के नाएब के होने चाहिये। दिन मख़्लूक़े ख़ुदा की ख़िदमत और ख़ैरख़्वाही में गुज़रता, रात अपने रब की बारगाह में सजद–ए–शुक्र में। हुज़ूर शम्से मारहरा उस दौर में जलवा अफ़रोज़ थे जबकि मैदाने इ़ल्मो अ़मल में तसव्वुफ़ और मअ़रिफ़त की बड़ी बड़ी हस्तियाँ तशरीफ़ रखती थीं। शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस़ देह्लवी, रफ़ीउ़द्दीन मुह़द्दिस़ देहलवी, क़ाज़ी स़नाउल्लाह पानीपती, बह़रूल उ़लूम मुल्ला मुह़म्मद अ़ली उ़स्मानी वग़ैरा और इनके दरमियान हमारे आक़ा–ए–नेमत हुज़ूर शम्से मारहरा एक अलग पहचान रखते थे। सबकी नज़र अगर कहीं जाकर टिकती थी तो मारहरा के शम्से मिल्लत वद्दीन पर।

हुज़ूर ग़ौस़ पाक की बारगाह में आपकी मक़बूलियत की शान ही निराली थी। अपने मुरीदों के नाम वसीयतनामे में जिस गहरी निसबत व अ़क़ीदत के साथ ग़ौसे़ आज़म की ज़ात में फ़ना होने के जज़्बे को ज़ाहिर फ़रमाया, वह इस तरह हैः

''ये ख़ानदाने बरकातिया ह़मज़विया सात पुश्तों से हुज़ूर ग़ौसे़ आज़म का नमक ख़्वार है लिहाज़ा ग़ौसे़ आज़म की गुलामी हरगिज़ न छोड़ो कि दुनिया व आख़रत की सलामती इसी में है।''

इसी अ़क़ीदत का नतीजा था कि ग़ौसे़ आज़म ने अपने करम से उन्हें अपना नाएब बनाया। सरकारे ग़ौसे़ आज़म की ऐसी इ़नायत हुज़ूर शम्से मारहरा पर थी कि बहुत से लोगों को ख़्वाब में बशारत होती कि अच्छे मियाँ से मुरीद हो जाओ। यही नहीं बग़दादे मुअ़ल्ला से ख़ुद अपने शहज़ादे को बातिनी कमाल ह़ासिल करने के लिये हुज़ूर शम्से मारहरा की ख़िदमत में भेज दिया। यह बात सरकारे ग़ौस़ की बारगाह में हुज़ूर शम्से मारहरा के मक़ाम व मर्तबे को समझने के लिये काफ़ी है।

ख़ानदाने उ़स्मानी बदायूँ शरीफ़ के चश्मो चिराग़ ह़ज़रत मौलाना शाह ऐ़नुल ह़क़ अ़ब्दुल मजीद क़ादरी बदायूनी रह़मतुल्लाह अ़लैह भी सरकारे ग़ौसे़ आज़म के इशारे पर हुज़ूर शम्से मारहरा की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और मुरीद होकर ख़िलाफ़त ह़ासिल की।

उनकी बैअ़त का वाक़या यह हुआ कि शाह ऐ़नुल ह़क़ रह़मतुल्लाह अ़लैह हुज़ूर अच्छे साह़ब की बारगाह में ह़ाज़िर हुए लेकिन बग़ैर बैअ़त (मुरीद) हुए यह कहते हुए वापस हुए कि ''यहाँ भी ऊँची दुकान और फीका पकवान

है'' बदायूँ शरीफ़ पहुँचकर हज़रत सुल्तानुल आ़रिफ़ीन बड़े सरकार रह़मतुल्लाह अ़लैह के आस्ताने पर आराम फ़रमाने के लिये ठहरे, ख़्वाब में देखा कि सरकारे बग़दाद का दरबार सजा है और ग़ौसि़यत मआब ने इशारा फ़रमाया कि ''ऐ़नुल हक़ का हाथ अच्छे मियाँ के हाथ में दे दिया जाए।'' हुज़ूर शाह ऐ़नुल ह़क़ फ़ौरन ही मारहरा की तरफ़ रवाना हुए और हुज़ूर शम्से मारहरा के क़दमों में बे–साख़्ता गिर पड़े। हुज़ूर शम्से मारहरा ने मुस्कुराते हुए फ़रमायाः मियाँ! यहाँ तो ऊँची दुकान और फीका पकवान है। लेकिन इशारा हो चुका था लिहाज़ा बैअ़तो ख़िलाफ़त के साथ साथ अपना साथ अ़ता फ़रमाया कि उसके बाद हुज़ूर शाह ऐ़नुल ह़क़ साह़ब ने अपने मुर्शिद का दर न छोड़ा जिसका इनाम यह हुआ कि हुज़ूर शम्से मारहरा ने फ़रमायाः क़यामत के दिन ख़ुदा जब पूछेगा कि मेरे लिये क्या लाए हो? तो मैं मौलवी अ़ब्दुल मजीद को पेश कर दूँगा। अफ़ज़लुल अ़बीद और अह़ब्बुल ख़ुलफ़ा जैसे लक़ब अ़ता फ़रमाए।

शम्से मारहरा की इ़ल्मी शान का यह आ़लम था कि उस दौर के बड़े मशाइख़ और आ़लिमे दीन शरीअ़त और तरीक़त के मसले पूछने के लिये शम्से मारहरा की बारगाह में ह़ाज़िर होते। आसा़रे अह़मदी में दर्ज है कि एक साह़ब ने बग़दाद शरीफ़ में सज्जादए ग़ौसे़ आज़म से अ़र्ज़ किया कि मुझे वह़दतुल वुजूद के मसले में कुछ इरशाद फ़रमाएँ। आपने इरशाद फ़रमाया कि हिन्दुस्तान में हमारे घर की दौलत तक़सीम हो रही है, वहाँ चले जाओ। यह साह़ब सबसे पहले ह़ज़रत शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस़ देह्लवी की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अपना मसला बयान किया

लेकिन तसल्ली न हुई तो शाह साह़ब ने फ़रमाया कि तुम्हारा मसला किसी साहि़बे ह़ाल से ह़ल होगा, मारहरा चले जाओ वहाँ हमारे भाई अच्छे मियाँ तुम्हें तसल्ली दिला देंगे। ह़ज़रत अच्छे मियाँ के इ़ल्मे ज़ाहिर व बातिन का अन्दाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ जैसे शरीअ़त और तरीक़त दोनों का इ़ल्म रखने वाले किसी मसले के ह़ल के लिये हुज़ूर शम्से मारहरा की बारगाह में सवाल पूछने वाले को भेज रहे हैं। यही नहीं ख़ुद हुज़ूर शम्से मारहरा के पीरख़ाने काल्पी शरीफ़ के साह़बज़ादे सय्यद शाह ख़ैरात अ़ली क़ादरी भी आपसे मुरीद हुए और इजाज़त ह़ासिल की।

आप अपने दौर के बड़े माहिर ह़कीम भी थे। बातों बातों में किसी मामूली दवा और दरख़्त के पत्तों से मरीज़ का इ़लाज़ फ़रमा दिया करते थे। मौलवी मुजाहिदउद्दीन ज़ाकिर बदायूनी अपने वालिदे माजिद का वाक़या लिखते हुए फरमाते हैं कि मेरे वालिदे माजिद की आँखों में सख़्त दर्द शुरू हुआ और ऐसा दर्द हुआ कि वह तकलीफ़ से चीख़ने लगे। तो उस वक़्त मौलवी अ़ब्दुल मजीद को मेरा ह़ाल मालूम हुआ तो उन्होंने वालिदे माजिद की तकलीफ़ को शम्से मारहरा से बयान किया। ह़ज़रत ने फ़रमाया कि हमारी सुराह़ी से पानी ले जाओ और धो दो, अल्लाह शिफ़ा देगा। मौलवी साह़ब ने हुक्म की तामील की और अपने हाथ से उनकी आँखें धो दीं, दर्द फ़ौरन काफ़ूर हुआ। सुबह़ जब ह़ज़रत की बारगाह में ह़ाज़िर हुए तो ह़ज़रत से फ़रमायाः हुज़ूर आपके दिये हुए पानी से मुझे बहुत आराम हुआ।

हुज़ूर शम्से मारहरा ने बड़ी मुहब्बत से इरशाद फ़रमायाः भाई! पानी में कुछ बरकत नहीं थी यह मौलवी अ़ब्दुल मजीद के हाथ की बरकत है, इनके हाथों में बहुत तास़ीर है।

मदीनतुल औलिया बदायूँ शरीफ़ के बारे में ह़ज़रत का इरशाद हुआ ''बदायूँ हमारी जागीर है जो ह़ज़रत ग़ौस़ियत मआब ने अ़ता फ़रमाई है।''

सबसे ज़्यादा ख़ादिम और गुलाम भी हमारे हमारे आक़ा अच्छे मियाँ के बदायूँ में ही थे। बदायूँ शरीफ़ पर ऐसी निगाहे करम क़िब्ल–ए–जिस्मो जाँ की पड़ी है कि आज तक अह्ले बदायूँ आले अह़मदी ख़ुमार में डूबे हुए हैं।

राक़िम के ख़ानदान के एक बुज़ुर्ग ह़ज़रत शम्से मारहरा के ख़ास गुलामों में थे, हुज़ूर शम्से मारहरा के विसाल के बाद उनको गुर्दे का दर्द उठा, वह हुज़ूर शम्से मारहरा के मज़ारे अक़दस पर ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ पेश की कि क्या विसाल के बाद आपकी बारगाह से हमारी ज़रूरत पूरी न होगी? मज़ार शरीफ़ से पुड़िया अ़ता की गई जिसको उन्होंने आधा खा लिया और आधी अगली बार के लिये रख ली, दर्द जाता रहा। रात में बशारत हुई कि यह आधी पुड़िया तुमने हमसे मिलने के लिये रख ली है। अगली बार जब फिर दर्द हुआ तो क़ाज़ी साह़ब ने उस पुड़िया को खाया और इन्तिक़ाल फ़रमा गए।

हुज़ूर शम्से मारहरा राहे सुलूक, आमालो अशग़ाल, मुरीदों और फ़क़ीरों की तरबियत, मख़लूक़े ख़ुदा की ज़रूरतें पूरी करने और उनकी इस्लाह़ में ऐसे लगे हुए थे कि तसनीफ़ो तालीफ़ की तरफ़ तवज्जो नहीं फ़रमाई। ''आदाबुस्सालिकीन'', ''बयाज़े अ़मल व मामूल'' आपकी दो

किताबें हैं। आदाबुस्सालिकीन हुज़ूर शम्से मारहरा की बड़ी फ़ाइदा पहुँचाने वाली किताब है जिसमें राहे सुलूक और ज़िक्रो अशग़ाल पर सरकार अच्छे मियाँ ने मुख़्तसर मगर सुलूक हासिल करने वालों के लिये फ़ाइदेमंद गुफ़्तगू फ़रमाई है।

''बयाज़े अ़मल व मामूल'' में वह वज़ाइफ़ व अ़मलियात हैं जो ख़ानदाने बरकात का मामूल है उसको हुज़ूर शम्से मारहरा ने जमा फ़रमाया है। हुज़ूर शम्से मारहरा का सबसे बड़ा कारनामा ''आईन–ए–अह़मदी'' है जो शायद फ़तावा आ़लमगीरी के बाद सबसे बड़ा मज़हबी इन्साईक्लोपीडिया है जिसको आले अह़मद इन्साईक्लोपीडिया भी कह सकते हैं। ''आईन–ए–अह़मदी'' सिर्फ़ एक किताब नहीं बल्कि एक मुकम्मल कुतुबख़ाने की हैसियत रखती है। उस दौर के तारीख़ लिखने वाले उल्मा ने ''आईन–ए–अह़मदी'' को 33 जिल्दों में बताया है।

हुज़ूर शम्से मारहरा ने 37 साल तक मसनदे बरकातिया को रौनक़ बख़्शी और इन 37 बरसों में हज़ारों लाखों लोगों ने अपनी ज़ाहिरी व बातिनी प्यास बुझाई और आज भी ख़ुदा के हज़ारों बन्दे आपके ज़रिये से फ़ैज़ाने ग़ौसे़ आज़म से हिस्सा पा रहे हैं।

कश्फ़ो करामत और बुलन्द निगाही का वह आ़लम था कि एक शख़्स किसी गाँव का हुज़ूर शम्से मारहरा की बारगाह में हाज़िर हुआ, बड़ा मजमा था, दिल में यह ख़्याल करने लगा कि हुज़ूर की ख़िदमत में तो सैकड़ों लोग मुरीद होने के लिये हाज़िर होते हैं तो ह़ज़रत को भला क्या याद रहेगा कि यह हमारा मुरीद है? बस! ह़ज़रत शम्से मारहरा ने उसको ख़ुसूसियत से बुलाया, ख़ैरियत पूछी, गाँव का

ह़ाल जाना और इरशाद फ़रमायाः तुमने अपने मवेशी के साथ गाँव वालों के चौपाये जो जंगल में ले जाते हो उनमें अपना पराया कैसे पहचान लेते हो? उसने अ़र्ज़ किया कि हम गले में डोरा डाल देते हैं। बस! तभी फ़रमायाः इसी तरह फ़क़ीर भी अपने गल्ले को ख़ूब ख़ूब पहचानता है उनके गले में एक मुह़ब्बत का डोरा बँधा होता है। आपके ख़ुलफ़ा में अपने वक़्त के जय्यद उ़लमा, फ़ुज़ला, फ़ुक़रा व सूफ़िया और ख़ुद उनके पीरख़ाने के बुलन्द मर्तबा ह़ज़रात शामिल हैं।

हुज़ूर शम्से मारहरा लोगों को वज़ीफ़े और आमाल कम बताते अल्लाह के फ़ज़्ल से सिर्फ़ ज़ुबाने अक़दस से फ़रमा देते तो ज़रूरतमंदों की ज़रूरत पूरी हो जाती।

सरकार शम्से मारहरा को जनाब ग़ौसि़यत मआब से ऐसी अ़क़ीदत और मुह़ब्बत थी कि आप अपने सगे भतीजे ह़ज़रत शाह गुलाम मुह़िय्युद्दीन अमीर आ़लम से हुज़ूर ग़ौसे़ पाक के नाम की निस्बत निहायत मुह़ब्बत फ़रमाते। जब ह़ज़रत दस्तरख़्वान पर होते तो सबसे पहले ह़ज़रत शाह गुलाम मुह़िय्युद्दीन साह़ब को खिलाते और बाद में ख़ुद खाते।

हजरत शाह गुलाम मुह़िय्युद्दीन अमीर आ़लम साह़ब अपने मलफ़ूज़ात में फ़रमाते हैंः एक मर्तबा ह़ज़रत अच्छे मियाँ साह़ब सज्जादा नशीनी के मकान में तन्हा तशरीफ़ फ़रमा थे, अन्दर जाने की किसी को इजाज़त न थी। मैं छोटा सा था, खेलता हुआ दरवाज़े तक गया, अन्दर जाना चाहा तो ख़ादिम ने भी रोका पर मैं कहाँ मानने वाला, किवाड़ खोलकर जल्दी से अन्दर घुस गया। मैंने देखा अन्दर ह़ज़रत अच्छे मियाँ दो बुज़ुर्गों से बैठे कुछ

बातें कर रहे हैं। मैं आहिस्ता आहिस्ता जाकर पीछे से कंधे पर चढ़ गया। हज़रत ने पीछे मुड़कर देखा और नाराज़गी से कहाः क्यों आया? मैंने कहाः मैं तुम्हारे कंधे पर चढूँगा। यह सुनकर हज़रत हँसे और वह दोनों बुज़ुर्ग भी हँसे। फिर उन दोनों ने मेरे सर पर ख़ूब हाथ फेरा और चले गए। तब मैंने हज़रत से पूछाः यह कौन थे? हज़रत ने फ़रमाया कि उन दोनों में एक हज़रत ग़ौसुल आज़म और दूसरे सय्यद शाह जलाल थे, यह हजरात फ़क़ीर को नवाज़ने को तशरीफ़ लिये आए थे और अब चले गए।

हुज़ूर शम्से मारहरा के तसर्रूफ़ और विलायत का आ़लम ही निराला था और क्यों न होता जब यह दौलत सीधे ग़ौसि़यत मआब अ़ता फ़रमा रहे हों।

एक साहब सिलसिले में दाख़िल होने की ग़रज़ से हज़रत अच्छे मियाँ रहमतुल्लाह अ़लैह की ख़िदमत में हाज़िर हुए इसी के साथ यह भी कह दिया कि हुज़ूर मुझ में एक सख़्त ऐब है कि मैं शराब पीता हूँ और यह मुझसे छूट नहीं सकती है। हज़रत ने कहाः कोई हर्ज नहीं, आओ मुरीद करें लेकिन हमारे सामने कभी न पीना। उन्होंने बहुत ख़ुशी से यह वादा किया और हज़रत ने उनको सिलसिलए क़ादरिया में दाख़िल फ़रमा लिया। वापसी में उन्होंने अपनी क़यामगाह पहुँच कर आ़दत के मुताबिक़ बोतल गिलास निकालकर शराब पीने का इरादा किया तो देखा कि हज़रत शम्से मारहरा सामने हैं और फ़रमा रहे हैंः अपना वादा याद करो, मैं सामने खड़ा हूँ। वह साहब तो परेशान, जहाँ जाओ वहाँ अच्छे मियाँ साहब तशरीफ़ ले आते हैं लिहाज़ा उन्हें यह सूझी कि वह पाख़ाने में चले गए कि मियाँ यहाँ नहीं आ सकते। जैसे ही पाख़ाने में बोतल

खोली तो देखा अच्छे मियाँ सामने खड़े हैं। फ़रमायाः देखो! हम यहाँ भी आ गए। यह देखना था कि बोतल ज़मीन पर दे मारी कि मियाँ पीछा नहीं छोड़ेंगे लिहाज़ा तौबा करता हूँ।

आपका निकाह़ सय्यद शाह गुलाम अ़ली बिलग्रामी की साह़बज़ादी से हुआ। एक साह़बज़ादे ह़ज़रत साईं मियाँ और एक साह़बज़ादी पैदा हुईं।

आपका विसाले मुबारक 17 रबीउ़ल अव्वल 1235 हिजरी जुमेरात के दिन 75 साल की उ़म्र शरीफ़ में हुआ। अपने जद्दे आला ह़ज़रत शाह बरकतुल्लाह के बाएँ पहलू में आराम फ़रमा हैं।

सरकारे शम्से मारहरा के ख़ुलफ़ा और मुरीदीन गिने नहीं जा सकते। हिन्द, अ़रब, रूम, शाम, फ़ारस से ख़ुदा के हज़ारों बन्दे अपने ख़ालिक़ की तलब में ह़ाज़िर होते और कामयाब जाते। आपकी ज़ात से ख़िलाफ़त पाने वाले चन्द ख़ुशनसीब ह़ज़रात यह हैंः ह़ज़रत सय्यद शाह आले बरकात सुथरे मियाँ (आपके मंझले भाई), ह़ज़रत सय्यद शाह ख़ैरात अ़ली काल्पवी, ह़ज़रत शाह ऐ़नुल ह़क़ अ़ब्दुल मजीद बदायूनी, ह़ज़रत मौलाना निज़ामुद्दीन अ़ब्बासी, ह़ज़रत मौलाना नसीरूद्दीन उ़स्मानी बदायूनी, ह़ज़रत क़ाज़ी अ़ब्दुस्सलाम अ़ब्बासी, ह़ज़रत मौलाना सलामत उल्लाह कश्फ़ी वग़ैरा रह़मतुल्लाह अ़लैहिम अजमईन।

सिराजुस्सालिकीन हज़रत सय्यद शाह आले बरकात सुथरे मियाँ साहब रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत सय्यद शाह आले बरकात सुथरे मियाँ साहब, हुज़ूर सय्यद शाह हमज़ा के मँझले साहबज़ादे हैं। आपकी विलादत 10 रजब 1163 हिजरी में मारहरा शरीफ़ में हुई।

वालिदे माजिद ने आपकी तालीमो तरबियत फ़रमाई। दूसरे इल्मो फ़न के साथ फ़न्ने तिब्ब की तालीम भी हासिल की। अपने वालिदे माजिद हज़रत हमज़ा के हाथ पर बैत (मुरीद) हुए और ख़िलाफ़त हासिल की। इसके अलावा हुज़ूर अच्छे मियाँ से भी ख़िलाफ़त हासिल थी। हज़रत सुथरे मियाँ बहुत कम मुरीद फ़रमाते थे। अपने साहबज़ादों के अलावा सिर्फ़ कुतुबे ग्वालियर हज़रत हाफ़िज़ नसीरूद्दीन अलैहिर्रहमा को ख़िलाफ़त अता फ़रमाई।

आपकी फ़ज़ीलत इस बात से ज़ाहिर है कि बारह साल की उम्र से लेकर 90 साल की उम्र तक आमाल व विर्द व वज़ीफ़ा में लगे रहे। कुरआने पाक की तिलावत का यह हाल था कि हज़ारों नहीं लाखों बार कुरआने पाक मुकम्मल फ़रमाया। दुआ–ए–हिर्ज़े यमानी लाखों बार पढ़ी। हज़रत सुथरे मियाँ साहब अपनी शहादत की उँगली पर पट्टी बाँधे रहते, एक दिन उनके छोटे साहबज़ादे हज़रत गुलाम मुहिय्युद्दीन अमीर आलम ने उनसे पूछा कि आपकी उँगली में क्या हुआ? हज़रत ने फरमायाः कुछ नहीं। इस

पर आपके साह़बज़ादे ने वह पट्टी आपके नाख़ुन से खींच ली तो देखा कि नाख़ुन पर ''अल्लाह'' लिखा हुआ है। जब ह़ज़रत के साह़बज़ादे ने उनसे पूछाः यह कैसे हुआ? तो इरशाद फ़रमाया कि हर नमाज़ में जब यह उँगली अल्लाह तआ़ला की वह़दानियत की शहादत देती है तो अगर इस पर इतना भी अस़र न आए तो दिल पर कैसे अस़र होगा? यह था ह़ज़रत सुथरे मियाँ की इ़बादत व रियाज़त का आ़लम।

आपका पहला निकाह़ सय्यद मुह़म्मद अह़सन साह़ब की बेटी से हुआ जिनसे सय्यद आले इमाम जुम्मा मियाँ पैदा हुए। दूसरा निकाह़ बारबंकी के सादात में क़ाज़ी सय्यद गुलाम शाह हुसैन साह़ब बिलग्रामी की साह़बज़ादी फ़ज़ल फ़ातिमा से हुआ जिनसे ख़ातिमुल अकाबिर सय्यद शाह आले रसूल अह़मदी, सय्यद शाह औलादे रसूल, सय्यद शाह गुलाम मुहि़य्युद्दीन अमीर आ़लम रह़मतुल्लाह अ़लैहिमा और पाँच साह़बज़ादियाँ पैदा हुईं।

ह़ज़रत सुथरे मियाँ का विसाल 90 साल की उ़म्र में 26 रमज़ान, 1251 हिजरी, सनीचर के दिन, ज़ुहर के वक़्त हुआ। विसाल से कुछ साल पहले आपने वसीयत की थी कि मुझे ह़ज़रत ह़मज़ा और ह़ज़रत आले मुह़म्मद के दरमियान दफ़्न किया जाए। विसाल के बाद जब क़ब्र खोदने की तैयारी हुई तो वहाँ इतनी जगह दरमियान में न थी कि क़ब्र हो सके। नाचार दूसरी जगह क़ब्र के लिये तैयार हुई। जब दरगाह में आपको दफ़्न करने जा ही रहे थे कि ह़ज़रत सय्यद शाह आले रसूल उस जगह पर गए जहाँ ह़ज़रत सुथरे मियाँ साह़ब ने वसीयत फ़रमाई थी तो देखा कि उन दोनों मज़ारों के बीच अच्छी ख़ासी जगह

मौजूद है। हज़रत सय्यद शाह आले रसूल साहब ने यह करामत तमाम हाज़िरीन को दिखाई जिससे साफ़ मालूम हुआ कि हज़रत आले मुहम्मद साहब का मज़ार अपनी जगह से पूरब की तरफ़ सरक गया है और अपने लख़्ते जिगर राहते जान सुथरे मियाँ साहब के लिये अपने और अपने फ़र्ज़न्द सय्यदना शाह हमज़ा साहब के दरमियान में जगह कर दी है। हाज़िरीन इस करामत को देखकर बहुत ताज्जुब में पड़े और फिर हज़रत सुथरे मियाँ साहब रहमतुल्लाह अ़लैह हज़रत सय्यद शाह हमज़ा और हज़रत सय्यद शाह आले मुहम्मद रहमतुल्लाह अ़लैहिमा के मज़ार के दरमियान दफ़्न किये गए।

हज़रत सुथरे मियाँ साहब ने ख़ानदान से बाहर बहुत कम लोगों को ख़िलाफ़त से नवाज़ा इसलिये दीगर मशाइख़ की बनिस्बत आपके ख़ुलफ़ा की तादाद कम है। आपके ख़ुलफ़ा में हज़रत सय्यद शाह आले रसूल अहमदी, हज़रत सय्यद शाह औलादे रसूल, हज़रत सय्यद शाह गुलाम मुहिय्युद्दीन अमीर आ़लम और हाफ़िज़ नसीरूद्दीन रहमतुल्लाह अ़लैहिम अजमईन के नाम मिलते हैं।

इमामुल वासिलीन ख़ातिमुल अकाबिर ह़ज़रत सय्यद शाह आले रसूल अह़मदी रह़मतुल्लाह अ़लैह

आप ह़ज़रत सुथरे मियाँ साह़ब के मंझले साह़बज़ादे हैं। आपकी विलादत रजब 1209 हिजरी (1795 ई0) में मारहरा शरीफ़ में हुई। आप हमारे आक़ा–ए–नेमत हुज़ूर शम्से मारहरा के चहेते, लाडले और मह़बूब मुरीद, ख़लीफ़–ए–आज़म व जानशीन थे। अपने वालिदे माजिद से भी इजाज़त व ख़िलाफ़त थी। ह़ज़रत अच्छे मियाँ साह़ब के हुक्म पर आपने उस दौर के जय्यद अ़ालिमों और कामिलों से सनद और इजाज़त ह़ासिल फ़रमाई। इब्तिदाई तालीम ह़ज़रत शाह ऐ़नुल ह़क़ साह़ब से ह़ासिल की फिर मौलाना सलामतुल्लाह कश्फ़ी और मौलाना अ़ब्दुल वासेअ़ सैदनपुरी, मौलाना नूरूल ह़क़ लखनवी वग़ैरा से तालीम ह़ासिल की। ह़दीस़ की किताबें ह़ज़रत शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस़ देह्लवी से पढ़ीं। सिराजे मिल्लत ह़ज़रत शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने आपको सनदे ह़दीस़ और बहुत से आमाल की इजाज़त भी अ़ता फ़रमाई। मौलाना शाह नियाज़ फ़ख़री बरेलवी ने भी आपको सनदे इ़ल्मे ह़दीस़ अ़ता फ़रमाई। इ़ल्मे तिब्ब ह़कीम फ़र्ज़न्द अ़ली साह़ब मोहानी से ह़ासिल किया।

ह़ज़रत ख़ातिमुल अकाबिर के औसाफ़ और अख़लाक़ बहुत बुलन्द थे। सख़ावत, फ़य्याज़ी, मेहमान नवाज़ी, जज़्ब–ए–ईस़ार, ख़िदमते ख़ल्क़, उल्मा व मशाइख़ की इ़ज़्ज़त व तौक़ीर जैसी अ़ज़ीम आ़दतें आपकी ज़ात में

मौजूद थीं। अपने वालिद के विसाल के बाद मसनदे बरकातिया आले अह़मदिया पर जलवा अफ़रोज़ हुए, आप अपने तौर तरीक़ों में अपने मुर्शिद हुज़ूर शम्से मारहरा के सच्चे जानशीन थे, हमेशा लिबासे दरवेशाना में रहते, ज़रूरतमंदों को भी सुलूक का वही अ़मल और तरीक़ा बताते जो नबवी ह़दीसे़ पाक से साबित है। मामलात में नफ़्स से बेज़ारी जो आपके यहाँ थी वह बहुत दुश्वार काम है। अपने वालिद के विसाल के बाद सारे तबर्रुकात अपने भाइयों को दे दिये उसमें से कोई हि़स्सा न लिया। अपने ज़ाती माल को दरगाह व ख़ानक़ाह में ख़र्च फ़रमा देते। दरगाह की इन्तिज़ामिया कमेटी आपके मश्वरे से ही क़ाएम हुई। मदरसा, मकानात, उल्मा व फ़ुक़रा के लिये हुजरे तामीर कराए। इमाम, मुअज़्ज़िन और दरगाह का हि़साब रखने के लिये हि़साब करने वाला रखा, दरगाह के मामलात, उ़र्स का इन्तिज़ाम, मेहमानदारी सब ह़ज़रत ख़ुद फ़रमाते। उ़र्स बहुत सादा तरीक़े से मुन्अ़क़िद करते, नात, मन्क़बत, ख़त्मे कुरआन, दलाइलुल ख़ैरात और लंगर ही पर उ़र्स होता। फ़ुज़ूल चीज़ों से हुज़ूर ख़ातिमुल अकाबिर को बहुत परहेज़ था। किसी का भी शरीअ़त की ह़द से आगे बढ़ना कभी गवारा नहीं फ़रमाया। रोज़ आपके यहाँ ह़लक़ए ज़िक्र होता, तमाम अ़मला जमाअ़त के साथ नमाज़ में ह़ाज़िर होता, फ़ुक़रा तहज्जुद में भी ह़ाज़िर रहते। आप नमाज़ में हमेशा मुक़्तदी रहते, कभी भी इमाम न बनते थे। आ़जिज़ी और नफ़्स के कमाल का यह आ़लम था कि अपने साह़बज़ादगान को अपने घर की तमाम बरकतों के बावुजूद ख़ुलफ़ा–ए–ख़ानदान से भी इजाज़त और ख़िलाफ़त दिलवाई। जब आपके साह़बज़ादे सय्यद शाह

जहूर हसन ने सुलूक को पूरा फ़रमा लिया तो हुक्म हुआ कि तुम्हारे घर की बड़ी दौलत मौलाना अ़ब्दुल मजीद साहब के पास है, जाओ और हिस्सा ले लो। हज़रत मौलाना ने साहबज़ादे का शहर से बाहर आकर इस्तक़बाल किया और उसी रात हज़रत शाह ऐनुल हक़ साहब, सय्यद ज़ुहूर हसन बड़े मियाँ अ़लैहिर्रहमा के हुजरे के बाहर पूरी रात खड़े रहे जब फ़ज्र के वक़्त साहबज़ादे बाहर निकले तो देखा कि मौलाना शाह ऐनुल हक़ हाथ बाँधे खड़े हैं। साहबज़ादे ने इस तकलीफ़ का सबब पूछा तो मौलाना ने वह जवाब दिया कि ऐसा इज़हारे मुहब्बत आज के दौर में मुश्किल है। मौलाना अ़ब्दुल मजीद साहब ने फ़रमायाः

''यही नेमत तो आपके घर से लाया हूँ और मुझको यही हुक्म है। अल–हम्दु लिल्लाह! आपका सुलूक मुकम्मल हुआ जिसके लिये आप बदायूँ आए थे। राहे दरवेशी में अदब, मुहब्बत, गुरूर को छोड़ना ज़रूरी है, अब आप तशरीफ़ ले जाइये।'' यह कह कर सनदे ख़िलाफ़त व इजाज़त अ़ता फ़रमाई।

एक रोज़ ख़ादिम को हज़रत साहब का हुक्म हुआ कि जाओ बाहर देखो मौलाना ऐनुल हक़ तशरीफ़ लाए हैं। ख़ादिम ने कहाः हज़रत वह तो अभी गए हैं। अब कैसे? तो फ़रमायाः देखो और बुला लाओ। ख़ादिम ने बाहर देखा तो मौलाना का सामान उतारा जा रहा था। ख़ादिम ने मौलाना को जब हज़रत साहब का पैग़ाम दिया तब मौलाना साहब फ़ौरन हज़रत साहब के पास तशरीफ़ ले आए। हज़रत साहब ने इरशाद फ़रमाया कि ''भाई तुम ख़ूब आ गए, हमारा दिल था कि सय्यद ज़हूर हुसैन छुट्टू मियाँ को भी तुमसे इजाज़त दिलवा दें।'' मौलाना ने फ़रमायाः जो हुक्म

हो। उसी वक़्त काग़ज़ क़लम मँगवाकर इजाज़त दिलवाई। अपने नवासों हज़रत सय्यद शाह हुसैन हैदर और हज़रत सय्यद शाह ज़हूर हैदर को पढ़ने के लिये मदरसा आ़लिया क़ादिरीया बदायूँ शरीफ़ भेजा। अपने पोते हुज़ूर पुरनूर आक़ाई व मौलाई सरकार नूरी मियाँ साहब क़िब्ला से एक रोज़ फ़रमाया कि ''हम बुढ़ापे की वजह से किताबें भूल गए, मौलाना अ़ब्दुल क़ादिर का इ़ल्म ताज़ा है, वह हमारा ख़ास घर है, मुझे बरख़ुरदार मौलाना अ़ब्दुल क़ादिर की दयानत और तक़वे पर पूरा यक़ीन है, तुम शरीअ़त और तरीक़त के मसाइल पर उनसे मशवरा कर लिया करो।''

सरकारे नूरी मियाँ सिराजुल अ़वारिफ़ में अपने दादा व मुर्शिद के फ़ज़ाइल में तहरीर फ़रमाते हैं:

''यहाँ अपने मुर्शिद का वाक़या लिखता हूँ कि इस मसले पर रोशनी पड़ेगी। आपके एक मुरीद मुज़फ़्फ़र अ़लवी बरेलवी कहते हैं कि एक रात इस्तिन्जा के लिये उठा और तहारत के लिये पानी लेने अपने हुजरे से बाहर आया तो क्या देखता हूँ कि दरगाहे मुअ़ल्ला में बुज़ुर्गों का बड़ा कसीर मजमा है जैसे उ़र्स का दिन हो और साहिबुल बरकात के पाईं दालान में जवाहिरात का जड़ाऊ तख़्त बिछा है और उसके चारों तरफ़ अकाबिर औलिया बैठे हैं। कुछ देर बाद क्या देखता हूँ कि हमारे हज़रत पीरो मुर्शिद (शाह आले रसूल) को शाहाना लिबासे फ़ाख़िरा पहनाए और सर पर ताज रखे दो बुज़ुर्ग बग़ल में हाथ डाले हुए लाए और तख़्त पर बिठाया। तमाम लोग ताज़ीम के लिये खड़े हो गए और हज़रत की पेशानी पर बोसा दिया। यह सब कुछ देखकर हैरत ज़दा होकर एक अन्दुरूनी ज़ीने के नीचे खड़ा हो गया, उसके बाद तमाम हज़रात अन्दर चले

गए और ग़ायब हो गए फिर मैं अपने हुजरे में आ गया। यह माजरा देखकर मुझे सारी रात नींद नहीं आई, सुबह़ मस्जिद में ह़ाज़िर हुआ और हुज़ूर पीरो मुर्शिद के पीछे नमाज़े बाजमात अदा की और फिर यह ह़ाल अ़र्ज़ करके उस मक़ाम की कैफ़ियत दरयाफ़्त करने लगा। पहले तो फ़रमायाः तुमने ख़्वाब देखा होगा और ख़्वाब की बातों का क्या एतबार है? जब मैंने इसरार किया तो बादिले नख़्वास्ता फ़रमाया कि ख़ामोश रहो, इस बारे में कोई बात न कहो। मैं उसी वक़्त ख़ामोश हो गया। अल्लाह अल्लाह! क्या पर्दादारी थी कि कभी इशारों और कनायों में भी इसका तज़किरा नहीं किया ह़ालाँकि यह मक़ाम ''मक़ामे कुतुबियत'' है और हुज़ूरे वाला को मारहरा की ख़िदमत सुपुर्द थी। उस दिन के बाद से वफ़ात शरीफ़ तक आप मारहरा से बाहर नहीं गए और सैकड़ों करामतें आप से ज़ाहिर हुईं।

अपने गुलामों को नवाज़ने का आ़लम ही निराला था। इसका पूछना ही क्या? ह़ज़रत ख़ातिमुल अकाबिर के विसाल के बाद राक़िम के ख़ानदान के चार बुज़ुर्ग आस्ताने पर ह़ाज़िर हुए। इस मौक़े पर ह़ज़रत के नवासे सय्यद शाह अमीर आ़लम ख़रक़ानी मियाँ तशरीफ़ रखते थे। फ़ातिह़ा के बाद क़ाज़ी गुलाम शब्बर साह़ब ने अ़र्ज़ कियाः ''साह़बज़ादे! अगर कोई तह़रीर ह़ज़रत साह़ब की हो तो तबर्रुक के तौर पर अ़ता फ़रमा दें।'' साह़बज़ादे ने फ़रमायाः अव्वल तो दादा ह़ज़रत कोई नक़्श तह़रीर नहीं फ़रमाते थे, कोई बहुत ज़िद करता तभी दिया करते थे, जो कुछ था वह औलादों ने तक़सीम कर लिया।'' यह फ़रमाकर साह़बज़ादे साह़ब ने एक छोटा सा संदूक़चा मेरे

बुज़ुर्गों का सुपुर्द किया। जब उन्होंने उस संदूक़चे का जाइज़ा लिया तो देखा ''एक खाने में चार पर्चे हैं'' आपके नवासे ने इस बात पर ह़ैरत की कि मैंने तो तलाश ख़ूब किया तब तो कुछ भी न निकला यह सिर्फ़ दादा ह़ज़रत का करम और करामत ही है जो अब यह निकल आया। हम लोगों ने एक एक पर्चा चारों में तक़सीम किया और वापस आ गए। यह है हम गुलामों पर विसाल के बाद आक़ाओं की मेहरबानी। उसी रोज़ अपनी बेटी यानी हमारी बूबू साह़िबा को ज़ियारत अपनी कराई और इरशाद फ़रमायाः बदायूँ से हमारे बच्चे परेशान आए हैं, तुम बुलाकर तसल्ली दो।

सख़ावत व अ़ता का आ़लम निराला था कोई भी मेहमान नया आता तो तहज्जुद में या मुराक़बे में पता कर लेते और अपनी बीवी साह़िबा से फ़रमाते कि एक अ़ज़ीज़ नेकदिल आया है, उसे ज़रा ख़ास तौर पर खाना दे दो। कभी कभी मुसाफ़िर खाने के बरतन भी साथ ले जाते लेकिन ह़ज़रत साह़ब ख़फ़ा न होते बल्कि अपनी करीमाना रविश पर ही क़ाएम रहते।

आपका निकाह़ ह़ज़रत सय्यद मुन्तख़ब हुसैन साह़ब की साह़बज़ादी सय्यदा निस़ार फ़ातिमा से हुआ जिनसे ह़ज़रत सय्यद शाह ज़हूर ह़सन बड़े मियाँ, ह़ज़रत सय्यद शाह ज़हूर हुसैन छोटे मियाँ और तीन साह़बज़ादियाँ दुनिया में तशरीफ़ लाईं।

करामातें इस दर्जे की थीं कि ह़ज़रत का विसाले मुबारक 18 ज़िलहि़ज्जा, 1296 हिजरी में बुध के रोज़ मारहरा शरीफ़ में हुआ। दरगाहे बरकातिया में अपने जद्दे बुज़ुर्गवार शाह ह़मज़ा ऐनी के सरहाने आपकी आख़िरी

आरामगाह है। हज़रत विसाले मुबारक के बाद भी आप अपनी करामातें ज़ाहिर फ़रमाते रहे। जब उनको क़ब्र में रखा जाने लगा तो उन्होंने पाँव समेट लिये, अ़जब ही मन्ज़र था कि बार बार हज़रत साहब के पाँव ठीक किये जाते, हज़रत साहब समेट लेते। आख़िर लोगों की समझ में आया कि चूँकि उनके पैर उनके दादा शाह हमज़ा के सिरहाने की तरफ़ हो रहे हैं लिहाज़ा हज़रत एहतेराम में पैर सीधे नहीं कर रहे हैं। फ़ौरन ही हज़रत शाह हमज़ा के सरहाने दीवार खड़ी की गई तब हज़रत साहब को सुपुर्दे मज़ार किया गया। हज़रत साहब के लबे मुबारक भी विसाल के बाद हिलते रहे और अपने ख़ालिक़ की तस्बीह (पाकी बयान) करते रहे। तब हाज़िरीन ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर देर हो रही है। बस यह कहते लबों में हरकत बन्द हो गई और हज़रत को सुपुर्दे मज़ार किया गया।

हज़रत ख़ातिमुल अकाबिर के ख़ुलफ़ा एक से एक साहिबे फ़ज़्लो कमाल थे लेकिन जो मक़ाम आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरेलवी को हासिल हुआ वह सबसे मुम्ताज़। ख़ातिमुल अकाबिर ने पहली ही नज़र में चश्मो चिराग़े ख़ानदाने बरकात का इन्तिख़ाब फ़रमाकर मुरीद किया और ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई और ऐसा नवाज़ा कि इमाम अहमद रज़ा ''रज़ा–ए–आले रसूल'' हो गए। सुन्नियत का अ़लम इमाम अहमद रज़ा के हाथ में सरकार आले रसूल ने दिया और सुबहे क़यामत तक इमाम अहमद रज़ा को मोतबर और मुस्तनद फ़रमा दिया। यह दुआ़ए आले रसूल ही तो थी कि 22 साल के अहमद रज़ा मुजद्दिदे वक़्त और आ़शिक़े रसूल के दर्जे पर फ़ाइज़ हुए और इसका एतिराफ़ भी इमाम अहमद रज़ा ने ख़ूब किया।

कैसे आक़ाओं का बन्दा हूँ रज़ा
बोल बाले मेरी सरकारों के

हुज़ूर आला ह़ज़रत के अ़लावा सरकारे नूर ह़ज़रत सय्यद शाह अबुल हुसैन अह़मदे नूरी, ह़ज़रत सय्यद शाह इस्माईल ह़सन, ह़ज़रत सय्यद शाह अमीर आ़लम साह़ब, ह़ज़रत सय्यद शाह अ़ली हुसैन अशरफ़ी कछौछवी, ह़ज़रत अ़ल्लामा नक़ी अ़ली ख़ान साह़ब (आला ह़ज़रत के वालिदे माजिद) ख़ास तौर से क़ाबिले ज़िक्र हैं।

सय्यदुल आ़बिदीन ह़ज़रत सय्यद शाह औलादे रसूल रह़मतुल्लाह अ़लैह

सय्यदुल आ़बिदीन ह़ज़रत सय्यद शाह औलादे रसूल साह़ब रह़मतुल्लाह अ़लैह ह़ज़रत सय्यद शाह आले बरकात सुथरे मियाँ साह़ब के तीसरे साह़बज़ादे थे। पन्द्रह शाबान 1212 हिजरी को पैदा हुए। आपकी परवरिश, तालीम और तरबियत हुज़ूर अच्छे मियाँ ने ख़ुद फ़रमाई। बैअ़तो ख़िलाफ़त आपको हुज़ूर शम्से मारहरा से है। आपका अ़क़्द मीर सआ़दत अ़ली इब्ने सय्यद मुन्तख़ब हुसैन की साह़बज़ादी कुदरत फ़ातिमा से हुआ। चार साह़बज़ादे शाह मुह़म्मद सादिक़, शाह मुह़म्मद जाफ़र, मुह़म्मद बाक़र, शाह मुह़म्मद अ़सकरी और चार साह़बज़ादियाँ औलादे फ़ातिमा, ग़नीमत, मुह़िब्ब फ़ातिमा और ख़ातून फ़ातिमा ज़िन्दा रहीं। हुज़ूर अच्छे मियाँ साह़ब ने आपको अपनी तमाम मिल्कियत अ़ता फ़रमाई, अपने बाग़ात भी ह़ज़रते शम्से मारहरा ने आपको अ़ता फ़रमा दिये। अपने वालिदे माजिद के विसाल के बाद अपने दोनों भाइयों ह़ज़रत शाह आले रसूल और ह़ज़रत शाह गुलाम मुह़िय्युद्दीन साह़ब के पास सज्जादए बरकातिया पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए। ह़ज़रते वाला को फ़न्ने तकसीर और रूह़ानियत व सल्बे अमराज़ में महारत ह़ासिल थी, फ़न्ने तिब्ब अपने वालिदे माजिद से सीखा। चन्द रसाइल ख़ानदान ह़ालात पर व मीलादे मुबारक के बयान में भी आपने रक़म फ़रमाए हैं।

26 रबीउ़स्सा़नी 1268 हिजरी को मारहरा में इन्तिक़ाल फ़रमाया। दरगाहे बरकातिया में ह़ज़रत शाह ह़मज़ा के पाएतीं मज़ारे मुबारक है।

शम्सुल उ़रफ़ा सिराजुल कुमला
ह़ज़रत सय्यद शाह गुलाम मुह़िय्यदुद्दीन
अमीर आ़लम रह़मतुल्लाह अ़लैह

ह़ज़रत सय्यद शाह गुलाम मुह़िय्युद्दीन अमीर आ़लम रह़मतुल्लाह अ़लैह ह़ज़रत ह़ज़रत सय्यद शाह सुथरे मियाँ साह़ब के छोटे साह़बज़ादे हैं। 1223 हिजरी में पैदा हुए, आप अपने ताया शाह हुज़ूर अच्छे मियाँ साह़ब के बड़े मन्ज़ूरे नज़र थे। इब्तिदाई तालीम मौलाना शाह अ़ब्दुल मजीद साह़ब बदायूनी और मौलवी शाह सलामतुल्लाह कश्फ़ी से ह़ासिल की। बातिनी उ़लूम की तकमील अपने चचा हुज़ूर शम्से मारहरा और वालिदे माजिद से की। बैत वालिदे माजिद से थे। ख़िलाफ़त व इजाज़त हुज़ूर अच्छे मियाँ साह़ब और हुज़ूर सुथरे मियाँ साह़ब दोनों से ह़ासिल थी। अपने वालिदे माजिद के विसाल के बाद अपने दोनों ह़क़ीक़ी भाईयों शाह आले रसूल अह़मदी और शाह औलादे रसूल के साथ सज्जाद–ए–ग़ौसिया आले अह़मदिया पर जलवा अफ़रोज़ हुए। ह़ज़रत सय्यद शाह गुलाम मुह़िय्युद्दीन अमीर आ़लम नवाब वज़ीर वाली–ए–अवध के यहाँ नाएब वज़ीर थे। इस मन्सब के बावुजूद ज़िक्रे ख़ुदावन्दी व वज़ाइफ़ के पाबन्द थे, कभी इ़बादत में कोई नाग़ा न होता। फ़ने तकसीर में कमाल का हुनर रखते थे।

आपका निकाह़ सय्यद सआ़दत अ़ली साह़ब इब्ने सय्यद मुन्तख़ब हुसैन साह़ब बिलग्रामी की साह़बज़ादी दयानत फ़ातिमा से बिलग्राम में हुआ। तीन साह़बज़ादगान शाह नूरूल हुसैन, शाह नूरूल ह़सन और शाह नूरूल मुस्तफ़ा और एक साह़बज़ादी सकीना फ़ातिमा बेगम थीं।

हज़रत का विसाल 5 शाबान 1286 हिजरी बुध के रोज़ लखनऊ में हुआ। वसीयत के मुताबिक़ मारहरा में तदफ़ीन हुई।

आपके ख़ुलफ़ा में सिर्फ़ दो लोगों के नाम हमें दस्तयाब हो सके और वो यह हैं:

हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद सादिक़ और हज़रत सय्यद शाह इस्माईल हसन शाह जी मियाँ (साहिबे उ़र्से क़ासमी) रहमतुल्लाह अ़लैहिमा।

ख़ातिमुल असलाफ़ ह़ज़रत सय्यद शाह मुह़म्मद सादिक़ रह़मतुल्लाह अ़लैह

ह़ज़रत सय्यद शाह मुह़म्मद सादिक़ रह़मतुल्लाह अ़लैह हुज़ूर सय्यद शाह औलादे रसूल के बड़े साह़बज़ादे थे। 7 रमज़ान 1248 हिजरी को पैदा हुए। तरबियत व तालीम अपने वालिदे माजिद से पाई। बैअ़त व ख़िलाफ़त अपने चचा जान सय्यद शाह गुलाम मुहि़य्यदीन अमीर आ़लम रह़मतुल्लाह अ़लैह से थी। अपने ताऊ हुज़ूर ख़ातिमुल अकाबिर और वालिदे माजिद सिलसिलए क़ादरिया बरकातिया में इजाज़तो ख़िलाफ़त थी। अपने बुज़ुर्गों के ज़ाहिरी व बातिनी कमालात के सच्चे वारिस़ थे। होश संभालने से लेकर आख़िरी उ़म्र तक वक़्त की पाबन्दी और ख़ानदानी मामूलात कभी नाग़ा न होने दिये। फ़न्ने तिब्ब अपने वालिदे माजिद और ताया मुकर्रम सय्यद शाह आले रसूल साह़ब से और कुछ तालीमे तिब ह़ज़रत सैफुल्लाहिल मसलूल ह़ज़रत अ़ल्लामा शाह फ़ज़्ले रसूल साह़ब बदायूनी से ह़ासिल की। सीतापुर में तक़रीबन 45 बरस तक आपने क़याम फ़रमाया।

ह़ज़रत सय्यद शाह मुह़म्मद सादिक़ की ज़िन्दगी में उनके दीनी दुनियावी कारनामों की एक लम्बी फ़ेहरिस्त है। आपको तामीरात का बहुत शौक़ था, ख़ासकर पीने के पानी के लिये बहुत कुएँ खुदवाया करते थे। साथ ही ज़मीनों को फ़सल के लिये पानी देने के वास्ते बहुत कुएँ बनवाए। बहुत से बाग़ लगाए, बहुत सी जायदादें नई ख़रीदीं। सीतापुर में आपने मकानात ख़रीदे, मारहरा शरीफ़ में मह़लसराय ह़वेली सज्जादगी नए सिरे से तामीर कराई,

दरगाह शरीफ़ व ख़ानक़ाह की बहुत सी मरम्मतें कराईं। हज़रत सय्यद मुहम्मद सादिक़ के साहबज़ादे हज़रत इस्माईल हसन साहब ने जब कुरआन हिफ़्ज़ कर लिया तो इस ख़ुशी में उनके वालिदे माजिद ने शुकराने के तौर पर एक ख़ूबसूरत आ़लीशान मस्जिद तामीर कराई जो आज भी दूर दूर तक मशहूर है।

आपने दीनी कुतुब की इशाअ़त के लिये ''मतबअ सुबहे सादिक़'' सीतापुर में क़ायम किया जिसने मज़हबी और मसलकी किताबों की इशाअ़त में अहम किरदार अदा किया। आप सूरत व सीरत में अपने अजदाद का नमूना थे, बहुत सादा व नर्म मिज़ाज, ग़लतियों को दरगुज़र करने वाले। तमाम दौलत, हुकूमत, इक़्तिदार, इल्म के हासिल होने के बावुजूद दरवेशाना और फ़क़ीराना मिज़ाज पाया था। हाकिमों और अमीरों से बहुत दूरी बनाकर रखते। हर वक़्त ग़रीबों और मिस्कीनों को अपने आस पास पाकर ख़ुश हुआ करते थे।

आपका निकाह अपने चचा व मुर्शिद हज़रत सय्यद शाह गुलाम मुहिय्यदीन की साहबज़ादी सकीना बेगम से हुआ। दो साहबज़ादे हज़रत सय्यद शाह अबुल क़ासिम मुहम्मद इस्माईल हसन शाह जी मियाँ और सय्यद शाह अबुल काज़िम मुहम्मद इदरीस हसन सुथरे मियाँ और पाँच साहबज़ादिया इमदाद फ़ातिमा हैदरी बेगम, तुफ़ैल फ़ातिमा अबरार बेगम, एहतिशाम फ़ातिमा सयियदा बेगम, उम्मुल फ़ातिमा और अनज़ार फ़ातिमा थीं।

हज़रत सय्यद शाह का मुहम्मद सादिक़ का विसाल जुमेरात की रात 24 शव्वाल 1326 हिजरी में सीतापुर में हुआ। मज़ारे मुबारक सीतापुर में है। हाल ही में हज़रत

अमीने मिल्लत ने दरगाह शरीफ़ को नए सिरे से तामीर कराया है।

आपके ख़ुलफ़ा में सिर्फ़ दो शख़्सिय्यात के नाम मिलते हैं:

हज़रत सय्यद शाह इस्माईल हसन शाह जी मियाँ (साहिबे उ़र्से क़ासमी) और हज़रत सय्यद शाह इदरीस हसन रहमतुल्लाह अ़लैहिमा।

सिराजुल औलिया, नूरूल आ़रिफ़ीन हज़रत सय्यदना शाह अबुल हुसैन अह़मदे नूरी उ़र्फ़ ''मियाँ साह़ब कि़ब्ला'' रह़मतुल्लाह अ़लैह

आक़ाई मौलाई सय्यदी व सनदी हुज़ूर नूरी मियाँ साह़ब की विलादत 19 शव्वाल 1255 हिजरी में मारहरा शरीफ़ में हुई। सरकारे नूर के वालिदे माजिद ह़ज़रत सय्यद शाह ज़हूर ह़सन उ़र्फ़ बड़े मियाँ, ख़ातिमुल अकाबिर सय्यद शाह आले रसूल अह़मदी के बड़े साह़बज़ादे हैं। बचपन में वालिदे माजिद के विसाल के बाद सारी तालीम और तरबियत दादा मुर्शिद की आग़ोश में हुई। सरकारे नूर को उनके दादा ने तमाम रूह़ानी और जिस्मानी तरबियतों में उस कमाल पर पहुँचा दिया जो ख़ानदाने बरकात के अकाबिर का इम्तियाज़ है। सरकारे नूर हर वक़्त दादा के साथ रहते, उनके ही साथ इ़बादत, रियाज़त, दरगाह की ह़ाज़िरी, वज़ाइफ़, तिलावत सब अदा फ़रमाते।

12 साल की उ़म्र शरीफ़ में सरकार आले रसूल, हुज़ूर नूरी मियाँ को सज्जादए बरकातिया पर ले गए और अपने पोते को अपना जानशीन मुक़र्रर करके नज़र पेश की। ह़ज़रत मियाँ साह़ब को उनके दादा मुर्शिद ने सख़्त मुजाहदे और रियाज़तें कराईं, छोटी सी उ़म्र में इतनी मेह़नत देखकर उनकी दादी घबरातीं और रोकना चाहतीं तो दादा ह़ज़रत फ़रमातेः ''इनको ऐ़शो आराम से क्या काम? यह कुछ और हैं और इन्हें कुछ और होना है। यह उन सात अक़ताब में से एक हैं जिनकी बशारत बूअ़ली शाह क़लन्दर पानीपती ने सरकारे ग़ौस़ के इशारे पर फ़रमाई थी।''

हुज़ूर मियाँ साहब क़िब्ला की ज़ाहिरी तालीमो तरबियत दादा शाह आले रसूल और बातिनी तरबियत हुज़ूर शम्से मारहरा शाह आले अहमद अच्छे मियाँ ने फ़रमाई। इसके अलावा मौलाना फ़ज़्लुल्लाह जलेसरी, मौलाना नूर अहमद उसमानी, मौलान हिदायत अली, मौलाना मुहम्मद हुसैन शाह, ताजुल फ़ुहूल मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैहिम से उलूमे दीन की तकमील फ़रमाई।

सरकारे नूर का क़द मियाना, रंग गेहुवाँ, पेशानी चौड़ी, आँखें बड़ी और नशीली, मुँह चौड़ा, दाढ़ी मुबारक पूरी भरी हुई, दस्ते मुबारक दराज़, उँगलियाँ पतली। (राक़िम को ख़्वाब में आक़ा–ए–नेमत सरकार मियाँ साहब की ज़ियारत और दस्तबोसी का शरफ़ हासिल हुआ और सब कुछ वैसा ही पाया जो किताबों में लिखा है। **अल–हम्दु लिल्लाह!**) अक्सर अमामा रंगीन पहनते, कुर्ता सफ़ेद नक़्शबंदी, टोपी दुपल्ली, जाड़ों में यमनी मिरज़ई पहनना पसन्द फ़रमाते थे।

इबादत और रियाज़त का आलम निराला था। फ़राइज़ और नवाफ़िल कसरत से अदा फ़रमाते, नमाज़े तहज्जुद से लेकर आराम फ़रमाने तक आमाल, वज़ाइफ़ और तिलावत में मसरूफ़ रहते। आम और ख़ास लोगों से मिलने के वक़्त अलग थे। मख़लूक़े ख़ुदा की ज़रूरतें ख़ूब ख़ूब पूरी की जातीं। हुज़ूरे अक़दस अमल और अमलियात में मशहूरे ज़माना दरवेश थे। असर आसेब और जिन्नातों पर क़ाबू पाना सरकारे नूर के ख़ास औसाफ़ में था। सरकारे नूर को तावीज़ात पर मलका हासिल था अगर

दस्ते मुबारक से किसी को तावीज़ अ़ता फ़रमा दिया तो अल्लाह के हुक्म से शिफ़ा यक़ीनी थी।

बड़े बड़े आसेब और जिन्नात अपने मुरीदों और आ़म लोगों पर से बस एक निगाह ही डालने से दूर फ़रमा देते थे। बदायूँ शरीफ़ में एक साहि़बा पर इतना बड़ा आसेब था कि बिना कपड़ों के रहा करती थीं। सरकारे नूर का गुज़र हुआ लोगों ने कहा कि हुज़ूर दुआ़ फ़रमा दें। मियाँ साह़ब ने फ़रमाया कि एक निगाह मिलवा दो, बस! सरकारे नूर की निगाह पड़ी ही थी कि आसेब दूर हुआ और वह कपड़े माँगने लगी। राक़िम कहता है:

अभी भी कह रहे हैं सब बदायूँ के गली कूचे
अभी भी याद वह तेरी नज़र है अह़मदे नूरी!

सरकारे नूर की ज़ात मशाइख़ की सीरत का इ़त्रे मजमूआ़ थी, साहि़बुल बरकात की बरकतें, शाह आले मुह़म्मद की रियाज़तें, शाह ह़मज़ा की जलालतें, शम्से मारहरा की विलायतें, सुथरे मियाँ की सुथराईयाँ, आले रसूली सुलूक ग़रज़ कि आप की ज़ात ज़ाहिरी व बातिनी ख़ुशरंग फूलों का ह़सीन गुलदस्ता थी।

शरीअ़त की पैरवी और तरीक़त के उसूलों की पाबन्दी ने सरकारे नूर को विलायते उ़ज़्मा के उस आला मक़ाम पर फ़ाइज़ किया कि आपके दौर में आपका कोई स़ानी न था।

सरकारे नूर की सीरत के कुछ अहम गोशे ऐसे हैं कि जिनसे उनके मानने वाले बहुत कुछ फ़ाइदा उठाकर अपनी शख़्सियत और किरदार को रौशन कर सकते हैं। मस़लन नफ़्स पर क़ाबू ऐसा कि सात साल की उ़म्र से आमाल और इ़बादतों में मशगूल हो गए।

सब्रः सब्र का आ़लम यह कि बड़े बड़े दुख में शुक्रे ख़ुदा किया, ग़मगीन न हुए। बीमारी की सख़्त ह़ालत में सिर्फ़ नमाज़ छूट जाने पर ग़मगीन होते।

इ़ल्मे दीन से मुह़ब्बतः आप एक ज़बरदस्त आ़लिमे दीन थे, शरीअ़त के मसाइल को अ़वाम को लिखकर और तक़रीर फ़रमाकर ऐसे बताते कि आ़म आदमी के ज़ह्न नशीं हो जाए।

दीनी मामले में अपने दादा शाह आले रसूल के हुक्म के मुताबिक़ ह़ज़रत ताजुल फ़ुहूल बदायूनी से मशवरा ज़रूर करते और उनके बाद फिर उस मसले पर किताबें न देखा करते थे।

ग़रीबों से मुह़ब्बत, अमीरों से दूरीः ग़रीबों, नादारों, ज़रूरतमंदों की सोह़बत को पसन्द फ़रमाते। ह़ज़रत के इर्द गिर्द हमेशा ज़रूरतमंदों का मजमा रहता। दूसरों की ख़राबह़ाल चीज़ों को यह कहकर बदल दिया करते कि हमें इसकी बहुत ज़रूरत थी और उसके बदले अपनी अच्छी चीज़ें अ़ता फ़रमाते।

ख़ुशो ख़ुर्रम रहनाः मर्ज़ की शिद्दत, ग़िज़ा की कमी और सदमों के बावुजूद भी सरकारे नूर का चेहरा हमेशा खिला हुआ और नर्म रहता।

मख़लूक़ की ह़ाजत रवाईः सरकारे नूर का अख़लाक़े करीमाना तमाम दुनिया में मशहूर था। दरबारे नूरी से कोई ह़ाजतमंद ख़ाली न जाता। सैकड़ों वाक़ियात हुज़ूरे अक़्दस के ऐसे दर्ज हैं कि जिनसे आपकी सख़ावत और दरियादिली ज़ाहिर होती है। अपने मुरीदों को क़र्ज़ से निजात दिलाने में सरकारे नूर का हाथ बहुत खुला हुआ था। एक मर्तबा ह़ज़रत के मुरीदे ख़ास और मेरे दादा

क़ाज़ी गुलाम शब्बर बदायूनी को 300 रूपये की उस ज़माने में ह़ाजत हुई। आप उनकी बारगाह में इस नियत से ह़ाज़िर हुए कि पैसे का ग़ैब की तरफ़ से इन्तज़ाम होने का अ़मल ले लूँगा। सरकार इ़बादत में थे, तशरीफ़ लाए और बिना सवाल सुने क़ाज़ी साह़ब को तीन सौ रूपये यह कहकर अ़ता फ़रमाए कि तह़सीले ज़र के अ़मल की ज़कात मुश्किल है, यह रख लो इन्शा अल्लाह सब ठीक होगा।

कंजूसी से नफ़रतः सरकारे नूर के दरबार में अ़ता व करम के दरिया बहते थे। आप कंजूस लोगों की सोह़बत को नापसन्द फ़रमाते, कोई सवाल रद्द होता ही न था। क्या ख़ूब इरशाद फ़रमाते कि ''उम्मते रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह व सल्लम में कम से कम सख़ावत, मेहमान–नवाज़ी और अख़लाक़े मुह़म्मद ज़रूर होगा।''

फ़ुज़ूल बातों से बचनाः ह़ज़रत की बारगाह में फ़ुज़ूल बातों का गुज़र न था। कोई बात ख़िलाफ़े शरीअ़त न ख़ुद फ़रमाते और न ही ख़ादिमों और अ़वाम को इजाज़त होती।

कामों में मियाना रवीः ह़ज़रते अक़दस की यह ख़ास आ़दते करीमा थी कि एक सहल और नर्म बीच का रास्ता इरशाद होता ताकि सवाल करने वाले को दुशवारी न हो।

नर्मी से बात करनाः सरकारे नूर का बात करने का अन्दाज़ ऐसा दिलनशीं और सादा था कि हर शख़्स आ़शिक़ था। फ़रमाते थे कि ''हम उम्मते मुह़म्मदी हैं, सरकारे क़ादरी के फ़क़ीर हैं, हममें सख़्ती कहाँ और कैसे हो सकती है?''

यादे इलाही और इ़श्क़े रसूलः ह़ज़रते अक़दस तौह़ीद के रमूज़ असरार को समझने और समझाने में अपना

स़ानी नहीं रखते थे, ख़ुद को यादे ख़ुदा में फ़ना रखना ख़ास मश्ग़ला था। शिर्को बिदअ़त पर अपने मुतवस्सिलीन को लिखकर और इरशादात के ज़रिये ताकीद हर मजलिस में फ़रमाते।

इश्के़ रसूल मक़सदे ह़यात था। फ़रमाते थेः ''शरीअ़त और तरीक़त दरवेशों और सूफ़ियों को इसलिये मंज़ूर है कि यह रसूले ख़ुदा तक रसाई के रास्ते हैं। ह़ज़रते अक़दस का हर क़ौल सिर्फ़ और सिर्फ़ सुन्नत के मुताबिक़ था।''

दुरूदे पाक के फ़ैज़ान के बारे में इरशाद थाः ''दुरूद शरीफ़ तमाम दुआ़ओं की रूह़ है, बग़ैर इसके कोई दुआ़ कामिल नहीं होती।''

अह्ले सिलसिला पर करमः अपने मुरीदों को इरशाद होताः हम ख़ुदा तआ़ला से तुम्हारे वास्ते दुनिया व आख़िरत में कामयाबी की हर वक़्त दुआ़ करते हैं। तुम्हारी तकलीफ़ से हमें तकलीफ़ होती है इन्शा अल्लाह अन्जाम बख़ैर हो।

सरकारे नूर को मुरीदों का हर वक़्त ख़्याल रहता उनकी ह़ाजत रवाई की फ़िक्र लगी रहती।

इश्के़ ग़ौसे़ आज़मः सरकारे ग़ौसे़ आज़म से ह़द से ज़्यादा इश्क़ और उनकी हिदायत और करमनवाज़ी पर एतिमाद। फ़रमाते थेः ''सरकारे क़ादिरीयत बड़े ग़य्यूर (ग़ैरतमंद) हैं, उनके सिलसिले से तअ़ल्लुक़ रखे वाला कहीं भी जाएगा परेशान न होगा।''

अक्स़र मुरीदीन को तसल्ली के लिये हुज़ूर शम्से मारहरा का यह शेर मुरीदों को लिखकर इरसाल फ़रमातेः

गुलामे ग़ौसे़ आज़म बेकसो मुज़तर नमी मानद
अगर मानद शबे मानद शबे दीगर नमी मानद

सरकारे नूर को जितनी मुह़ब्बत सरकारे ग़ौस़ से थी उतनी असह़ाबे सिलसिलए क़ादिरीया से। शाह तजम्मुल हुसैन क़ादिरी, शाह अ़ली हुसैन अशरफ़ी मियाँ और ह़ज़रत शाह वारिस़ अ़ली साह़ब से बड़े ख़ुसूसी तअ़ल्लुक़ात थे।

एक मर्तबा ह़ज़रत क़ाज़ी गुलाम शब्बर साह़ब क़ादरी को लेकर सुल्तानुल हिन्द की बारगाह में ह़ाज़िर हुए, ह़ज़रत ह़ाजी वारिस़ अ़ली शाह साह़ब भी ग़रीब नवाज़ के दरबार में ह़ाज़िर थे। यह मशहूर था कि ह़ाजी साह़ब गुफ़्तगू बहुत कम फ़रमाते हैं लेकिन उस रोज़ दोनों बुज़ुर्गों में एक घण्टा ऐसे गुफ़्तगू हुई जैसे मुद्दत के बाद दो दोस्त मिले हों। क़यामगाह पर तशरीफ़ लाकर ह़ज़रत वारिस़ अ़ली शाह साह़ब के बारे में फ़रमाया कि ''ह़ाजी साह़ब ख़ालिस क़ादरी हैं, उनका सिलसिला निहायत सही है और बड़े बुज़ुर्ग हैं।''

तसनीफ़ः तसनीफ़ और उसकी शोहरत से ह़ज़रत को ख़ास दिलचस्पी न थी लेकिन ज़रूरत पर बहुत तफ़सील के साथ तसनीफ़ फ़रमाते। ''सिराजुल अ़वारिफ़'' आपका एक ऐसा शाहकार है जो अह्ले तसव्वुफ़ के लिये एक दस्तूर का दर्जा रखती है। रिसाला सवाल व जवाब, इश्तिहारे नूरी, अ़क़ीद–ए–अह्ले सुन्नत, जंगे जमल व सिफ़्फ़ीन, अल–जफर, अल–नुजूम, तह़क़ीक़ुत्तरावीह़, दलीलुल यक़ीन मिन कलामि सय्यिदिल मुरसलीन, सलाते ग़ौस़िया, सलाते मुईनिया, सलाते नक़्शबन्दिया, सलाते साबिरीया, असरारे अकाबिरे बरकातिया।

सरकारे नूर को शायरी से बेह़द लगाव था, मज़हबी और बहारिया दोनों तरह के कलाम फ़रमाया करते थे,

पहले तख़ल्लुस सईद था फिर नूरी किया। तख़य्युले नूरी आपके कलाम का मजमूआ़ है।

विसाल मुबारकः जिस साल विसाल होना था उस साल बदायूँ शरीफ़ जलवा फ़रमा हुए और लोगों को कस्रत से मुरीद किया और फ़रमायाः ''अब हम न मिलेंगे''।

विसाल से चन्द रोज़ क़ब्ल सिकन्दराराव में जलवा अफ़रोज़ थे, ह़ालत में कमज़ोरी हुई फ़ौरन वहाँ से रवाना हुए, बेहोशी जैसी ह़ालत में सफ़र फ़रमाया, बस वहाँ से ह़वेली शरीफ़ में आकर 11 रजब 1324 हिजरी/31 अगस्त 1906 ई0 में विसाल फ़रमाया। यानी वह नूरी आफ़ताब हमारी ज़ाहिरी आँखों से गुरूब हुआ लेकिन अल्लाह के वली हमसे पर्दा फ़रमाकर और रौशन हो जाते हैं। सरकारे नूर आज भी हमारे मददगार और ग़मख़्वार हैं जैसे मसनदे नूरिया पर थे, आज भी फ़ैज़ाने मअ़रिफ़त के चिराग़ मज़ारे अक़दस पर रौशन हैं। राक़िम कहता हैः

चलो डूबें नहाएँ और अच्छे सुथरे बन जाएँ
है बह़रे मअ़रिफ़त गिर्दे मज़ारे अह़मदे नूरी

सरकारे नूर के ख़ुलफ़ा की फ़ेहरिस्त अह्ले ख़ानदान के अ़लावा बहुत तवील है। आप आला ह़ज़रत फ़ाज़िले बरेलवी के मुर्शिदे इजाज़त थे और आला ह़ज़रत के लिये अ़क़ीदत का सबसे बड़ा मरकज़। सरकारे नूर ने आला ह़ज़रत को ख़िलाफ़त व इजाज़त सिलसिलए बरकातिया में इनायत फ़रमाई, आपने आला ह़ज़रत को इल्मे जुफ़र की तालीम भी अ़ता फ़रमाई। आला ह़ज़रत फ़ाज़िले बरेलवी के साह़बज़ादे मुफ़्ती–ए–आज़म अ़लैहिर्रह़मा की विलादत की बशारत आला ह़ज़रत को

मारहरा शरीफ़ में देते हुए फ़रमाया ''मौलाना आपके यहाँ साहबज़ादे की विलादत हुई है, मैं उसका नाम आले रहमान अबुल बरकात मुहिय्युद्दीन जीलानी मुस्तफ़ा रज़ा रखता हूँ'' फिर सरकारे नूर बरेली शरीफ़ तशरीफ़ ले गए अपनी उँगली मुँह में डालकर शरीअ़त व तरीक़त के सारे ख़ज़ाने मुफ़्ती–ए–आज़म के मुँह में डाल दिये, मुरीद किया, ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई। ये सरकारे नूर ही का तो फ़ैज़ था कि बरेली के मुस्तफ़ा रज़ा मुफ़्ती–ए–आज़म हो गए। रूहानियत के ऐसे पैकर हुए कि आज ख़ुश अ़क़ीदा मुसलमानों का एक बड़ा तबक़ा हज़रत मुफ़्ती–ए–आज़म के दस्ते हक़ परस्त का गिरवीदा है।

कुछ और भी मशहूर ख़ुलफ़ा के नाम हम यहाँ पेश कर रहे हैं:

हज़रत सय्यद शाह इस्माईल हसन, हज़रत सय्यद शाह औलादे रसूल मुहम्मद मियाँ क़ादरी, हज़रत क़ाजी गुलाम क़म्बर सिद्दीक़ी बदायूनी, हज़रत क़ाज़ी गुलाम शब्बर सिद्दीक़ी बदायूनी, हज़रत हकीम अ़ब्दुल क़य्यूम शहीद बदायूनी, मजमउ़ल बहरैन हज़रत क़ाज़ी गुलाम हसनैन वग़ैरा रहमतुल्लाह तआ़ला अ़लैहिम अजमईन।

मुजद्दिदे बरकातियत हज़रत सय्यद शाह अबुल क़ासिम इस्माईल हसन उर्फ़ शाह जी मियाँ रहमतुल्लाह अलैह

बक़िय्यतुस्सल्फ़ हुज्जतुल ख़ल्फ़ हज़रत सय्यद शाह अबुल क़ासिम इस्माईल हसन उर्फ़ शाह जी मियाँ की विलादत 3 मुहर्रम 1272 हिजरी को मारहरा मुक़द्दसा में हुई। बैअतो ख़िलाफ़त अपने नाना सय्यद शाह गुलाम मुहिय्युद्दीन अमीर आलम अलैहिर्रहमा से हासिल थी। वालिदे माजिद हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद सादिक़ ने भी अपनी ख़िलाफ़त से नवाज़ा था।

मुजद्दिदे बरकातियत की बिस्मिल्लाह ख़्वानी की रस्म हज़रत ख़ातिमुल अकाबिर सय्यद शाह आले रसूल अहमदी ने अदा फ़रमाई। शुरूआती तालीम वालिदे माजिद के साये में हुई। आपके तमाम उस्ताद अपने वक़्त के बड़े आलिमे दीन और फ़क़ीहे वक़्त थे।

हज़रत ताजुल उल्मा ने आपके उस्तादों के बारे में बयान फ़रमायाः आपने हाफ़िज़ वलीदाद ख़ान साहब मारहरवी व हाफ़िज़ क़ादिर अली साहब लखनवी व हाफ़िज़ अब्दुल करीम साहब मलकपुरी से क़ुरआन शरीफ़ हिफ़्ज़ किया। मौलवी अब्दुश्शकूर साहब, अब्दुल ग़नी साहब, मौलवी मुहम्मद अली साहब लखनवी, मुहम्मद हसन साहब सम्भली, मौलवी फ़ज़्लुल्लाह साहब फ़रंगीमहली, हज़रत ताजुल फ़ुहूल मौलाना अब्दुल क़ादिर साहब बदायूनी

रह़मतुल्लाह तआ़ला अ़लैह से दर्सी उ़लूम पढ़े।

सुलूक व तरीक़त की तालीम ह़ज़रत ख़ातिमुल अकाबिर सय्यद शाह आले रसूल अह़मदी, सरकारे नूर सिराजुस्सालिकीन सय्यद शाह अबुल हुसैन अह़मदे नूरी, अपने वालिदे माजिद और ताजुल फ़ुहूल मौलना अ़ब्दुल क़ादिर बदायूनी रह़मतुल्लाह अ़लैहिम से ह़ासिल फ़रमाई।

कुरआने ह़कीम 30 साल की उ़म्र में अपने ज़ौक़ो शौक़ से ह़िफ़्ज़ किया जिसकी ख़ुशी में आपके वालिदे माजिद ने सीतापुर में मस्जिद तामीर फ़रमाई।

इन फ़नों के अ़लावा ह़ज़रत इस्माईल ह़सन साह़ब इ़ल्मे जफ़र, रमल, तकसीर में भी अपनी नज़ीर (मिस़ाल) आप थे। शेरो सुख़न (शायरी) से भी दिलचस्पी थी। शैदा व बकार तख़ल्लुस था।

ह़ज़रत शाहे क़ासिम बचपन से ही बुज़ुर्गों के नक़्शे क़दम पर गामज़न (चलते) थे। वालिदे माजिद की तरबियत और निगाहे करम ने ज़ाती जौहर को और चमकाया, फिर आने वाले दिनों में ज़माने ने देखा कि यह ख़ानदाने नुबूवत का शाहज़ादा अपने बड़ों की शानदार रिवायतों का पासबान स़ाबित हुआ और जो ख़ानदानी क़दरें ज़माने की मोटी तहों में दब कर रह गई थीं उन्हें ज़िन्दा करके ज़माने के सामने पेश कर दिया।

ह़ज़रत सय्यद शाह अबुल क़ासिम इस्माईल ह़सन शाह जी मियाँ अ़लैहिर्रह़मा सादा तबीअ़त, ह़ौसलामंद, मुख़्लिस और हमदर्द बुज़ुर्ग थे। फ़ितरी बुराई आपको छूकर भी नहीं गुज़री थी, दीन और सुन्नियत पर स़ाबित क़दम रहना, बुज़ुर्गों की रिवायतों का एह़तराम और उनकी ह़िफ़ाज़त, अच्छी सोच, अ़मल की पाबंदी आपकी बुनियादी

ख़ूबियाँ थीं। ताजुल उल्मा के मुताबिक़: ''ह़ज़रत सूरत व सीरत दोनों एतबार से अपने अकाबिर का नमूना और उनकी अच्छी ख़ूबियों और पसंदीदा फ़ज़ाइल के मालिक और वारिस़ थे।''

इल्मपरवरी, मामलात साफ़ रखना, जुरअतमंदी, कुन्बापरवरी और ख़ानदानी रिवायतों को बाद वालों तक पहुँचाने में ख़ुसूसी दिलचस्पी रखते थे। दुनियावी रोब बिल्कुल कुबूल नहीं करते थे। लम्बा क़द, गेहुआ रंग, सुतवाँ बारीक नाक, बारीक लब (होंठ), ख़ूबसूरत छोटे दाँत और कंधा चौड़ा था। तलवार चलाने, घुड़सवारी और तैराकी में माहिर थे। ऐसे बेहतरीन तैराक थे कि बड़े घर के शहतीर सीतापुर से नदियों में तैरा कर लाए थे। यादगारों और तबर्रूकात से ख़ुसूसी दिलचस्पी थी। 1300 हिजरी में बैतुल्लाह के ह़ज से मुशर्रफ़ होकर जब वापस तशरीफ़ लाए तो मदीना तय्यबा से अजवा खजूर का बीज साथ लाए और ह़वेली के सेह़न में लगाया। खजूर का यह मुबारक दरख़्त आज भी घर में मौजूद है जिसकी उ़म्र 126 बरस हो चुकी है।

आपकी ह़ौसला मंदाना ग़ैरत, फ़ितरी शुजाअ़त (बहादुरी) और हमदर्दाना तबीअ़त के चंद वाक़ियात के ह़वाले से ह़ज़रत शर्फ़े मिल्लत फ़रमाते हैं:

ह़ज़रत शाह क़ासिम के ख़ास मुरीद और ख़लीफ़ा डॉक्टर अय्यूब ह़सन क़ादरी अबुल क़ासिमी अ़लैहिर्रह़मा ने ह़ज़रत क़ासिम से एक मर्तबा रोज़गार की तंगी का शिकवा किया। ह़ज़रत ने फ़रमाया: ''आपकी रोज़ाना की ज़रूरतें कितने में पूरी हो जाती हैं? उन्होंने अ़र्ज़ किया: दो रुपये में। यह उस दौर का दो रुपया है जिसकी हैसियत आज

के दो सौ रुपये से ज़्यादा होती थी। हज़रत शाह क़ासिम ने फ़रमायाः जाइये! आपको रोज़ाना अल्लाह की जानिब से ग़ैब से दो रुपये मिलते रहेंगे। डाक्टर अय्यूब ह़सन अ़लैहिर्रह़मा ने अपनी ज़ुबान से ख़ानदान के लोगों से बयान किया कि उसके बाद मुझे हर सुबह तकिये के नीचे दो रुपये मिल जाते। यह वाक़िया ह़ज़रत की करामत और हमदर्दाना शफ़क़त दोनों की आईनादारी करता है।''

ह़ज़रत शाह क़ासिम बहुत मज़बूती के साथ दीनो सुन्नियत और ख़ानदानी मामूलात पर पाबंदी रखते थे, इसलिये अल्लाह तआ़ला ने आपके काम और बात, ईमान और अ़मल, ज़ुबान और क़लम सब में बरकतें दे रखी थीं। आपकी दुआ़ओं से न जाने कितने मरीज़ शिफ़ायाब हुए, बेशुमार मुक़दमों के फ़ैसले हुए, बहुत सी गोदें हरी हुईं, सैकड़ों मुसीबतज़दों ने चैन की साँस ली, हज़ारों गुनाहगारों ने तौबा की, कई एक सिर्फ़ आपके चेहरे को देखकर इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए और बहुतों ने सुलूक की मंज़िलें तय कीं।

इ़ल्मी ज़ौक़ मशाइख़े मारहरा की विरास़त रही है। यही सबब है कि इस ख़ानक़ाहे आ़लीशान में बुज़ुर्गों की दूसरी नादिर व नायाब चीज़ों के साथ साथ एक अ़ज़ीमुश्शान पुराना कुतुबख़ाना भी है। ह़ज़रत शाह क़ासिम को भी इ़ल्मी ज़ौक़ विरस़े में मिला था। आपने न सिर्फ़ यह कि ख़ुद ही उ़लूमो फुनून ह़ासिल किये बल्कि अ़ज़ीज़ों की ख़ासी तादाद को इ़ल्म के ज़ेवर से आरास्ता किया। आपने बुज़ुर्गों के जमा किये हुए नादिर और पुराने कुतुबख़ाने को संभाल संभाल कर रखा और उसे ह़िफ़ाज़त के साथ अगली नस्लों के ह़वाले किया।

हज़रत शाह इस्माईल हसन साहब का वो दौर था कि जब ख़ानक़ाहे बरकातिया की इल्मी शिनाख़्त और ख़ानक़ाही रिवायतों को मज़बूत करने की बेहद ज़रूरत थी। हज़रत शाह क़ासिम ने उस वक़्त बड़े तजदीदी कारनामे अन्जाम दिये। अपने फ़रज़न्दाने गिरामी ख़ासकर अपने नवासों को इल्मे शरीअ़त और तरीक़त में मज़बूत तर किया यहाँ तक कि अपने घर की बेटियों को भी हाफ़िज़ा कराया, ख़ानदानी इल्म को जमा किया, उल्मा व मशाइख़ की रसाई को ख़ानक़ाह में बढ़ाया ग़रज़ कि कोई ऐसा अ़मल नहीं छोड़ा जो ख़ानक़ाह की पुरानी रिवायतों और क़दरों को बहाल न कर दे इसीलिये आज उनको 'मुजद्दिदे बरकातियत' के लक़ब से याद किया जाता है।

हज़रत शाह क़ासिम ने दीन और इल्मे दीन की अच्छी ख़िदमात अंजाम दीं। तदरीस (पढ़ाना), तब्लीग़, तसनीफ़ (किताब लिखना), इरशादो हिदायत (हक़ की रहनुमाई), मख़लूक़ की ख़िदमत सभी मैदान आपकी तवज्जो से सरफ़राज़ रहे। तदरीस का सिलसिला अपने ख़ानक़ाही मदरसे में रहा। तब्लीग़ के लिये दूर दराज़ इलाक़ों में तशरीफ़ ले गए। मसनदे ग़ौसिया बरकातिया से एक आ़लम को क़ादरी बरकाती जाम पिलाए और दुआ़ओं, तावीज़ों और सच्ची सीधी रहनुमाइयों और शफ़ीक़ाना ग़मगुसारियों से ख़ुदा की मख़लूक़ के दर्दो ग़म का इलाज पेश किया। तसनीफ़ी शोहरत से दिलचस्पी नहीं थी फिर भी वक़्ती तक़ाज़ों के पेशे नज़र कई अहम किताबें क़लम के सुपुर्द कीं जो आपकी हक़पसन्दी के जज़्बे और इल्मी गहराई को ज़ाहिर करती हैं। आपकी किताबों के ये नाम हैंः

रिसाला रद्दुल क़ज़ा मिनद्दुआ़ फ़ी आमालि

दफ़इल वबा, मजमूअ़ए सलासिल मन्ज़ूम, मजमूअ़ए कलाम, रिसाला आमालो तकसीर, करामाते सुथरे मियाँ।

हज़रत अबुल क़ासिम सय्यद इस्माईल हसन शाह जी मियाँ रह़मतुल्लाह अ़लैह का अ़क़्दे मसनून (निकाह़) मामूज़ाद बहन सय्यदा मंज़ूर फ़ातिमा बिन्ते सय्यद नूरुल मुस्तफ़ा इब्ने सय्यद गुलाम मुहि़य्युद्दीन अमीर आ़लम के हमराह हुआ। जिनसे दो साह़बज़ादे सय्यद गुलाम मुहि़य्युद्दीन फ़क़ीर आ़लम, ताजुल उल्मा सय्यद औलादे रसूल फ़ख़रे आ़लम मुह़म्मद मियाँ और चार साह़बज़ादियाँ पैदा हुईंः ज़ाहिद फ़ातिमा, एजाज़ फ़ातिमा, हुमैरा और इकराम फ़ातिमा। छोटी साह़बज़ादी इकराम फ़ातिमा शहरबानो हज़रत सय्यदुल उल्मा और हज़रत अह़सनुल उल्मा की वालिदा माजिदा हैं।

बड़े साह़बज़ादे हज़रत सय्यद शाह गुलाम मुहि़य्युद्दीन फ़क़ीर आ़लम साबित ह़सन की विलादत 3 रबीउ़ल आख़िर 1302 हिजरी को मारहरा में हुई। बेहतरीन हाफ़िज़े क़ुरआन थे और ज़बरदस्त आ़लिमे दीन। अपने वालिदे माजिद से बैअ़त (मुरीद) थे। ख़िलाफ़त और इजाज़त वालिदे माजिद और सरकारे नूर सय्यद अबुल हुसैन अह़मदे नूरी रह़मतुल्लाह अ़लैह से ह़ासिल थी। निकाह़ हुआ लेकिन औलाद नहीं थी। 1330 हिजरी को जवानी के आ़लम मे इस रंगारंग दुनिया को लखनऊ में अलविदा कहा।

छोटे साह़बज़ादे ताजुल उल्मा सय्यद शाह औलादे रसूल मुह़म्मद मियाँ फ़ख़रे आ़लम 13 रमज़ानुल मुबारक 1309 हिजरी को सीतापुर में पैदा हुए। इनका ज़िक्र तफ़सील से बयान किया गया है।

साहि़बे उ़र्से क़ासमी ह़ज़रत अबुल क़ासिम सय्यद शाह मुह़म्मद इस्माईल ह़सन क़ासिमी बरकाती का विसाल 1 सफ़र 1347 हिजरी को मारहरा शरीफ़ में हुआ। आपने अपनी ह़याते ज़ाहिरी में ही अपने ह़क़ीक़ी नवासे ह़ज़रत अह़सनुल उल्मा अ़लैहिर्रह़मा को अपनी ज़ात का सज्जादानशीन फ़रमाकर अपनी मस्नद का जाँनशीन बनाया। आज अल–ह़म्दु लिल्लाह उस मस्नद पर ह़ज़रत अमीने मिल्लत जलवा अफ़रोज़ और उ़र्से क़ासिमी की रौनक़ उनके दम से दो चन्द है।

आपके ख़ुलफ़ा में ह़ज़रत सय्यद शाह गुलाम मुहि़य्युद्दीन फ़क़ीर आ़लम, ह़ज़रत सय्यद शाह औलादे रसूल मुह़म्मद मियाँ, ह़ज़रत सय्यद शाह आले मुस्तफ़ा सय्यद मियाँ और अह़सनुल उल्मा ह़ज़रत सय्यद शाह मुस्तफ़ा हैदर ह़सन मियाँ साह़ब वग़ैरा हैं।

नबिए ख़ातिमुल अकाबिर ह़ज़रत सय्यद शाह मेंहदी ह़सन रह़मतुल्लाह अ़लैह

ह़ज़रत सय्यद शाह मेंहदी ह़सन साह़ब ह़ज़रत ख़ातिमुल अकाबिर के दूसरे साह़बज़ादे शाह ज़ुहूर हुसैन छुट्टू मियाँ साह़ब की दूसरी बीवी ख़ातून फ़ातिमा से थे। आपकी पैदाइश जुमादल अव्वल 1287 हिजरी की है। अपने वालिदे माजिद के इन्तिक़ाल के बाद सज्जादानशीन हुए। बादशाहों का सा मिज़ाज पाया था। तबीअ़त में सादगी कूट कूटकर थी। अपनी ज़िन्दादिली के लिये दूर दूर तक मशहूर थे। फ़य्याज़ी व सख़ावत में बेनज़ीर थे। तबीअ़त में जज़्ब ग़ालिब था।

ह़ज़रत मेंहदी मियाँ साह़ब के दौर में ख़ानक़ाहे बरकातिया का राब्ता अ़वाम से बहुत बड़े पैमाने पर वसी हुआ। बड़े बड़े अमीर व नवाब मारहरा की ड्योढ़ी पर ह़ज़रत शाह मेंहदी ह़सन साह़ब के तवस्सुत से ह़ाज़िर होने लगे। ह़ज़रत मेंहदी मियाँ साह़ब के तअ़ल्लुक़ात के पेशे नज़र उ़र्स शरीफ़ साहिबुल बरकात में दिन ब दिन इज़ाफ़ा होता गया। ऐसे आला पैमाने पर उ़र्स मुन्अ़क़िद करते कि उसका कहना ही क्या। मह़फ़िले क़व्वाली का रवाज उस दौर में बहुत बड़े पैमाने पर क़ायम हुआ। कस़ीर मजमा उ़र्स में शिरकत करता। अह्ले बदायूँ पर सरकार मेंहदी

मियाँ की ख़ास नज़र थी। सरकार नूरी मियाँ के तमाम अ़क़ीदतमंद ह़ज़रात हुज़ूर मियाँ साह़ब के विसाल के बाद ह़ज़रत मेंहदी मियाँ को अपना मरकज़े अ़क़ीदत मानते थे। ह़ज़रत बदायूँ तशरीफ़ भी ख़ूब लाते और बदायूनी गुलामों को ख़ूब नवाज़ते। अपने साथ तोह़फ़े तह़ाइफ़ बदायूँ से ले जा रहे होते, रास्ते में कोई ग़रीब दिखता तो बस उसका मामूली खाना खा लिया करते और अपना क़ीमती सामान उसको अ़ता फ़रमा देते। विसाल से क़ब्ल बदायूँ तशरीफ़ लाए और कसीर तादाद में लोगों को मुरीद किया। राक़िम के ख़ानदान के बेशतर ह़ज़रात उस दौर में ह़ज़रत मेंहदी मियाँ साह़ब से मुरीद हुए। मेरे वालिदे माजिद को भी सरकार मेंहदी मियाँ ने बहुत ही कमउ़म्री में बैअ़त से मुशर्रफ़ फ़रमाया। आपने अपनी ज़िन्दगी ही में सय्यदुल उल्मा ह़ज़रत सय्यद शाह आले मुस्तफ़ा सय्यद मियाँ रह़मतुल्लाह अ़लैह को अपना वसी व जाँनशीन मुक़र्रर कर दिया था।

आपका पहला निकाह़ बुनियादी बेग़म बिन्ते सय्यद हुसैन इब्ने सय्यद दिलदार ह़ैदर से हुआ। कोई औलाद इन बीबी से न हुई। दूसरा निकाह़ सज्जादी बेगम बिन्ते सय्यद इसमाईल ह़सन साह़ब से हुआ। इनसे कई औलादें हुईं मगर कमउ़म्री में इन्तिक़ाल कर गईं।

ह़ज़रत शाह मेंहदी साह़ब का इन्तक़ाल नवम्बर 18 ज़ीक़ादा 1361 हिजरी/1942 ई0 की रात को हुआ। आपके विसाल के बाद वसीयत के मुताबिक़ सय्यदुल उ़लमा सय्यद शाह आले मुस्तफ़ा सय्यद मियाँ उनकी मसनद पर बैठे।

ताजुल उल्मा, सिराजुल उ़रफ़ा
ह़ज़रत सय्यद शाह औलादे रसूल
मुह़म्मद मियाँ क़ादरी रह़मतुल्लाह अ़लैह

मुअर्रिख़े ख़ानदाने बरकात ताजुल उल्मा सिराजुल उ़रफ़ा ह़ज़रत सय्यद शाह औलादे रसूल मुह़म्मद मियाँ क़ादरी रह़मतुल्लाह अ़लैह मुजद्दिदे बरकातियत ह़ज़रत सय्यद शाह इस्माईल ह़सन साह़ब के फ़रज़न्द हैं। ह़ज़रत ताजुल उल्मा अ़लैहिर्रह़मा 23 रमज़ान 1309 हिजरी में सीतापुर में पैदा हुए। कुरआन, ह़दीस़, तफ़सीर, मन्तिक़, फ़ल्सफ़ा, फ़िक़्ह व उसूले फ़िक़्ह, सर्फ़ व नह़्व की तालीम अपने वालिदे माजिद ह़ज़रत सय्यद शाह इसमाईल हसन साह़ब, ह़ज़रत मौलाना शाह अ़ब्दुल मुक़्तदिर बदायूनी अ़लैहिर्रह़मा के अ़लावा उस दौर के बड़े उल्मा से ह़ासिल की। आपको बैअ़तो ख़िलाफ़त अपने वालिदे माजिद और अपने नाना साह़ब ह़ज़रत सय्यद शाह अबुल हुसैन अह़मदे नूरी रह़मतुल्लाह अ़लैह से है।

ह़ज़रत ताजुल उल्मा की शक्ल ह़ज़रत नूरी मियाँ साह़ब से बहुत मिलती थी। ह़ज़रत ताजुल उल्मा बेहतरीन आ़लिमे दीन, मुफ़्ती, मुह़द्दिस़, मुफ़स्सिर थे। आपको किताबें पढ़ने का बहुत शौक़ था। याददाश्त इतनी अच्छी थी कि जो पढ़ते फ़ौरन याद हो जाता। ह़ज़रत ताजुल उल्मा का दीन पर मज़बूती से क़ाएम रहना, शरीअ़त के

उसूलों पर पाबन्द होना और अपने चाहने वालों को भी उस रास्ते पर चलने की हिदायत देना एक क़ाबिले तक़लीद अ़मल है।

हज़रत ताजुल उल्मा की पूरी ज़िन्दगी नज़्मो ज़ब्त से इबारत थी। सफ़र में ज़रूरी सामान का हमेशा साथ रखना, हर काम को वक़्त पर पाबन्दी के साथ ख़ुद करना, अपनी हर चीज़ को ख़ुद ही अपनी निगरानी में रखना, किसी को ज़हमत न देना यह सब आपकी ख़ुसूसियात हैं।

एक मर्तबा हज़रत के मुरीदे ख़ास मौलाना मज़हर साहब बदायूनी मरहूम ने हज़रत को पंखा करना चाहा तो फरमाया कि आइन्दा बिना इजाज़त ऐसा न करना, कुदरत ने हमें दो हाथ अपना काम करने को अ़ता फ़रमाए। हज़रते वाला की एक ख़ास आ़दत थी न किसी की बुराई सुनते न करते, कोई ग़ीबत करता तो उसको फ़ौरन मना करते।

हज़रत ताजुल उल्मा एक ऐसे मेहरबान मुर्शिद थे जो अपने अहबाब की बेकसी और परेशानी में बहुत मददगार और फ़रियाद सुनकर फ़ौरन हाजत रवाई फ़रमाते। आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी से आपके तअ़ल्लुक़ात बहुत गहरे और मुहब्बत वाले थे हालाँकि आला हज़रत उ़म्र में ताजुल उल्मा से बहुत बड़े थे लेकिन पीरज़ादगी की निस्बत से फ़ाज़िले बरेलवी हज़रत ताजुल उल्मा का बहुत एहतेराम फ़रमाते, आला हज़रत आपको ''वारिसुल अकाबिरिल असयाद बिल इस्तिहक़ाक़ वल इन्फ़िराद'' जैसे अल्क़ाब से मुख़ातब करते और ताजुल उल्मा तो उन पर उनकी दीनी ख़िदमात की वजह से जान निसार करते। ताजुल उल्मा फ़रमाते थे कि फ़क़ीर उनको अपने बेशतर उस्तादों से बेहतर मानता है, उनकी तहरीर

और तक़रीर दोनों ही से फ़क़ीर ने तालिबे इल्म की तरह फ़ाइदा उठाया है। लिहाज़ा फ़क़ीर अपनी वुसअ़त के मुताबिक़ उनके तरीक़े की पैरवी करता है।

हज़रत ताजुल उल्मा का सबसे बड़ा कारनामा सय्यदैने मारहरा यानी हज़रत सय्यदुल उल्मा और हज़रत अहसनुल उल्मा की तरबियत है जिसकी वजह से आज ख़ानदाने बरकात का नाम तमाम दुनिया में रौशन है। हज़रत ताजुल उल्मा ने अपने दौर में ख़ानक़ाह शरीफ़ के पूरे निज़ाम में अपनी मेहनत और पुरख़ुलूस अ़मल के ज़रिये बेमिस़ाल तब्दीलियाँ कीं। शरीअ़त और तरीक़त दोनों को नाफ़िज़ किया, अपने सारे घराने को इल्मे दीन के हवाले से मज़बूत किया, ख़ानक़ाही निज़ाम को अपने इल्म, अ़मल, अख़लाक़, ख़ुलूस, किरदार से मज़बूती बख़्शी यही नहीं बल्कि ख़ानक़ाह के मिशन को मज़बूत से मज़बूत तर करने में अपनी पूरी ज़िन्दगी वक़्फ़ कर दी।

तक़सीमे हिन्द के मौक़े पर जब हिन्दुस्तान के मुसलमान मुसीबत के हालात से गुज़र रहे थे, ख़ानक़ाहों, मदरसों, दरगाहों, मस्जिदों के तहफ़्फ़ुज़ का सवाल खड़ा था, साथ ही साथ मुसलमानों के माली हालात भी बद से बदतर हो रहे थे ऐसे में ख़ानक़ाहे बरकातिया ने हुज़ूर ताजुल उल्मा की निगरानी में ''जमाअ़ते अहले सुन्नत'' नामी तन्ज़ीम का प्लेटफ़ार्म सुन्नी मुसलमानों को दिया जिसके मुबल्लिग़ों ने अपनी तमाम ताक़त दीने इस्लाम के पैग़ाम को सही तौर से पहुँचाने में लगा दी। शुध्दि तहरीक के ख़िलाफ़ काम करके मुसलमानों के ईमान की हिफ़ाज़त की गई। हज़रत ताजुल उल्मा ने न सिर्फ़ मैदाने अ़मल में फ़तह के परचम लहराए बल्कि इल्मी तौर से भी बेदार

करने और उस वक़्त के ह़ालात से आगाह करने के लिये ''अह्ले सुन्नत की आवाज़'' नाम का रिसाला अपनी सरपरस्ती और सय्यदैने मारहरा की इदारत में निकाला। यही वह रिसाला था जो अह्ले सुन्नत व जमाअ़त को उस बिगड़े दौर में शरीअ़त के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने और हर फ़साद से दूर रहने की हिदायत दे रहा था, औलिया–ए–किराम की मुह़ब्बत और अ़क़ीदे की हिफ़ाज़त का ज़िम्मेदार था। आज भी यह सालाना रिसाला इ़ल्मो आगही के जाम लोगों को बदस्तूर पिला रहा है।

ह़ज़रत ताजुल उल्मा ने अपनी तमाम दीनी, दुनियावी, ख़ानक़ाही ज़िम्मेदारियों के बावुजूद क़ौमी, सियासी, समाजी मामलात में ख़ानक़ाहे बरकातिया के नज़रिये को लोगों तक पहुँचाया। जंगे आज़ादी हो या तर्के मवालात, ख़िलाफ़त मूवमेंट हो या इस्लामी क़ौम का बिगड़ते हुए दौर में अ़वाम को जगाने का काम हो, ह़ज़रत ताजुल उल्मा ने अपनी मुख़लिस ख़िदमात अंजाम दीं। जब बर्रे सग़ीर के मुसलमान उस दौर में जोश, जज़्बात और अंजाम को सोचे समझे बिना सियासत में आगे आगे रहने की नाकाम कोशिश कर रहे थे ऐसे में हुज़ूर ताजुल उल्मा अ़लैहिर्रह़मा जमाअ़ते अन्सारूल इस्लाम, जमाअ़ते रज़ा–ए–मुस्तफ़ा जैसी तन्ज़ीमों की सरपरस्ती फ़रमा कर क़ौम को राहे हिदायत पर चला रहे थे।

हजरत ताजुल उल्मा की तसनीफ़ी कामों का दायरा बहुत बड़ा है। आपने मज़हबी, अदबी और सियासी मौज़ूआ़त पर बड़ी फ़ायदेमंद किताबें अह्ले इस्लाम को अ़ता फ़रमाईं। ''अल–क़ौलुस्सह़ीह़ फ़ी इम्तिनाइ़ल किज़्बिल वक़ीअ़'' यह बद अ़क़ीदों के इम्काने किज़्बे बारी तआ़ला के

रद्द में, ''रिसाला मुख़्तसर दर असबाबे वाजिबुल वुजूद'', मबह़सुल अज़ान, नमाज़ पढ़ने और पढ़ाने का तरीक़ा, ख़ैरूल कलाम फ़ी मसाइलिस्सियाम, तफ़हीमुल मसाइल, सबए सनाबिल का तर्जुमा, तज़किरा ह़ज़रत फ़क़ीर आ़लम, शौकते इस्लाम, गाँधियों का आमाल नामा, रिसाला दर मुग़ालताते गाँधविया, तह़क़ीक़ाते शरइय्यद दर रद्दे ख़बास़ते गाँधविया, ह़क़ की फ़त्हे मुबीन, फ़ितन—ए—इरतिदाद और हिन्दू मुस्लिम इत्तिह़ाद, कुरआनी इरशाद और हिन्दू मुस्लिम इत्तिह़ाद, बरकाते मारहरा व मेहमानाने बदायूँ, इन्सिदादे कुरबानी गाय के मुतअ़ल्लिक़ मुस्लिम लीग का Resolution और मज़हबी नुक़्तए नज़र से तन्क़ीद, ख़ुतब—ए—सदारत जमाअ़त अन्सारूल इस्लाम वग़ैरा आपकी क़लमी यादगार हैं।

आपका निकाह़ मन्ज़ूर फ़ातिमा अ़लैहर्रह़मा से नौ मह़ले सादात बरेली में हुआ। इनसे एक साह़बज़ादे हुए जिनका बचपन ही में विसाल हो गया।

आपका विसाल 24 जुमादल आख़िर 1375 हिजरी/7 फ़रवरी 1952 ई0 बाद नमाज़े इशा मारहरा शरीफ़ में हुआ। मज़ारे मुबारक दरगाहे बरकातिया के सहन में अपने वालिदे माजिद के क़रीब है। आपने अपनी ह़यात ही में अपने ह़क़ीक़ी भाँजे हुज़ूर अह़सनुल उल्मा को अपना जानशीन मुक़र्रर फ़रमाकर सज्जादानशीन मुन्तख़ब फ़रमाया।

सय्यदुल उ़लमा, सनादुल हुकमा ह़ज़रत सय्यद शाह आले मुस्तफ़ा सय्यद मियाँ रह़मतुल्लाह अ़लैह

सय्यदुल उल्मा ह़ज़रत मौलाना मौलवी ह़ाफ़िज़ क़ारी मुफ़्ती ह़कीम सय्यद शाह आले मुस्तफ़ा औलादे ह़ैदर सय्यद मियाँ अ़लैहिर्रह़मा ह़ज़रत शाह आले अ़बा इब्ने सय्यद शाह हुसैन ह़ैदर हुसैनी मियाँ (हुज़ूर ख़ातिमुल अकाबिर शाह आले रसूल के नवासे) के साह़बज़ादे थे। वालिदा माजिदा सय्यदा शहर बानो बेगम बिन्ते सय्यद शाह इस्माईल ह़सन साह़ब थीं। आप 25 रजब 1333 हिजरी/9 जून 1915 ई0 बुध के रोज़ मारहरा में पैदा हुए। बहुत छोटी सी उ़म्र में कुरआन ह़िफ़्ज़ कर लिया, फ़ारसी की पहली किताब अपनी वालिदा माजिदा से पढ़ी, नाना ह़ज़रत शाह इस्माई़ल ह़सन साह़ब और मामू ताजुल उल्मा ह़ज़रत सय्यद शाह औलादे रसूल मुह़म्मद मियाँ साह़ब से दर्सी इ़ल्म ह़ासिल किये। जामिया मुई़निया अजमेर मुक़द्दस में हुज़ूर सदरूश्शरीअ़ा मौलाना शाह अमजद अ़ली आज़मी अ़लैहिर्रह़मा के बहुत ही चहीते शागिर्दों में से थे। उस्तादे मोह़तरम की ख़ास इजाज़त थी कि मदरसा के वक़्तों के अ़लावा भी जब चाहें सबक़ ले सकते हैं। मौलवी दीनियात में एम. ए. के बराबर डिग्री की सनद पंजाब बोर्ड से ह़ासिल की। तिब्बिया कॉलिज अ़लीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से तिब्बे यूनानी में डी. आई. एम. एस. का

डिप्लोमा लिया। आप ह़कीम अ़ब्दुल लतीफ़ के चहेते शागिर्दों में शुमार होते थे। 1949 ई0 में मुम्बई तशरीफ़ ले गए और इमामत शुरू कर दी। खड़क मस्जिद के ख़तीब व इमाम और जमाअ़ते बक़र क़साब के रजिस्टर्ड क़ाज़ी थे। अपने नानाजान सरवरे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह व सल्लम के दीन की तब्लीग़ के लिये अपना सब कुछ वक़्फ़ फ़रमा दिया था। दीन की तब्लीग़, अह्ले सुन्नत के अ़क़ाइद की इशाअ़त और बातिल फ़िर्क़ों के रद्द के सिलसिले में मुल्क भर का दौरा किया और ज़माने को सिराते मुस्तक़ीम पर चलने की हिदायत फ़रमाई।

हुज़ूर सय्यदुल उल्मा जय्यद आ़लिमे दीन, मुस्तनद मुफ़्ती, ख़ुश इलह़ान ह़ाफ़िज़ व क़ारी, ह़कीमे ह़ाज़िक़, मुम्ताज़ मुनाज़िर और अपने वक़्त के ख़तीबे आज़म थे। हुज़ूर सय्यदुल उल्मा की ख़िताबत का डंका पूरे हिन्दुस्तान में बजता था। एक ही नशिस्त में चार पाँच घण्टा ख़िताब फ़रमा देना तो उनके लिये आ़म बात थी। वह अपने उसलूबे ख़िताब के लिये बहुत मशहूर थे। जब इस्लामी तारीख़ या वाक़िये को बयान फ़रमाते तो ऐसा लगता कि क्लास बैठी है और एक बेहतरीन उस्ताद अपने बच्चों के दिलो दिमाग़ पर तारीख़े इस्लाम को रक़म कर रहा है। जब सियासी मौज़ू पर तक़रीर फ़रमाते तो बड़े बड़े सियासी ख़तीबों और रहनुमाओं की बोलियाँ बन्द हो जातीं। जब इश्क़े रसूल और करबला के वाक़ियात के मौज़ू पर सय्यदुल उल्मा बयान फ़रमाते तो स़ाबित कर देते कि नबीज़ादा और अ़ली का जानशीन नामूसे रिसालत और अह्ले बैत की मिदह़त में शमशीरे बरेहना बन गया है। उ़र्से क़ासिमी बरकाती की सज्जादगी की रात नाना अब्बा हुज़ूर

सय्यदुल उल्मा की तक़रीर के लिये ख़ास हुआ करती थी। ख़ानदाने बरकात की अ़ज़मत व रूहानियत पर उनके यादगार ख़िताबात हुआ करते थे। एक मर्तबा किसी नात पढ़ने वाले ने शेर पढ़ाः

अ़मल से अ़ली के यह स़ाबित हुआ
कि अस्ले इ़बादत तेरी बन्दगी है

बस! फिर क्या अ़ली का ख़ून जोश में आ गया, वज्द की कैफ़ियत तारी हुई, तमाम कपड़े तार तार कर लिये। ह़ज़रत अह़सनुल उल्मा अ़लैहिर्रह़मा ने अपने बड़े भाई साह़ब के ह़ालात को पढ़ लिया और हाथ पकड़ कर हुज़ूर शम्से मारहरा के रौज़े में थोड़ी देर को तन्हा छोड़ आए, जब ह़ालात ठीक हुए तो नाना अब्बा बाहर तशरीफ़ लाए और उसी शेर के पसे मन्ज़र में देर रात तक ख़िताब फ़रमाया।

मुम्बई की सरज़मीन पर आज जो सुन्नियत की बहारें हैं वह अल्लाह के फ़ज़्ल से हुज़ूर सय्यदुल उल्मा की ज़ाते मुबारक की वजह से हैं। मुम्बई का जुलूसे मुह़म्मदी हो या जुलूसे ग़ौस़िया, मुह़र्रम की मजलिस हो, मुम्बई में slaughter house में ज़ब्ह शरई़ का मसला हो सब के सब हुज़ूर सय्यदुल उल्मा की कोशिशों का नतीजा हैं। मुह़र्रम की महफ़िलों को जिस नज़्मो ज़ब्त के साथ उन्होंने तरतीब दिया था वह क़ाबिले दादो तह़सीन है। पूरे हिन्दुस्तान से उ़लमा–ए–दीन को बुलवाते, बम्बई की मुस्लिम बस्तियों में अंजुमनें तैयार कराते, फिर उल्मा को ख़िताब के लिये मुक़र्रर फ़रमाते, फिर आख़िर के दिनों में उल्मा और अ़वाम को भिंडी बाजार में इकट्ठा करके वाक़ियाते करबला का इख़्तितामी जलसा मुन्अ़क़िद करते। शहादते इमामे हुसैन

पर उनके ख़िताब सुनने के लिये ग़ैर मसलक के लोग भी जमा हो जाते, वह जानते थे कि घर की बात घर वाले ही सही बताएँगे।

हुज़ूर सय्यदुल उल्मा अ़लैहिर्रह़मा अपनी तन्ज़ीमी और क़ाइदाना सलाहियतों के ह़वाले से अपनी ज़ात के ह़वाले से उस दौर में तन्हा नज़र आते हैं। यह वह दौर था कि जब ह़ज़रत मुफ़्ती–ए–आज़मे हिन्द, ह़ज़रत अ़ल्लामा शाह अ़ब्दुल क़दीर साह़ब बदायूनी (मुफ़्ती–ए–आज़म, हैदराबाद) ह़ज़रत मुह़द्दिसे़ आज़मे हिन्द कछौछवी, ह़ज़रत ह़ाफ़िज़े मिल्लत, ह़ज़रत मह़बूबे मिल्लत, ह़ज़रत मुजाहिदे मिल्लत जैसे जय्यद उल्मा और मशाइख़ जमाअ़ते अह्ले सुन्नत में मौजूद थे। ऐसे में हुज़ूर सय्यदुल उल्मा ने बदअ़क़ीदगी के ख़िलाफ़ जंग का एलान किया और अपने मज़हब व मसलक की ह़क़्क़ानियत को तसलीम कराने का बीड़ा उठाया और एक ऐसा platform दिया जहाँ से मिल्लत की क़यादत और भरपूर रहनुमाई हुई। ह़ज़रत को इन तमाम उल्मा और मशाइख़ ने मुत्तफ़िक़ होकर सय्यदुल उल्मा को सदर माना। आप आख़िरी साँस तक सुन्नी जमीअ़तुल उल्मा के सदर रहे, पूरे मुल्क में घरबार छोड़कर मिल्लत और सुन्नियत के लिये काम करते रहे।

एक मर्तबा हुज़ूर सय्यदुल उल्मा तनज़ीम के कुछ लोगों के रवैये से नाराज़ हुए और इस्तीफ़ा दे दिया। आपके इस्तीफ़ा का सुनकर बरेली से ह़ज़रत मुफ़्ती–ए–आज़म मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ साह़ब अ़लैहिर्रह़मा मुम्बई तशरीफ़ ले गए और मस्जिद खड़क में जाकर हुज़ूर सय्यदुल उल्मा के क़दमों में अपना इमामा

रखकर इरशाद फ़रमाया कि ''सय्यद मियाँ! यह अ़मामा तब तक क़दमों में रहेगा जब तक इस्तीफ़ा वापस न होगा।'' हुज़ूर सय्यदुल उल्मा क़ौम के उन बेबाक और मुख़्लिस लीडरों में से थे जो हुकूमत और स़रवत को अपनी ठोकरों में रखते थे। हज़रत शर्फ़े मिल्लत ने उनकी सीरत की बड़ी सच्ची तर्जमानी अपने इस शेर में फ़रमाईः

दिरहमो दीनार में रग़बत उन्हें थी ही नहीं
उस फ़क़ीरे बेरिया की दिल की दौलत और थी

कोई हाकिम हो, कोई वज़ीर या कोई हुकूमत का नुमाइंदा, नक़ीबे बरकातियत सय्यदुल उल्मा उससे आँख में आँख डालकर बात करते और क़ौम के लिये जाइज़ मुतालबा फ़रमाते।

आपके अन्दर तह़रीरो तसनीफ़ की बेपनाह सलाहियतें थीं लेकिन तब्लीग़ी और तन्ज़ीमी कामों ने वक़्त न दिया लेकिन जो भी लिखा वह ऐसा जो अह्ले इल्म को उनकी आ़लिमाना और अदीबाना शान का मोतरिफ़ कराता है। फैज तम्बीह, नई रौशनी, मुक़द्दस ख़ातून, ख़ुत्ब–ए–सदारत आपकी क़लमी और फ़िक्री यादगार हैं।

हज़रत सय्यदुल उल्मा एक बुलन्द मर्तबा शायर थे। शायरी में आपके उस्ताद हज़रत अह़सन मारहरवी थे, हज़रत अह़सन मारहरवी दाग़ देह्लवी के शागिर्द थे। आपका तख़ल्लुस सय्यद मारहरवी था। मशहूर सह़ाफ़ी जलालत अ़ली मेहदी ने सय्यदुल उल्मा के इस शेर पर कहा कि इनका यह शेर कई बड़े शायरों के कलाम पर भारी है। वह शेर यह हैः

''जमाले लैल–ए–महमल न था इतना गिराँ माया
कि बाज़ी इस पे लगती क़ैस के टूटे हुए दिल की।''

हजरत सय्यदुल उल्मा के यह शेर भी मुलाहज़ा होः
''माँग लेते है ं कभी सोज़ने मिशगाँ उनसे
डालकर तारे निगाह ज़ख़्म सिया करते हैं।''

और जब नात और मन्क़बत के मैदान की तरफ़ फ़रमाते हैं तो ईमान और अ़क़ीदे के फूल उनके चाहने वालों के दिल में खिल उठते हैं। फ़रमाते हैंः

किसी की जय विजय हम क्यों पुकारें क्या ग़रज़ हम को
हमें काफ़ी है सय्यद अपना नारा या रसूलल्लाह!

'मेरी जाँ पे क़ब्ज़ा है अच्छे मियाँ का
मेरे दिल के मुख़तार नूरी मियाँ हैं
है ख़ाके मदीना दवा हर मरज़ की
मुझे इसमें बूए शिफ़ा आ रही है।'

हज़रत सय्यदुल उल्मा सय्यद शाह आले मुस्तफ़ा सय्यद मियाँ को उनके नानाजान सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने दीन की तब्लीग़ का यह इनाम अ़ता फ़रमाया कि जब आप हज को तशरीफ़ ले गए तो 33 दिन अपने आक़ा के रौज़े पर रात दिन हाज़िर रहे, बारगाहे रिसालत में दुआए सैफ़ी बशर्ते कबीर पढ़ी। हुज़ूर अहसनुल उल्मा ने अपने इस शेर में इसका इज़हार फरमायाः

पढ़ी हिर्ज़े यमानी बैठकर तैंतीस दिन आक़ा के रौज़े पर
अदा करके यह अपने शेख़ की सुन्नत को आए हैं

उनके शेख़ और नानाजान मुजद्दिदे बरकातियत भी सरकार के रौज़े पर यह अ़मल पढ़कर आए थे।

सय्यदुल उल्मा मज़हब व मसलक की हिफ़ाज़त के हवाले से बहुत सख़्त रवैया रखते, उन्होंने रहती ज़िन्दगी तक कोई Compromise दीन व सुन्नियत से नहीं किया।

जब उनके बेटे हज़रत नज़्मी मियाँ जामिया मिल्लिया में तालीम हासिल कर रहे थे तब सय्यदुल उल्मा ने उनको एक ख़त के ज़रिये जो नसीहत और तब्लीग़ की उसको देखकर यह अन्दाज़ा होता है कि वह बरकातियों यह लिये ईमानी नुस्ख़ा है।

''दीन व मज़हब के मामले में मैंने तुम्हें पुख़्ता कर दिया है, तुमने बरसों मेरे साथ रह कर तब्लीग़ी, दीनी, मज़हबी उतार चढ़ाव देखे हैं, वह अ़क़ाइद व उसूल जो ख़ानकाहे बरकातिया के बुज़ुर्गों से मुझे अमानत में मिले मैंने तुम्हारे हौसले और ज़रूरत के लाएक़ अच्छी तरह तुम्हें बता दिये। इस मामले में सुनो सब की और रहो अपने घर की तालीम पर। यह सब इसलिये लिख रहा हूँ कि तुम पहली बार घर से बाहर निकले हो और बाहर तरह तरह की आबो हवा है मगर तुम अपनी ख़ानक़ाही तरबियत हरगिज़ न भुलाना। तुम्हें अच्छी तरह पता है कि तुमको हमने यह तरबियत दी है कि दीनो मज़हब के मामले में किसी रिश्ते की कोई अहमियत नहीं, अस्ल रिश्ता अपने आक़ा मदनी ताजदार की गुलामी का है। बदन का कोई हिस्सा अगर सड़ जाए तो मैं काटकर कचरेदान में डाल दूँगा और यह न सोचूँगा कि ख़ुदा न ख़्वास्ता वह मेरा इकलौता बेटा है। बस! इससे ज़्यादा कुछ नहीं कहना है।''

हुज़ूर सय्यदुल उल्मा का यह ख़त सिर्फ़ एक बेटे को बाप का ख़त नहीं बल्कि तमाम चाहने वालों और सिलसिले वालों के लिये भी तरबियत का सुनहरा बाब है जो हर शख़्स की रहनुमाई करेगा।

आख़िर उम्र में नेपाल तशरीफ़ ले गए जहाँ बहुत से ख़ानदान सिलसिलए आ़लिया क़ादिरीया बरकातिया में

दाख़िल हुए। कई लोग आपके हाथ पर इस्लाम लाए। आपको ख़ानवाद—ए—बरकातिया मारहरा मुतह्हरा के क़दीम व जदीद तमाम सिलसिलों के साथ तमाम ज़िक्र, विर्द, अशग़ाल और कुरआने मजीद की क़िरत और ह़दीस़ की रिवायत की सनदों और ख़ानदानी मामूलात की दुआ़ओं की इजाज़त और बैअ़तो ख़िलाफ़त अपने नाना ह़ज़रत शाह इस्माईल ह़सन साह़ब से थी। हुज़ूर ताजुल उल्मा से भी ख़िलाफ़त ह़ासिल थी। इनके अ़लावा सय्यद शाह मेंहदी ह़सन साह़ब और ह़ज़रत शाह इर्तिज़ा हुसैन पीर मियाँ साह़ब ने भी ख़िलाफ़त व इजाज़त देकर अपना वसी और जानशीन फ़रमाया।

10, 11 जुमादल उख़रा 1394 हिजरी की दरमियानी रात 11 बजकर 40 मिनट पर हर्ट अटैक की वजह से इस ख़त्म हो जाने वाली दुनिया से हमेशा बाक़ी रहने वाले जहाँ की तरफ़ कूच फ़रमाया। मारहरा मुतह्हरा में अपने नाना और मुर्शिद ह़ज़रत शाह मुह़म्मद इस्माईल ह़सन साह़ब के रौज़े में दफ़्न हुए।

हुज़ूर सय्यदुल उल्मा के ख़ुलफ़ा की फ़ेहरिस्त बड़ी तवील है। यहाँ कुछ ख़ुलफ़ा—ए—किराम का ज़िक्र किया जाता है:

सय्यद शाह आले रसूल ह़सनैन मियाँ नज़्मी, शर्फ़े मिल्लत ह़ज़रत सय्यद मुह़म्मद अशरफ़, ह़ज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती अख़तर रज़ा ख़ान अज़हरी, ह़ज़रत मौलाना सूफ़ी सख़ावत अ़ली, ह़ज़रत मौलाना गुलाम अ़ब्दुल क़ादिर अ़लवी, बराऊँ शरीफ़, ह़ज़रत मौलाना गुलाम अ़ब्दुल क़ादिर खत्री।

अह़सनुल उल्मा, सिराजुल असफ़िया ह़ज़रत सय्यद शाह मुस्तफ़ा ह़ैदर ह़सन मियाँ क़ादरी रह़मतुल्लाह अ़लैह

ह़ज़रत शर्फ़े मिल्लत अपने वालिदे माजिद हुज़ूर अह़सनुल उ़ल्मा अ़लैहिर्रह़मा की विलादते मुबारक के बारे में बड़े ही दिलनशीं अन्दाज़ में फ़रमाते हैं:

''आपकी पैदाइश 1345 हिजरी में ह़ज़रत सय्यद शाह आले अ़बा मारहरवी के यहाँ हुई। पैदाइश के वक़्त आप सर से पैर तक एक क़ुदरती ग़िलाफ़ में लिपटे हुए थे और उस ग़िलाफ़ के ऊपरी ह़िस्से पर ताज की शक्ल बनी हुई थी, दाई ने ज़मीन पर हाथ मारकर अपने लाख का कड़ा तोड़ा और उसकी नोक से ग़िलाफ़ को काटा।'' और ग़िलाफ़ से ह़ज़रत अह़सनुल उल्मा अपने नूरानी वुजूद के साथ दुनिया में तशरीफ़ लाए।

आपको बैअ़तो ख़िलाफ़त अपने नाना मुजद्दिदे बरकातियत ह़ज़रत सय्यद शाह इसमाईल ह़सन क़ादरी बरकाती से थी। आपके ह़क़ीक़ी मामू ह़ज़रत ताजुल उल्मा अ़लैहिर्रह़मा ने भी आपको ख़िलाफ़तो इजाज़त अ़ता फ़रमाई।

आपने क़ुराने अज़ीम की तालीम अपनी वालिदा माजिदा और ह़ाफिज़ अब्दुल रह़मान मारहरवी से ह़ासिल की। उर्दू की इब्तिदाई तालीम मुन्शी सईदुद्दीन साह़ब से ह़ासिल की। अंग्रेज़ी के कुछ सबक़ मास्टर समीउ़द्दीन साह़ब से

पढ़े। हज़रत अहसनुल उल्मा अंग्रेज़ी लिखा भी बहुत उ़म्दा करते थे और बोलने और समझने में भी माहिर थे। दर्से निज़ामी की तालीमात अपने मामू हज़रत ताजुल उ़लमा, बड़े भाई हज़रत सय्यदुल उ़लमा, ख़लीलुल उ़लमा मौलाना ख़लील अहमद ख़ाँ मारहवी, मौलाना गु़लाम जीलानी, मौलाना हशमत अली ख़ाँ साहब पीलीभीती रहमतुल्लाह अलैहिम से हासिल की। सुलूक की तालीम अपने नाना मुजद्दिदे बरकातियत के ज़ेरे तरबियत हासिल फ़रमाई।

हज़रत अहसनुल उल्मा एक बेहतरीन हाफ़िज़ व क़ारी थे। उनके सीने में कुरआने पाक आख़िरी साँसों तक ज्यों का त्यों महफ़ूज़ था। अपनी ह़याते मुबारका में बहुत बार मेहराबें सुनाईं। मुम्बई में तन्हा दो शबीने सुनाए। अहसनुल उल्मा को उनके अकाबिर से इ़ल्म, शरीअ़त, मारफ़त, तदब्बुर, इन्किसारी, सादा मिज़ाजी, आला दिमाग़ी, सख़ावत व फ़य्याज़ी ख़ूब ख़ूब विरसे में मिली थी। आप अपने जद्दे आला साहिबुल बरकात की तरह हुकूमत, हाकिमों और सियासतदानों से बहुत दूर रहते थे। कभी किसी का रोब कुबूल नहीं किया, बड़े बड़े मिनिस्टर और गवर्नर हज़रत अहसनुल उल्मा से मारहरा आकर मिलना ाहते थे लेकिन हुज़ूर अहसनुल उल्मा माज़रत कर लेते थे।

हजरत अहसनुल उल्मा रहमतुल्लाह अ़लैह ख़ानक़ाही तब्लीग़ी मसरूफ़ियात के बावुजूद तसनीफ़ो तालीफ़ के लिये भी वक़्त निकाला करते थे। आपकी चन्द तसानीफ़ यह हैंः

1— अह्लुल्लाह फ़ी तफ़सीरि ग़ैरूल्लाह **2**— दवाए दिल **3**— मद्दाहे मुर्शिद **4**— अह्ले सुन्नत की आवाज़

5– 1973 के मुख़्तलिफ़ तब्लीग़ी दौरों की रूदाद, इसके अ़लावा कई मज़ामीन आपने रक़म फ़रमाए।

हज़रत अह़सनुल उल्मा अपने अकाबिर की तरह शायरी का आला ज़ौक़ रखते थे। मज़हबी शायरी के अ़लावा बहारिया शेर भी फ़रमाया करते थे। आपके नमूनए कलाम से चन्द इक़्तिबासात पेश हैं। नात के शेर में फ़रमाते हैं:

''मुह़म्मद आबरूए मोमिनाँ हैं
मुह़म्मद बादशाहे मुर्सलाँ हैं।

ह़सन सुन हातिफ़े ग़ैबी पुकारा
बफ़ज़्ले रब वो तुझ पे मेहरबाँ हैं।''

''मुक़द्दर से अगर सरकार में जाना मयस्सर हो
तो जो कुछ मेरे दिल में है वो सब कुछ मेरे लब पर हो।

तुम्हारा हुक्म है जारी व सारी सारे आ़लम में
न क्योंकर हो कि तुम नाइबे ख़ल्लाक़े अकबर हो।''

बारगाहे ग़ौसियत में अ़र्ज़ करते हैं:

''आपसे कुछ अ़र्ज़ के क़ाबिल कहाँ
मुझ से नालाएक़ की ये कजमुज ज़बाँ।
फिर भी अपने लुत्फ़ से मेरा बयाँ
सुन ही लीजिये ऐ मेरे कुतुबे ज़माँ।''

अपने नाना मुर्शिद की बारगाह में यूँ ख़िराजे अ़क़ीदत पेश करते हैं:

''ये गागर है हाजी मियाँ बाख़ुदा की
नबी के दुलारे शहे बासफ़ा की
हसन एक अदना सगे क़ासमी है
रहे ता अबद इस पे रहमत ख़ुदा की।''

आपके बहारिया कलाम के चन्द अशआ़र मुलाहज़ा फ़रमाएँ:

''जो सुकूँ न रास आया तो जुनूँ में ढल रहा हूँ
ग़मे ज़िन्दगी से कह दो कि मैं रूख़ बदल रहा हूँ'
तेरे हर सितम को मैंने बख़ुशी किया गवारा,
तो फिर ऐ फ़लक बता दे तुझे क्यों मैं खल रहा हूँ
ये बज़्मे इश्क़ है यहाँ ज़र्फ़े दिल की जाँच होती है,
यहाँ पोशाक से अन्दाज़ए इन्साँ नहीं होता।''

हुज़ूर अहसनुल उल्मा के फ़र्ज़न्द हज़रत शर्फ़े मिल्लत ने उनके नामे नामी सय्यद शाह मुस्तफ़ा हैदर हसन मियाँ क़ादरी के हुरूफ़ की निस्बत से जो उनकी सीरत का नक़्शा खींचा वह लाइक़े सद हज़ार तहसीन है।

जहाँ बात सयादत से शुरू हुई है और आगे यादे इलाही, दिलजोई, शीरीं बयानी, उलफ़ते रसूल, हिम्मत, मुहब्बते औलियाए किराम, सुदूरे कश्फ़ व करामत, तरीक़ए अजदाद पर अ़मल, फ़ुज़ला की इ़ज़्ज़त, यगानगते आमा, हिल्म, यक़ीन की दौलत, दीन की ख़िदमत, रियाकारी से नफ़रत, हिकमत की बातें करने की आ़दत, सरदारी, नेमतों

की तक़सीम, मेहमान नवाज़ी, इन्सान नवाज़ी, नमाज़ों से उलफ़त, क़ादरियत से इश्क़, अइज़्ज़ा परवरी, दरिया दिली, यक़ीने मुहकम अ़मले पैहम की तफ़सीर ये सब ख़ुसूसियतें चमक रही थीं **सय्यद शाह मुस्तफ़ा हैदर ह़सन क़ादरी** की ज़ाते मुबारक में।

हज़रत अह़सनुल उल़मा तमाम ख़ानदानी आमाल व अशग़ाल के बहुत पाबन्द थे। मशाइख़े ख़ानदाने बरकातिया का आधी रात के बाद वज़ीफ़ा तिलावत करने का मामूल कभी नाग़ा न हुआ। जिस रात विसाल फ़रमाने वाले थे। उस रात भी आपने वह वज़ीफ़ा उस दिन में तिलावत फ़रमा लिया था। अल्लाह तबारक व तआ़ला ने आपके हाथ में रूहानी शिफ़ा बहुत कसरत से अता फ़रमायी थी। तावीज़ ऐसा पुर असर होता था जिसको अ़ता फ़रमा दिया उस शख़्स की सारी तकलीफ़ें हुक्मे ख़ुदा से फ़ौरन रफ़ा दफ़ा हो जाती। जिन्नात, अस़र, आसेब को तो ह़ाज़िर करके सजा देकर दफ़ा फ़रमाते। बदायूँ शरीफ़ के एक मुरीद अनवर क़ासमी साह़ब के यहाँ सख़्त आसेब का असर हुआ और बंदरों की शक्ल में हमलाआवर होता था। ह़ज़रत अह़सनुल उल्मा अपने ख़ानदानी चिराग़ के साथ तशरीफ़ ले गये। आसेब को ह़ाज़िर किया और उसके सामने बैठाकर उसको सख़्त तम्बीह की जब वह न माना तो सजाएँ देकर दफ़ा किया।

ह़ज़रत अह़सनुल उल्मा में सुलूक व दर्वेशी के इशारे बचपन ही से ज़ाहिर थे। आपकी बहन सय्यदा ज़ाहिदा ख़ातून रह़मतुल्लाह अलैहि आपके बचपन का बयान करते हुए फ़रमाती हैं कि ह़सन मियाँ को बचपन ही से खेल कूद या शरारतों में कोई दिलचस्पी न थी। उनमें

मतानत और संजीदगी बचपन ही से ज़ाहिर थी, पालतू जानवरों का ख़ूब ख़्याल रखते, उनको दाना पानी और तकलीफ़ पहुँचाने वाले जानवरों से बचाने के लिये ख़ुद को बहुत मसरूफ़ रखते।

हज़रत अहसनुल उल्मा अपने वालिदैन के बहुत सआदतमंद बेटे थे, अपने वालिदैन के लिये रोज़ रात को पानी रखते, लोटे की टोटी में गिलोरी लगा देते कि कोई कीड़ा मकोड़ा उसमें न दाख़िल हो जाए। एक दिन उनके वालिद ने किसी बात पर यह हुक्म दिया कि मोंढे को उल्टा करके खड़े हो जाओ, वालिदा अपने कामों में मसरूफ़ हो गईं, बहुत वक़्त गुज़र जाने के बाद देखा कि हज़रत वैसे ही खड़े हैं। वालिद ने पूछाः अब तक क्यों खड़े हो? तो फरमायाः आपका हुक्म मुझे नहीं हुआ था कि मैं हट जाऊँ। आज हमको भी अपने मख़दूम की इस फ़रमाँबरदारी और वालिदैन की इताअ़त के वाक़िये से सबक़ लेना चाहिये।

हज़रत अहसनुल उल्मा के चेहर–ए–मुबारक में अल्लाह तआ़ला ने वह कशिश अ़ता फ़रमाई थी कि देर रात तक मजमा सिर्फ़ उनके दीदार को बैठा रहता। मेहमान नवाज़ी, सख़ावत, फ़य्याज़ी, हिकमत, उल्मा नवाज़ी, मदरसों, मस्जिदों और इ़ल्मी कामों में मदद, आ़जिज़ी व इन्किसारी और इ़बादतो रियाज़त आपकी ख़ास ख़ूबियाँ थीं।

हज़रत अहसनुल उल्मा को जब फ़ुरसत मिलती तो मदरसा क़ासिमुल बरकात में तशरीफ़ लाकर दर्स व तदरीस की ख़िदमात अंजाम देते।

आप 54 साल तक मस्जिदे बरकाती में नमाज़े जुमा से पहले वअ़ज़ो नसीहत का गुलिस्ताँ महकाते रहे। ख़िताब ऐसा होता था कि अगर तक़रीर को छानो तो 90 फ़ीसद कुरआनो ह़दीस़ की बातें और बाक़ी बुज़ुर्गों के वाक़ियात। उनकी तक़रीरों के रिकॉर्ड मह़फ़ूज़ हैं एक एक लफ़्ज़ इ़ल्म और मारफ़त का ख़ज़ाना मह़सूस होता है। ज़ुबान और अदब पर आपकी इ़ल्मी गिरफ़्त बहुत मज़बूत थी, अ़रबी और फ़ारसी ग्रामर में आपको मलका ह़ासिल था। आला ह़ज़रत के कलाम पर Authority रख़ते और ह़दाइक़े बख़्शिश के ह़ाफ़िज़ व मुफ़स्सिर थे। आला ह़ज़रत के कलाम को जिस तफ़सील से बयान फ़रमाते वह उनका ही ह़िस्सा था।

अल्लाह तआ़ला हुज़ूर अह़सनुल उल्मा के फ़ैज़ान को यूँही जारी रखे और उनके मिशन को दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए।

ह़ज़रत अह़सनुल उल्मा की मह़फ़िल में जो दीनी माह़ौल क़ायम रहता उसकी गवाही उनके हाज़िर बाश दे सकते हैं। आपकी महफ़िल में संजीदा गुफ़्तुगू करने वाले ही बैठ सकते हैं। ह़ज़रत की गुफ़तगू का बेशतर ह़िस्सा कुरान की तालीमात, सीरते रसूल, ज़िक्रे सहा़बा, बुर्ज़ुगाने सिलसिला होता। आप हमेशा मुस्कुरा कर सादा आम फ़हम गुफ़्तुगू फ़रमाते। लोगों के दिलों को तसल्ली देने वाले कलमात ज़बान मुबारक से अदा होते। उ़लमा–ए–किराम की बहुत क़द्र फ़रमाते। जो मुम्किन मदद उनको दरकार होती वह बरगाहे अह़सनुल उल्मा से की जाती। हुज़ूर अह़सनुल उल्मा ने बेशतर दीनी मदारिस और इल्मे दीन के कामों को बढ़ावा देने के लिए अपनी ज़ात को पेश पेश

रखा। उ़लमा–ए–किराम की इस दर्जा क़द्र फ़रमाते कि उ़र्स की महफ़िलों में ख़ुद नीचे फ़र्श पर तशरीफ़ रखते और उल्मा को मिम्बर पर बिठाते और उ़लमा–ए–किराम के दरमियन भी ह़ज़रत अह़सनुल उल्मा की ज़ात मरकज़े नज़र थी कोई भी इख़्तिलाफ़ अह्ले सुन्नत में होता तो ह़ज़रत अह़सनुल उल्मा ही की ज़ात फ़ैसले के लिए मुन्तख़ब होती।

आपका निकाह सीतापुर के मारूफ़ नक़वी सादात घराने में सय्यदा मह़बूब फ़तिमा नकवी साहि़बा मरहूमा से हुआ। जिनसे 6 साह़बज़ादे और दो साह़बज़ादी पैदा हुई, बड़े साह़बज़ादे सय्यद मुह़म्मद जमील और सय्यद मुह़म्मद ख़ालिद और एक साहब़ज़ादी सय्यदा क़ादिरिया बचपन ही में विसाल कर गए। ह़ज़रत अमीने मिल्लत, ह़ज़रत शर्फ़े मिल्लत, ह़ज़रत अफ़ज़ल मियाँ, ह़ज़रत रफ़ीक़े मिल्लत और साहि़बज़ादी सय्यदा समीना फ़ातिमा बा ह़यात हैं।

आपका विसाल दिल की बीमारी के सबब 15 रबीउ़स्स़ानी 11 सितम्बर 1995 ई0 / 15 रबीउ़स्स़ानी 1416 हिजरी दिल्ली के जे. बी. पंत अस्पताल में रात को 8 बज कर 50 मिनट पर हुआ। जनाज़ा शरीफ़ मुबारक मारहरा शरीफ़ लाया गया। आपका मज़ारे मुबारक अपने नाना, मामू और भाई के पास है। इन्तक़ाल से पहले अपने दुनिया से जाने के खुले इशारे फ़रमाए। अपने साह़बज़ादों से मुस्कुराकर फ़रमायाः ''हम चले पिया के देस''। ह़ज़रत अमीने मिल्लत से ग़ौसे़ पाक की शान में मन्क़बत सुनी और इशारे से पूछाः इन्हें जानते हो? गोया कि सरकारे ग़ौसे़ आज़म वहाँ तशरीफ़ रखते हों। ह़ज़रत शर्फ़े मिल्लत से तिलावते कुरआने पाक समाअ़त फ़रमाई, ह़ज़रत रफ़ीक़े

मिल्लत से फ़रमाया कि ''मस्लके आला ह़ज़रत पर मज़बूती से क़ायम रहना'' अपने ख़ादिमे ख़ास से चेहरे पर पानी लगवाया जो कि विसाल की सुन्नत है, ख़ुद को सीधा किया, नियत बाँधी और या अल्लाह, या रह़मान, या रह़ीम कहते हुए अपने ह़क़ीक़ी मालिक के हुज़ूर ह़ाज़िर हुए। ज़ाहिरी ज़िन्दगी में और विसाल के बाद भी सैकड़ों करामतें उनकी ज़ाते मुबारक से ज़ाहिर हुईं। सबसे बड़ी करामात तो यही है कि पूरे ख़ानक़ाही निज़ाम को अपनी ज़ाते मुबारक से तसव्वुफ़ के रंग में रंग दिया। साथ ही क़ौम की कामयाबी के लिये दुनियावी तालीम का ख़्वाब जामिया अल–बरकात की शक्ल में देखा जिसको उनके लाएक़ साह़बज़ादगान ने पूरा किया।

आपके ख़ुलफ़ा में साह़बज़ादगान के अ़लावा अपने वक़्त की अ़ज़ीम शख़्सिय्यतों का नाम आता है। चन्द एक ये हैंः ह़ज़रत सय्यद शाह ज़्याउद्दीन तिर्मिज़ी काल्पी शरीफ़, ह़ज़रत मुफ़्ती मुह़म्मद अख़तर रज़ा साह़ब अज़हरी, ह़ज़रत मुफ़्ती ख़लील अह़मद बरकाती साह़ब (पाकिस्तान), ह़ज़रत मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी (बरकाती मुफ़्ती), ह़ज़रत सूफ़ी निज़ामुद्दीन साह़ब, मुफ़्ती जलालुद्दीन अह़मद अमजदी, बह़रूल उ़लूम मुफ़्ती मुह़म्मद अ़ब्दुल मन्नान साह़ब आज़मी, मौलाना सुब्ह़ान रज़ा साह़ब वग़ैरा।

वारिस़े पंजतन ह़ज़रत सय्यद शाह यह़या ह़सन क़ादरी उ़र्फ़ अच्छे साह़ब रह़मतुल्लाह अ़लैह

वारिस़े पंजतन ह़ज़रत सय्यद शाह मुह़म्मद यह़या ह़सन उ़र्फ़ अच्छे साह़ब अ़लैहिर्रह़मा की विलादत 20 रबीउ़स्स़ानी 1344 हिजरी/7 नवम्बर 1925 ई0 में मारहरा शरीफ़ में हुई। आप सय्यद मसूद ह़सन साह़ब के साह़बज़ादे थे जो ह़ज़रत सय्यद शाह औलादे रसूल साह़ब के पोते थे। इब्तिदाई तालीम अपने बुज़ुर्गों (ख़ास तौर से ह़ज़रत ताजुल उ़लमा) से ह़ासिल की फिर आला तालीम के लिये आप अ़लीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी तशरीफ़ ले गए और वहाँ से एम. ए. की डिग्री ह़ासिल की। एक ज़माने तक वह मारहरा में रहे और अपने चचा ह़ज़रत सय्यद शाह औलादे नबी छम्मा मियाँ अ़लैहिर्रह़मा के साथ उ़र्से नूरी की ज़िम्मेदारियाँ निभाते रहे।

ह़ज़रत यह़या मियाँ साह़ब एक अ़रसे तक गोशानशीन रहे फिर सन 1987 में अपने चचाजान के विसाल के बाद मारहरा शरीफ़ अपने घर वापस लौटकर सज्जादानशीनी के मन्सब पर फ़ाइज़ हुए और उ़र्से नूरी को बाक़ाइदा उसी शानो शौकत से शुरू फ़रमाया। मारहरा शरीफ़ तशरीफ़ लाकर एक दिन वारिस़े पंजतन ने हुज़ूर अह़सनुल उल्मा से अ़र्ज़ किया कि मुझे अपना छोटा बेटा नजीब दे दो। ह़ज़रत ने फ़रमायाः चारों बेटे आपके हैं अगर नजीब मियाँ को ले जाना चाहते हैं तो ले जाइये। विसाल

से कुछ साल पहले हज़रत वारिसे पंजतन ने हज़रत रफ़ीक़े मिल्लत को अपना वारिस व जानशीन मुक़र्रर करके उनकी सज्जादानशीनी का एलान फ़रमाया, वली अहदी की दस्तार बाँधी, ख़रक़ापोशी के दिन अपने हमराह दरगाहे मुअल्ला गद्दी के जुलूस में रफ़ीक़े मिल्लत को लेकर गए।

हज़रत यहया मियाँ साहब बड़े अख़लाक़मंद, सख़ावत के पैकर थे। गुफ़्तगू के फ़न में माहिर, जिस महफ़िल में मौजूद हों बस वही वो नज़र आते थे, आला दर्जे की ख़ातिरदारी करने वाले, छोटा हो या बड़ा सब के साथ एक सा सुलूक, उनका दस्तरख़्वान उनके दिल की तरह बड़ा। एक मर्तबा अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में एक जलसे में तशरीफ़ लाए और बड़ी ही मालूमाती और शानदार तक़रीर फ़रमाई। क़ौमी, सियासी, समाजी मामलात में भी आप गहरी निगाह रखते थे। World Islamic Mission के Chairman रहते हुए अपनी क़ीमती और मुख़लिस ख़िदमात अंजाम दीं। बाबरी मस्जिद के मामले पर ख़ुद पेशक़दमी करते हुए वहाँ दौरा किया और हुकूमत को बहुत बेबाकी से अपनी राय के बारे में बताया कि बाबरी मस्जिद इस वक़्त महफ़ूज़ नहीं है जिससे मिल्लते इस्लामिया को राहत व हौसला मिला और अपनी रूहानी क़यादत पर बहुत भरोसा भी हुआ। वारिसे पंजतन ख़ानक़ाहे बरकातिया की तमाम रिवायतों के अमीन और बुज़ुर्गों के वाक़ियात के हाफ़िज़ थे। फ़क़ीराना मिज़ाज की वजह से अवाम में उनकी मक़बूलियत का आलम निराला था जिसका अन्दाज़ा उनके जनाज़े के मजमे को देखकर हुआ। हज़रत वारिसे पंजतन ख़ूबसूरत, हसीन, पुरनूर चेहरे

के मालिक थे। जब वह अ़मामा शरीफ़ बाँधकर निकलते तो बुज़ुर्गों की यादगार लगते थे।

तमाम बीमारी और कमज़ोरी के बाद भी दुनिया भर के तब्लीग़ी दौरे फ़रमाते, अपने मुरीदों और चाहने वालों की हर ख़ुशी और ग़म में शरीक होते। सज्जादानशीनी के बाद अ़रब, अमरीका और यूरोप के दौरे भी किये और ख़ानक़ाहे बरकातिया के पैग़ाम को आ़म किया। बहुत कम ग़िज़ा खाते लेकिन मेहमानों को सामने खड़े होकर ख़ूब तरह तरह के खाने खिलाते थे। अगर आधी रात को भी मेहमान आ गया तो ख़ादिमों को हिदायत होती कि खाना पहले दो।

उनको अपने दोस्त ह़बीब अनवर ज़ुबैरी साह़ब से दिली लगाव था और ज़ुबैरी साह़ब भी वारिसे़ पंजतन की मुह़ब्बत में हर साल इंग्लैण्ड से मारहरा तशरीफ़ लाते और उन्हीं के पास ठहरते।

वारिसे़ पंजतन का विसाल 18 शाबान 1433 हिजरी/21 जुलाई 2012 ई0 जुमेरात के दिन दिल्ली में इ़लाज के दौरान हुआ। जनाज़ा मारहरा लाया गया, एक बड़े मजमे ने ह़ज़रत अमीने मिल्लत की इक़्तिदा में नमाज़े जनाज़ा अदा की और फिर दरगाहे बरकातिया में ह़ज़रत छम्मा मियाँ के रौज़े में वारिसे़ पंजतन को सुपुर्दे मज़ार किया गया। उनकी ख़्वाहिश थी कि उनका जनाज़ा सबसे पहले उनके चारों भतीजे उठाएँ लिहाज़ा ह़ज़रत अमीने मिल्लत, शर्फ़े मिल्लत, रफ़ीक़े मिल्लत और अफ़ज़ल मियाँ साह़ब उनको अपने काँधे पर घर से ख़ानक़ाह शरीफ़ तक लाए फिर मजमे के ह़वाले किया। वारिसे़ पंजतन के चहल्लुम के दिन उल्मा व मशाइख़ की मौजूदगी में ह़ज़रत रफ़ीक़े मिल्लत को उनकी जगह मसनदे सज्जादगी पर

रौनक़ अफ़रोज़ किया गया। अब मसनदे नूरिया पर हज़रत रफ़ीक़े मिल्लत सरकारे नूर के फ़ैज़ान को आ़म कर रहे हैं।

आपके ख़ुलफ़ा में इन अहम शख़्सिय्यात के नाम दर्ज किये जाते हैं:

हज़रत शर्फ़े मिल्लत सय्यद मुहम्मद अशरफ़ क़ादिरी, हज़रत रफ़ीक़े मिल्लत सय्यद नजीब हैदर नूरी, हज़रत डॉक्टर सय्यद शाहिद अ़ली नौशाही साहब सज्जादानशीन जनैठा शरीफ़, हज़रत मौलाना सय्यद अ़ब्दुर्रब, जनाब ख़्वाजा एहतिशामुद्दीन क़ादरी, शहीदे बग़दाद हज़रत मौलाना उसैदुल हक़ क़ादिरी साहब बदायूँ शरीफ़।

सय्यदे मिल्लत हज़रत सय्यद शाह आले रसूल हसनैन मियाँ नज़्मी मारहरवी रहमतुल्लाह अ़लैह

हज़रत सय्यद शाह आले रसूल हसनैन मियाँ नज़्मी मारहरवी हुज़ूर सय्यदुल उल्मा के इकलौते बेटे थे। आपकी विलादत 6 रमज़ानुल मुबारक 1365 हिजरी/14 अगस्त 1946 में कासगंज ज़िला एटा में हुई।

इब्तिदाई तालीम का आग़ाज़ मदरसा क़ासिमुल बरकात से हुआ, कुरआन मजीद हाफ़िज़ अ़ब्दुर्रहमान साहब से पढ़ा, फ़ारसी की तालीम अपने चचा मियाँ हुज़ूर अहसनुल उल्मा अ़लैहिर्रहमा से हासिल की। बचपन ही में अपने वालिद हज़रत सय्यदुल उल्मा अ़लैहिर्रहमा के साथ मुम्बई चले गए, प्राईमरी की तालीम हाशिमीया हाई स्कूल से हासिल की। साथ ही साथ वालिदे माजिद दीनी तालीम और ख़ानदानी उ़लूम की तालीम व तरबियत फ़रमाते रहे। मारहरा शरीफ़ से हाई स्कूल तक की तालीम हासिल करने के बाद जामिया मिलिया इस्लामिया तशरीफ़ ले गए और वहाँ से इस्लामी उ़लूम में एम. ए. की डिग्री हासिल की। तालीम के बाद UPSC इम्तिहान में कामयाबी हासिल की। हज़रत सय्यदे मिल्लत Information Broad casting के मुहकमे में मुख़्तलिफ़ आ़हदों पर फ़ाइज़ रहे, सर्विस के

आखिरी सालों में शिलाँग में Press Information Bureauमें Director की हैसियत से सुबुकदोश हुए।

हज़रत सय्यदे मिल्लत की तमाम तालीम उनके वालिदे माजिद हज़रत सय्यदुल उल्मा और हुज़ूर अहसनुल उल्मा की निगरानी में हुई। वालिदे माजिद की सोहबत ने उनको तमाम दीनी व दुनियावी मामलात में हर तरह से पक्का कर दिया था। हज़रत सय्यदे मिल्लत बचपन ही से किताबों का ख़ूब मुताला करने वाले रहे, सैकड़ों किताबें पढ़ने के बाद उनका ज़ह्न अलफ़ाज़ का पारख बन गया था। लफ़्ज़ से क्या सोत फूट रही है? किसी लफ़्ज़ की अदबी व तारीख़ी हैसियत क्या है? इस पर उनको मलका हासिल था। हज़रत सय्यदे मिल्लत को बैअ़तो ख़िलाफ़त अपने वालिदे माजिद और चचा मियाँ हुज़ूर अहसनुल उल्मा अ़लैहिर्रहमा से हासिल थी। हज़रत अहसनुल उल्मा ने अपनी सज्जादानशीनी के मौके़ पर हज़रत सय्यदे मिल्लत और हज़रत अमीने मिल्लत को सबसे पहले ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई। ख़ानक़ाहे बरकातिया की यह पुरानी रिवायत है कि नया साहिबे सज्जादा सबसे पहले अह्ले ख़ानदान को ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ करता है।

हज़रत सय्यदे मिल्लत दीनी व दुनियावी उ़लूम पर गहरी नज़र रखते थे। वह इ़ल्मे रियाज़ी और इ़ल्मे मौसीक़ी में गहरी दिलचस्पी रखते थे। उनकी ज़हानत, मालूमाते आम्मा, पुर मज़ाक़ तबीअ़त के सभी लोग क़ायल थे। हज़रत सय्यदे मिल्लत नस्र और नज़्म दोनों फ़नों में बेहद मुम्ताज़ और मुनफ़रिद थे। वह एक वक़्त में कई ज़ुबानों में महारत रखते थे, अंग्रेज़ी, उर्दू, हिन्दी ज़ुबानें तो कमाल के दर्जे तक आती थीं। नातगोई हज़रत सय्यदे मिल्लत का

ख़ास मैदान था, उर्दू, हिन्दी, संस्कृत तक में नातें कहीं, बहुत कहीं और बहुत अच्छी कहीं। नातगोई के फ़न से हज़रत नज़्मी ने अपनी अलग शनाख़्त क़ाएम की। उनकी नातगोई के हवाले से हज़रत शर्फ़े मिल्लत फ़रमाते हैंः ''हज़रत नज़्मी ने इरफ़ाने मुस्तफ़ा से लेकर नवाज़िशे मुस्तफ़ा तक का सफ़र बहुत वक़ार, एहतियात और तसलसुल के साथ तय किया।'' ख़ुद को इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी की चलती फिरती करामत तसव्वुर फ़रमाते। एक शेर में यूँ एतराफ़ फ़रमाते हैंः

''ये फ़ैज़े किलके रज़ा है जो नात कहता हूँ
वगरना नात कहाँ और कहाँ क़लम मेरा।''

सबसे पहला दीवान ही आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी के नातिया कलाम की तज़मीनों पर मुश्तमिल था। नज़्मी तख़ल्लुस फ़रमाते। आख़िरी वक़्त तक नज़्मी अपने निज़ामे नज़्मे नज़्मी से दुनिया भर आ़शिक़ाने मुस्तफ़ा के दरमियान मक़बूल व महबूब रहे। नज़्मी के अशआ़र की एक नुमायाँ ख़ुसूसियत जुज़्यात निगारी है। छोटे छोटे टुकड़ों में कैफ़ियत, वारदात और हालात को इतनी ख़ूबसूरत और मुनासिब तरीक़े से शेरी मन्ज़र नामे पर लाते हैं कि शेर का हक़ अदा हो जाता है। नाते मुस्तफ़ा में आप बाज़ारी अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करने के सख़्त मुख़ालिफ़ हैं। आला हज़रत के बाद महफ़िलों में आपका कलाम सबसे ज़्यादा पढ़ा और सुना जाता है।

हज़रते नज़्मी ख़ानक़ाहे बरकातिया की सुनहरी रिवायतों के अमीन थे। मुम्बई में सर्विस के बावुजूद उ़र्से क़ासिमी, उ़र्से सय्यिदी और उ़र्से नूरी में एहतेमाम के साथ

तशरीफ़ लाते और तमाम ख़ानदानी रस्मों में आगे आगे रहते। अपने चाहने वालों को ''ताज़ी रोटी खिला रहा हूँ'' कह कर नई नई नात व मन्क़बत सुनाते।

आपकी क़लमी ख़िदमात का मैदान बहुत वसी है। शायरी का शौक़ तो वरसा में मिला था। आपकी इल्मी व क़लमी ख़िदमात यह हैं:

1– **नज़्मे इलाही:** यह इंग्लिश ज़ुबान में सूर–ए–बक़रा की तफ़सीर है जो बरतानिया और मलावी के कई मदरसों में Syllabus में शामिल है।

2– **कलामुर्रहमान:** यह हिन्दी ज़ुबान में आला हज़रत के मशहूरे ज़माना तर्जम–ए–कुरआन कंज़ुल ईमान और सय्यद नईमुद्दीन मुरादाबादी की तफ़सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान का तर्जुमा है।

3– **मुस्तफ़ा जाने रहमत:** यह सीरतुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैह व सल्लम पर एक उ़म्दा किताब है।

4– **घर आगन मीलाद:** औरतों के लिये लिखी गई मीलादे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उ़म्दा किताब है।

5– मुस्तफ़ा से आले मुस्तफ़ा तक

6– मुस्तफ़ा से मुस्तफ़ा रज़ा तक

7– मुस्तफ़ा से मुस्तफ़ा हैदर हसन तक

8– **क्या आप जानते हैं? (उर्दू, हिन्दी):** यह इस्लामी मालूमात का बड़ा क़ीमती ज़ख़ीरा है, कई मदरसों के Syllabus में दाख़िल है, हवालों की कमी महसूस होती है।

9– दिफ़ाए आला हज़रत 10– दिफ़ाए सब्ए सनाबिल

11– **शरहे क़सीदा बुरदा (उर्दू, हिन्दी, इंग्लिश):** इमाम शर्फ़ुद्दीन बूसीरी के मशहूरे ज़माना क़सीदा बुरदा शरीफ़ की शरह है।

12– कुरआनी नमाज़ ब–मुक़ाबला माइक्रोफ़ोनी नमाल़ (उर्दू, हिन्दी) **13**– तिहत्तर में एक (हिन्दी में तर्जुमा) **14**– शाने नाते मुस्तफ़ा **15**– असरारे ख़ानदाने मुस्तफ़ा **16**– किताबुस्सलात (इंग्लिश) **17**– जब्ज़े अ़ज़ीम **18**– छोटे मियाँ **19**– गुस्ताख़ी माफ़ (हिन्दी मज़ामीन का मजमूआ़) **20**– फ़ज़्ले रब्बी (सफ़रनामाः उर्दू, हिन्दी) **21**– नई रोशनी (हिन्दी तर्जुमा) **22**– ज़ुम्र क़ैद (गुजराती से तर्जुमा) **23**– आग गाड़ी (गुजराती से तर्जुमा) **24**– लूलू (नाविल)
25– मदाइहे मुस्तफ़ा **26**– तनवीरे मुस्तफ़ा **27**– इ़रफ़ाने मुस्तफ़ा **28**– नवाज़िशे मुस्तफ़ा (ये चारों आपके नातिया दीवान हैं) **29**– बाद अज़ ख़ुद (आपके सारे दीवानों का मजमूआ़)

आपकी अंग्रेज़ी किताबें यह हैं:

1- Islam The Religion Ultimate or Relegion
2- Destination Paradise
3- Gateway to heaven
4- The Great Beyond
5- The way to Be

आख़िरी दौर में आपकी कुल्लियात ''बाद अज़ ख़ुदा'' शाए हुई जिसको अह्ले इ़ल्म ने हाथो हाथ लिया।

हज़रते नज़्मी पर हुज़ूर अह़सनुल उल्मा की ख़ास निगाहे इ़नायत थी। हज़रत अह़सनुल उल्मा कलामे नज़्मी को बहुत पसन्द फ़रमाते, बहुत सराहते थे।

आपका निकाह़ 1973 ई0 में सय्यदा आमिना सुल्ताना साहिबा से हुआ जिनसे आपके तीन साह़बज़ादे मौलाना सय्यद सिबतैन हैदर क़ादरी बरकाती, सय्यद सफ़ी हैदर और सय्यद ज़ुल्फ़िक़ार हैदर हुए।

आपकी वफ़ात का सबब ये हुआ कि चन्द महीनों तबीअ़त अ़लील रही, मुम्बई में एक बड़े ऑपरेशन के बाद फिर तबीअ़त सही नहीं हुई। इसी तबीअ़त के बाइस़ 1 मुहर्रम 1435 हिजरी यानी 1 नवम्बर 2013 को मुम्बई में विसाल फ़रमाया। एक कस़ीर मजमे ने मुम्बई से जानशीने सय्यदुल उल्मा को रूख़सत किया फिर हवाई जहाज़ से उनके साहबज़ादगान जनाज़े को मारहरा शरीफ़ ले आए। 2 नवम्बर को गुलशने बरकात में नमाज़े जनाज़ा उनके बड़े बेटे मौलाना सय्यद सिब्तैन हैदर क़ादरी बरकाती ने पढ़ाई। दरगाहे बरकातिया में हुज़ूर अहसनुल उल्मा के पायतीं आपका मज़ारे मुबारक है। अल्लाह तआ़ला हज़रत नज़्मी अ़लैहिर्रहमा के दरजात बुलन्द फ़रमाए और उनकी हयाते दायमी को इस शेर का मिसदाक़ बनाए:

''नाते रसूले पाक है नज़्मी का मक़सदे हयात
क़ब्र में भी लबों पे हो सरकार की स़ना फ़क़त।''

आपके ख़ुलफ़ा में सय्यद उवैस मुस्तफ़ा ज़ैदी, मुफ़्ती शरीफ़ुल हक़ अमजदी, अ़ल्लामा ज़्याउल मुस्तफ़ा साहब घोसी, सय्यद शाह हुसैन साहब सुल्तानपुरी, मौलाना मुहम्मद शाकिर रज़ा नूरी वग़ैरा क़ाबिले ज़िक्र हैं।

ताजुल मशाइख़ अमीने मिल्लत ह़ज़रत प्रोफ़ेसर सय्यद शाह मुह़म्मद अमीन मियाँ क़ादरी

सज्जादानशीन, ख़ानक़ाहे बरकातिया, मारहरा शरीफ़

ह़ज़रत अमीने मिल्लत, ह़ज़रत अह़सनुल उल्मा अ़लैहिर्रह़मा के सबसे बड़े साह़बज़ादे हैं, दो बड़े भाइयों के विसाल के बाद आपकी विलादत 15 अगस्त 1952 ई0 मुताबिक़ ज़ीक़ादा 1371 हिजरी क़स्बा कासगंज के ''मिशन'' अस्पताल में हुई।

दरगाहे मुअल्ला के मदरसा ''क़सिमुल बरकात'' से तालीम की इब्तिदा की। मुंशी सईदुद्दीन साह़ब ने उर्दू पढ़ाई, कुरआ़ने अज़ीम ह़ज़रत वालिदे माजिद अ़लैहिर्रह़मा और हाफ़िज अ़ब्दुर्रह़मान साह़ब अ़लैहिर्रह़मा से पढ़ा, दीनी व रूह़ानी तालीम अपने वालिदे माजिद हुज़ूर अह़सनुल उल्मा और बड़े अब्बा हुज़ूर सय्यदुल उल्मा से ह़ासिल फ़रमाई। दस पारे ह़िफ़्ज़ किए। मारहरा शरीफ़ से हाई स्कूल करके अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से फर्स्ट डिवीज़न में एम. ए (उर्दू) किया और वहीं से मीर तक़ी मीर पर Ph. D. की डिग्री ह़ासिल की, एम. ए का रिजल्ट निकलने से पहले ही शुबा–ए–उर्दू अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में ब हैसियत लैक्चरर तर्करूर हुआ, उसके बाद कुछ असातिज़ा की अकरबा परवरी से बेज़ार होकर सेंट जॉन्स कॉलेज आगरा में

लेक्चरर हो गए, लगभग आठ बरस दरसो तदरीस में गुज़ारे। मुस्लिम यूनिवर्सिटी के शोबा–ए–उर्दू में बहैसियत रीडर वापस तशरीफ़ लाए और अब प्रोफ़ेसर के ओहदा–ए–जलीला पर फ़ाइज़ हैं, जो यूनिवर्सिटी की आला तालीम की दर्स व तदरीस का सबसे बड़ा मनसब समझा जाता है।

हज़रत ताजुल उल्मा ने आपको बचपन में ही बैअ़त व ख़िलाफ़त से नवाज़ दिया था, उन्होंने अपनी हयाते मुबारका में ही अपने जाँनशीन हज़रत अहसनुल उल्मा की वफ़ात की सूरत में आपको सज्जादा नशीन और मुतवल्ली दरगाहे ख़ानक़ाह मुक़र्रर कर दिया था। आपको आपके वालिद माजिद हज़रत अहसनुल उल्मा ने अपनी सज्जादा नशीनी के दिन यानी 1956 ई0 में तमाम सलासिल की इजाज़त व ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ किया। उर्स रज़वी के मौक़े पर हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म हिन्द अ़लैहिर्रहमा ने भी आपको अपने दौलत कदे पर और फिर मिम्बरे रसूल पर एक ही दिन में बार बार ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई और लाखों के मजमा के सामने वह जुमला कहा जो मशहूरे ज़माना हो गयाः

''जो कुछ मुझे सरकार मारहरा मुतह्हरा से मिला वही सब का सब आप को पेश कर रहा हूँ।'' उसके बाद हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म हिन्द ने अपना जुब्बा, अमामा और तहरीरी मुहर शुदा ख़िलाफ़त नामा इ़नायत फ़रमाया, उस उ़र्स रज़वी में हाज़िर होने वाले हज़रात आज भी उस मन्ज़र को याद कर के एक अ़जीब रूहानी सुरूर की कैफ़ियत में ख़ुद को गिरफ़्तार पाते हैं।

हुज़ूर अहसनुल उल्मा अ़लैहिर्रहमा के विसाल के बाद आप मसनदे बरकाती पे जलवा अफ़रोज़ होकर सज्जादा नशीन हुए अब तक हज़ारों की तादाद में तरीक़त

व शरीअ़त की तलब रखने वाले आपके दस्ते ह़क़ परस्त पर बैअ़त हो चुके हैं।

हुज़ूर अह़सनुल उल्मा ने बतौर ख़ास हज़रत अमीने मिल्लत को तावीज़ात लिखने की तालीम दी और मुख़्तलिफ़ वज़ाइफ़ और अमलियात के तरीक़े तालीम किए। रब तबारक व तआ़ला ने हज़रत अमीने मिल्लत के हाथ में रूहानी शिफ़ा का ख़ज़ाना अ़ता फ़रमाया है जिससे लाखों बन्दगाने ख़ुदा का अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से भला हुआ है हो रहा है। **अल–ह़म्दुलिल्लाह**!

आप अह्ले सुन्नत व जमाअ़त और सिलसिलाए बरकातिया के फ़रोग़ में मसरूफ़ हैं, हज़ारो बन्दगाने ख़ुदा आपके ज़रिए बरकाती सिलसिले में दाख़िल हो चुके हैं और हो रहे हैं। आप बहैसियत मुतवल्ली व मेम्बर मुन्तज़िमा दरगाह कमेटी ख़ानक़ाह व दरगाहे आ़लिया बरकातिया की तामीरी तब्लीग़ी व तवल्लियत की ज़िम्मेदारियाँ बख़ूबी निभा रहे हैं।

आपकी ख़िदमात मुख़्तलिफ़ुल जिहात हैं, आप का तरीक़ए कार है ख़ुद काम करना और काम करने वालों की माली इमदाद करना या कम अज़ कम उनकी हौसला अफ़ज़ाई करना।

ह़ज़रत अमीने मिल्लत अपनी सादा मिज़ाजी और दरवेशाना सीरत के बाइ़स उ़लमा, मशाइख़ व मुरीदीन में बहुत मशहूर व मह़बूब हैं। मिलने वालों से इस तरह इन्कसारी और ख़ुशमिज़ाजी से गुफ़तगू फ़रमाते हैं कि लोग उनके गिरवीदा हैं। अ़लीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के सुन्नी तलबा के तो वह सरपरस्त ही जैसे हैं। अ़लीगढ़ में कोई भी दीनी जलसा हो तो सरपरस्ती के लिये तलबा की पहली पसन्द ह़ज़रत अमीने मिल्लत ही होते हैं। यूनिवर्सिटी

के तलबा के छोटे से छोटे काम के लिये ह़ज़रत फ़ौरन चलने को हमेशा तैयार रहते हैं। आज मुस्लिम यूनिवर्सिटी में जो इश्क़े नबी का गुलशन सजा है उसकी आबयारी में ह़ज़रत अमीने मिल्लत का कलीदी किरदार है।

मजलिसे बरकात का क़याम: दरसी किताबों पर उ़लमा–ए–अह्ले सुन्नत ही के ह़वाशी थे, उन किताबों की इशाअ़त, तिजारत की गरज़ से ग़ैर मुस्लिम भी करते थे। ग़ैरों ने भी इन किताबों की इशाअ़त तिजारत के मक़सद से शुरू की। 1419 हिजरी/1999 ई0 में जामिया अशरफ़िया मुबारकपुर में ''मजलिसे बरकात'' का क़याम अ़मल में आया जिसका मक़सद दर्से निज़ामी की कुतुब पर उ़लमा–ए–अह्ले सुन्नत के ह़वाशी की तह़क़ीक़ कराके उनकी इशाअ़त करना और नए अन्दाज़ में उनके तर्जुमे व तफ़सीर और जदीद ह़वाशी का इन्तिज़ाम करना है। यह मजलिस आप के तआ़व्वुन से और आपकी सर परस्ती में अब तक तह़क़ीक़ के साथ दर्जनों किताबों की इशाअ़त कर चुकी है।

मजलिसे शरई की शुरूआ़त: 19 दिसम्बर 1992 ई0 में जामिया अशरफ़िया में ''मजलिसे शरई'' का क़याम अ़मल में आया, जिसका मक़सद पैदा होने वाले जदीद मसाइल का शरीअ़त की रोशनी में तशफ़्फ़ी बख़्श ह़ल तलाश करना था। इस मजलिस के ज़रिए कई मसाइल ह़ल किये गए, लेकिन 1999 ई0 में कुछ असबाब की बुनियाद पर यह मजलिस बन्द हो गई और 5 साल तक यह मजलिस मौक़ूफ़ रही। ह़ज़रत अमीने मिल्लत ने इस तरफ़ उ़लमा–ए–किराम की तवज्जो दिलाई और इसकी शुरूआ़त के लिये हर तरह़ का तआ़वुन किया और आप ही की सरपरस्ती में ''मजलिसे शरई'' की शुरूआ़त 2004 ई0

में जामिया अशरफ़िया में हुई। जिसके ज़रिए अब तक पचास से ज़्यादा मसाइल ह़ल हो चुके हैं, और करोड़ों मुसलमान फ़ैज़याब हो रहे हैं।

तरह तरह की मसरूफ़ियात के बावुजूद आप तह़रीर व तसनीफ़ के लिए वक़्त निकाल लेते हैं जिसका सुबूत आपकी बहुत सी तसानीफ़ हैं। आपकी तसानीफ़ का एक जाइज़ा पेश है।

सय्यद शाह बरकतुल्लाह—ह़यात और इल्मी कारनामेः 112 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल इस किताब में आपने सादा व सहल ज़बान में हज़रत सय्यद शाह बरकतुल्लाह अ़लैहिर्रह़मा के ह़ालाते ज़िन्दगी और इल्मी कामों का जाइज़ा लिया है। ख़ुसूसन पेम प्रकाश का तफ़सीली तआ़रूफ़ कराया है।

आदाबुस्सालिकीनः यह हज़रत सय्यद शाह आले अह़मद अच्छे मियाँ अलैहिर्रह़मा की मशहूर तसनीफ़ है जिसका पहला तर्जुमा ह़ज़रत ताजुल उल्मा ने किया था और मतन फ़ारसी के साथ 1935 ई0 में शाए किया था। यह तर्जुमा अपनी ज़बान और अन्दाज़ के साथ क़दरे अजनबी हो गया है इसलिए हज़रत अमीने मिल्लत ने असरी तक़ाज़ों और ज़बान के पेशे नज़र इसका जदीद तर्जुमा किया है जो चालीस सुफ़ह़ात पर मुश्तमिल है। उन्होंने मख़्सूस इस्तलाह़ात और मक़ामात की तशरीह़ भी की है इसलिए इसकी अहमियत बहुत बढ़ गई है।

चहार अनवाअः यह हज़रत सय्यद शाह बरकतुल्लाह अ़लैहिर्रह़मा की तसनीफ़ है जिसे हज़रत अमीने मिल्लत ने शरीफ़ अह़मद ख़ाँ साह़ब की मुआ़वनत से उर्दू का जामा पहनाया है। इसमें औलिया के मुख़तलिफ़ तबक़ों के

मामूलात को बयान किया है। इस साल इस किताब की जदीद इशाअ़त हो रही है।

मीर तक़ी मीरः यह आपका तहक़ीक़ी मक़ाला है जिस पर आपको (Ph.D) की डिग्री मिली।

अदब, अदीब और असनाफ़ः उर्दू अदब की इस्तलाहात व असनाफ़ पर यह आपका इल्मी कारनामा है।

क़ायम चाँदपुरी हालात और इल्मी कारनामेः उर्दू के नामवर शायर व अदीब क़ायम चाँदपुरी के हालाते ज़िन्दगी और उनके इल्मी कारनामों, शायरी व तज़किरा निगारी पर आपने भरपूर अन्दाज़ में रोशनी डाली है।

शाह ह़क़्क़ानी का उर्दू तर्जुमा व तफ़सीरे क़ुरआन मजीदः सय्यद शाह ह़क़्क़ानी (1145 हिजरी/1210 हिजरी) ने तर्जुमा तफसीरे क़ुरआन ''इनायते रसूल की'' उनवान से किया था। ह़ज़रत अमीने मिल्लत ने मौलाना मुह़म्मद इरशाद साहि़ल शहसरामी की मुआ़वनत से उसे जदीद अन्दाज़ में मुरत्तब कर के शाए किया है।

आ़लमे इस्लाम की चन्द अहम व बाअसर शख़्सियात में शुमारः

बिला शुब्हा आप ख़ानवाद-ए-बरकात के चश्मो चिराग़, दरगाहे आलिया बरकातिया के सज्जादानशीन व साहि़बे इजाज़त व ख़िलाफ़त बुज़ुर्ग हैं। रूहानियत और तसव्वुफ़ की अहम ख़िदमात आपके दम की मरहूने मिन्नत हैं और यह सिलसिला आलमगीर सतह पर है।

जॉर्ज टाउन यूनिवर्सिटी अमेरिका ने 2009 ई0 में एक सरवे करा के आ़लमे इस्लाम की 500 बाअसर और अहम शख़्सियात का इन्तिख़ाब किया है। इसमें हज़रत अमीने मिल्लत को उनके असर व रूसूख़ और एहमियत व

फ़ज़ीलत की बिना पर 44 वे मक़ाम पर तसलीम किया गया है। यही यूनिवर्सिटी अपने सरवे में मुसलसल चार साल तक हज़रत का नाम शामिल करती रही है, यह सरवे रिपोर्ट बज़ाते ख़ुद बहुत अहमियत की ह़ामिल और आप के मक़ामे बुलन्द की मज़हर है।

दर असल यह आपकी उन अज़ीम ख़िदमात और ख़िदमते ख़ल्क़ का एतराफ़ है जो तौफ़ीक़े इलाही से अन्जाम पज़ीर हो रही है।

तरवीजे इल्मः अपने ख़ानवादे की देरीना रिवायत के ऐन मुताबिक़ हज़रत अमीने मिल्लत को भी उलूम व फुनून की तरवीज व इशाअ़त का शग़फ़ जुनून की ह़द तक है और ह़क़ीक़त यह है कि जुनून के बग़ैर कोई भी काम मेअ़राजे कमाल को नहीं पहुँचता। इस मक़सद के लिये उन्होंने अपने बिरादराने अज़ीज़ सय्यद मुह़म्मद अशरफ़ साह़ब, सय्यद मुह़म्मद अफ़ज़ल साह़ब, सय्यद मुह़म्मद नजीब ह़ैदर साह़ब के अ़लावा सैकड़ों मुख़्लिस रूफ़क़ा व अइ़ज़्ज़ा की मुआ़वनत से 1995 ई0 में **''अल—बरकात एजुकेशनल सोसायटी''** रजिस्टर कराई। इसके नाम पर अनूप शहर रोड अलीगढ़ में वसी व अ़रीज़ ज़मीन ख़रीदकर रजिस्टर्ड कराई और अल—बरकात के इदारों की मन्सूबा साज़ी की। 2002 ई0 में उसके इदारों और उनकी इमारतों का संग बुनियाद रखा गया है। तभी से तालीम व तामीर का सिलसिला जारी है।

इस सोसायटी के ज़ेरे एहतिमाम फ़िलवक़्त अल—बरकात प्ले एण्ड लर्न सेन्टर, अल—बरकात सीनियर सेकेन्डरी स्कूल (ब्वाइज़), अल—बरकात क़ादरिया स्कूल (गर्ल्स), अल—बरकात इंसटीट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट स्टडीज़

(M.B.A) अल–बरकात इंसटीट्यूट ऑफ़ एजुकेशन (B.Ed) अल–बरकात कॉलेज ऑफ़ ग्रेजुएट स्टडीज़, अल–बरकात सय्यद हामिद कम्यूनिटी कॉलेज, अल–बरकात कॉलेज फ़ॉर ग्रेजुएट स्टडीज़ हॉस्टल की सहूलत के साथ तालीमी ख़िदमात अन्जाम दे रहे हैं।

समाज के कमज़ोर और ग़रीब बच्चों की तालीम व तरबियत के लिये 100 रू0 माहाना नाम फ़ीस पर अल–बरकात ऑफटरनून स्कूल जुलाई सन 2011 से शुरू किया गया है। तलबा को यूनीफ़ार्म, किताबें, कापियाँ और दीगर ज़रूरी चीजें अल–बरकात सोसायटी की जानिब से मुहय्या कराई जा रही है।

अल–बरकात सोसायटी ने एक और अहम इदारा अल–बरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंसटीट्यूट सय्यद मुहम्मद अमान के ज़ेरे निगरानी दीनी मदारिस से फ़ारिग़ उल्मा की शख़्सियत साज़ी के लिये खोला है जिसमें उनकी रिहाइश वग़ैरा की सहूलत के साथ माहाना वज़ीफ़ा भी दिया जाता है।

अल–बरकात एजुकेशनल सोसायटी के जज़्बे और काम से मुतअस्सिर होकर मुल्क के तूलो अर्ज़ में फ़ैले हुए बरकाती हज़रात इस कारवाँ में शामिल हो रहे हैं और अपने–अपने इलाक़े में इसी बैनर के तहत इदारा साज़ी कर रहे हैं, कुरला मुम्बई में ''अल–बरकात मलिक मुहम्मद इस्लाम स्कूल'' क़ायम किया गया है। सूरत, गुजरात में ''अल–बरकात पब्लिक स्कूल'' क़ायम हुआ है, कानपुर में ''अल–बरकात कम्पयूटर सेंटर'' का क़याम अमल में आया है। जयपुर, राजस्थान में अल–बरकात की शाख़ क़ायम करने के लिये काफ़ी ज़मीन ख़रीदी जा चुकी

है। कानपुर में भी इस मक़सद के लिये ज़मीन की फ़राहमी की कोशिशें जारी हैं।

वह दिन दूर नहीं इंशाअल्लाहुर्रह़मान इस चिराग़ से बहुत ज़ल्द बहुत से चिराग़ रोशन होंगे, हर तरफ़ इल्म व फ़न का चिराग़ाँ होगा। चारों तरफ़ बरकाती परचम लहराएगा और यह सब कुछ हज़रत अमीने मिल्लत दामत बरकातुहू की कामयाब क़यादत में होगा। **इन्शा अल्लाह!**

ह़ज़रत अमीने मिल्लत का निकाह़ इलाहाबाद के मशहूर सादात घराने में हज़रत सय्यद आ़बिद अली साह़ब मरहूम व मग़फ़ूर की साह़बज़ादी सय्यदा आमिना ख़ातून से हुआ जो फ़ारसी में एम. ए. और बी. एड. की डिग्री याफ़्ता हैं, ह़ज़रत अमीने मिल्लत के दो साह़बज़ादे सय्यद मुह़म्मद अमान और मुह़म्मद सय्यद उस्मान और एक साह़बज़ादी सय्यदा ऐमन हैं। सय्यद मुह़म्मद अमान मियाँ ने मुस्लिम यूनिवर्सिटी से B.A. (English) और अल–बरकात से MBA की डिग्री ह़ासिल की फिर अल–जामियतुल अशरफ़िया से दर्से निज़ामी की तालीम ह़ासिल करके फ़िलह़ाल अल–बरकात शोबए इस्लामिया के Director हैं।

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त मुर्शिदे गेरामी की उ़म्र व सेह़त में बरकत फ़रमाए और फ़ैज़ाने साह़िबुल बरकात आपके वसीले से हम गुलामों को ह़ासिल होता रहे। **(आमीन)**

अह्ले ख़ानदान के अ़लावा ख़ुलफ़ा में से चन्द का नाम पेश हैः

सय्यद गुलज़ार मियाँ वासती, बह़रूल उ़लूम मुफ़्ती मुह़म्मद अ़ब्दुल मन्नान आज़मी, इमामे इ़ल्मो फ़न ख़्वाजा मुज़फ़्फ़र हुसैन, मुफ़्ती मुह़म्मद निज़ामुद्दीन साह़ब मिस्बाही

(जामिया अशरफ़िया, मुबारकपुर), मौलाना मुह़म्मद अह़मद मिस्बाह़ी साह़ब (जामिया अशरफ़िया, मुबारकपुर), मौलाना अ़ब्दुल मुबीन साह़ब नोमानी, मुफ़्ती ह़बीब यार ख़ाँ साह़ब, इन्दौर, मौलाना अ़सजद रज़ा ख़ाँ साह़ब, मौलाना अह़सन रज़ा ख़ाँ साह़ब, मुफ़्ती वली मुह़म्मद नागोरी, सय्यद नूरूल्लाह शाह बुख़ारी (सहलाव शरीफ़, राजस्थान), अ़ल्लामा अ़ब्दुस्सत्तार हमदानी, पोरबन्दर वग़ैरा।

शर्फ़े मिल्लत
हज़रत सय्यद मुहम्मद अशरफ़ मियाँ क़ादरी बरकाती

आप हज़रत अहसनुल उल्मा रहमतुल्लाह अ़लैह के दूसरे साहबज़ादे है। आपकी विलादत 8 जुलाई 1957/14 शाबान 1374 हिजरी को ननिहाल सीतापुर में हुई। हज़रत सय्यदुल उल्मा ने आपका नाम सय्यद मुहम्मद अशरफ़ रखा।

बिस्मिल्लाह ख़्वानी वालिदे माजिद ने कराई। आपकी तालीम का आग़ाज़ मदरसा क़ासिमुल बरकात से हुआ। कुरआने अ़ज़ीम का दर्स हज़रत वालिदे माजिद, फूफी साहिबा सय्यदा हाफ़िज़ा आ़इशा ख़ातून और सय्यदा हाफ़िज़ा ज़ाहिदा ख़ातून और हाफ़िज़ अ़ब्दुर्रहमान ने दिया। उर्दू की तालीम मुंशी सईदुद्दीन और मुंशी नसीर अहमद ने दी। क़स्बे से हाई स्कूल करके अ़लीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में दाख़िल हुए जहाँ से बी. ए. ऑनर्स और फिर एम. ए. गोल्ड मेडल के साथ पास किये। UPSC मुक़ाबलाजाती इम्तिहान में हिस्सा लिया, पहले IPS के ओ़हदे के लिये मुन्तख़ब हुए लेकिन वालिदे माजिद की इस सर्विस में मर्ज़ी न देखते हुए IPS में ज्वाइन नहीं किया। फिर Civil Service के इम्तिहान में शरीक हुए और दुबारा IRS में आपका इन्तिख़ाब हुआ।

शर्फ़े मिल्लत को यह शर्फ़ भी हासिल है कि Civil Service Exam को उर्दू मीडियम के साथ कामयाबी हासिल करने वाले आप पहले उम्मीदवार हैं। इण्डियन रेवन्यू सर्विस (IRS) में मुख़्तलिफ़ आला ओ़हदों पर रहते हुए फ़िलवक़्त चीफ़ कमिशनर इन्कम टैक्स कोलकाता के ओ़हदे पर फ़ाइज़ हैं।

हज़रत ताजुल उल्मा रहमतुल्लाह अलैह ने विलादत के बाद ही सीतापुर जाकर आपको बैअत से मुशर्रफ़ किया। वालिदे मोहतरम हज़रत अहसनुल उल्मा और बड़े अब्बा हज़रत सय्यदुल उल्मा और हज़रत वारिसे पंजतन ने तमाम सिलसिलों की ख़िलाफ़तो इजाज़त अता फ़रमाई लेकिन आप इन्किसारी के सबब लोगों को दाख़िले सिलसिला नहीं फ़रमाते हैं।

आपकी शादी प्रोफ़ेसर सय्यद अली अशरफ़ साहब मरहूम साबिक़ वाइस चान्सलर जामिया मिल्लिया की साहबज़ादी सय्यदा निशात अशरफ़ से हुई। सय्यदा निशात अशरफ़ साहिबा ने अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी गर्ल्स कॉलेज से M. SC (Chemistry) है। उनसे आपके दो बेटे सय्यद नबील अशरफ़, सय्यद नाज़िम अशरफ़ और एक बेटी सय्यदा शिफ़ा अशरफ़। एक बेटा और एक बेटी अभी तालीम हासिल कर रहे हैं। बड़े साहबज़ादे सय्यद नबील मियाँ हाल ही में Probationary Officer के Exam में कामयाब होकर Indian Overseas Bank में मैनेजर हैं।

दुनियावी एतबार से बड़े मन्सब पर फ़ाइज़ होने के बावुजूद ख़ानवादे के तमाम इम्तियाज़ात से भी आपको ख़ूब हिस मिला। दीनी मिज़ाज, उल्मा व मशाइख़ का एहतेराम, इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम, बुज़ुर्गाने दीन से मुहब्बत, तवाज़ो इन्किसारी, ख़ुलूसो मुहब्बत, मुरव्वत और संजीदगी व बुर्दबारी जैसी अच्छी सिफ़ात आपकी शख़्सिय्यतो किरदार में रचे बसे हैं। ग़रीबों की मदद के लिये हर वक़्त ख़ुशी से तैयार रहना आपको सबसे ज़्यादा अच्छा लगता है। हज़रत शर्फ़े मिल्लत बहुत बा तदबीर और हलीम शख़्सिय्यत के हामिल हैं। छोटे छोटे जुमलों में बड़ी बड़ी नसीहतें कर देना आपकी शख़्सियत का अहम हिस्सा है।

आपका शुमार बर्रे सग़ीर के मुम्ताज़ अफ़साना निगारों में होता है। आपको उर्दू अदब और तसनीफ़ो

तालीफ़ से ख़ास शग़फ़ है। अफ़साने, कहानियाँ और नाविल लिखने के अ़लावा आप बुलन्द पाया शायर भी हैं। नात व मन्क़बत की तरफ़ ख़ुसूसी तवज्जो फ़रमाते हैं। आपकी बहुत सी तसनीफ़ात मन्ज़रे आ़म पर आ चुकी हैं। आपकी इ़ल्मी और अदबी ख़िदमात पर आपको हुकूमते हिन्द की जानिब से साहित्य अकेडमी अवार्ड भी ह़ासिल हो चुका है। इसके अ़लावा कथा अवार्ड, Lifetime Achievement Award for Fiction. अभी ह़ाल ही में मध्य प्रदेश हुकूमत की जानिब से इक़बाल सम्मान के लिये भी आपका नाम तजवीज़ हुआ है। आपकी तसानीफ़ यह हैंः

सल्लू अ़लैहि व आलिहीः यह ह़म्द, नात और मनाक़िब का मजमूआ़ है। यह किताब भी छपकर आ़शिक़ाने रसूल से दादो तह़सीन वुसूल कर चुकी है।

बादे सबा का इन्तज़ारः यह कहानियों का मजमूआ़ है जिस पर आपको सूबाई हुकूमत की तरफ़ से साहित्य अकेडमी अवार्ड के साथ एक लाख नक़द ईनाम और तौसीफ़ी सनद पेश की गई है। यह 2001 में शाए हुआ था।

डार से बिछड़ेः यह भी आपकी तख़लीक़ी कहानियों का पहला मजमूआ़ है जो अब कई कॉलेजों के उर्दू के निसाब में शामिल है।

नम्बरदार का नीलाः यह एक उ़म्दा नाविल है जिसमें नीला किरदार के ज़रिये आपने इन्सानों के मुख़तलिफ़ किरदारों को पेश किया है। इसके बारे में हिन्दुस्तान के एक बड़े अदीब और नक़्क़ाद शम्सुर्रह़मान फ़ारूक़ी ने कहा कि ''ऐसा नाविल तो अंग्रेज़ी ज़ुबान में भी नहीं पढ़ा।

मीर अम्मन क़िस्सा सुनोः यह भी आपकी तख़लीक़ी नाविल है जो चार ह़िस्सों पर मुश्तमिल है।

ह़ज़रत शर्फ़े मिल्लत मुस्लिम यूनिवर्सिटी की तालिबे इ़ल्मी की ज़िन्दगी में बेह़द मुम्ताज़ और मह़बूब शख़्सियत शुमार किये जाते थे। अ़लीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी की

All India Sir Syed Debate में दो बार ख़िताब हासिल किया। अंजुमने उर्दू–ए–मुअ़ल्ला के सेक्रेटरी और अ़लीगढ़ मैग्ज़ीन के एडीटर रहे। यूनिवर्सिटी लिट्रेरी क्लब के भी सेक्रेटरी रहे।

इनके अ़लावा दर्जनों इ़ल्मी व अदबी मज़ामीन, ग़ज़लें और नज़्में हिन्दुस्तान और बैरूने हिन्द के बड़े रिसालों में छप चुके हैं। आपकी कई कहानियों के तर्जुमे दूसरी ज़ुबानों में छप चुके हैं। अ़लीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, दिल्ली यूनिवर्सिटी, कश्मीर यूनिवर्सिटी में आपकी अदबी ख़िदमात पर Ph. D. और M. Phil हो रही है।

इ़ल्म की तरवीजो इशाअ़त का ख़ानदानी वस्फ़ भी आप में ख़ूब ख़ूब मौजूद है। अल–बरकात एजूकेशनल सोसायटी के आप नाएब सदर हैं और उसकी मन्सूबासाज़ी और इदारासाज़ी में आप ह़ज़रत अमीने मिल्लत के कंधे से कंधा मिलाकर ख़िदमात अन्जाम दे रहे हैं। जामिया अल–बरकात आपकी फ़िक्रो तदबीर, तामीरी ज़ह्न, इंतिज़ामी सलाह़ियतों का ह़सीन अ़क्स है। इसके अ़लावा ख़ानक़ाह व दरगाह शरीफ़ के तामीरी मामलात, इन्तिज़ामो इन्सिराम, उ़र्स शरीफ़ की मह़ाफ़िल व मजालिस की तरतीब, ख़ानक़ाह शरीफ़ के पैग़ाम को आ़म करने के लिये मुसलसल काविशें आपकी ज़ात की मरहूने मिन्नत हैं।

अल्लाह तआ़ला आपका साया सेह़त व सलामती के साथ हमारे ऊपर क़ायम रखे। **(आमीन)**

हज़रत सय्यद मुहम्मद अफ़ज़ल मियाँ क़ादरी

हज़रत अफ़ज़ल मियाँ साहब हज़रत अहसनुल उल्मा के तीसरे साहबज़ादे हैं। आपकी विलादत 1963 ई0 में मारहरा मुतहहरा में हुई। कुरआने अ़ज़ीम घर के बुज़ुर्गों से पढ़ा। अ़लीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से L.L.B. और L.L.M. किया। सन 1990 में IPS में मुन्तख़ब हो गए। अफ़ज़ल मियाँ साहब भी अपने बिरादरे मोहतरम शर्फ़े मिल्लत ही की तरह उर्दू मीडियम से Civil Services में मुन्तख़ब हुए। पुलिस जैसे मुहकमे में होने के बावुजूद जहाँ जहाँ तैनात रहे वहाँ वहाँ लियाक़त, ईमानदारी और शराफ़त का उ़म्दा मयार पेश किया। मध्य प्रदेश के तमाम बड़े पुलिस अफ़सरान उनके नाम और उ़म्दा कामों से वाक़िफ़ हैं। अ़लीगढ़ यूनिवर्सिटी और जामिया मिलिया इस्लामिया देहली में रजिस्टरार रह चुके हैं। आपकी 18 साला ईमानदारानी ख़िदमत और मुल्क हिफ़ाज़त के लिये कई ख़िदमात के पेशे नज़र 2011 में आपको राष्ट्रपति अवार्ड से नवाज़ा गया। हज़रत अफ़ज़ल मियाँ अपने तालिबे इ़ल्मी ही के ज़माने में मुस्लिम यूनिवर्सिटी में बहुत मारूफ़ थे। आपकी ख़िताबत और गुफ़्तगू के आज तक लोग क़ायल हैं। मुस्लिम यूनिवर्सिटी सर सय्यद डिबेट में तीन मर्तबा ख़िताब जीता। यूनिवर्सिटी लिट्रेरी क्लब के सेक्रेटरी रहे। गुफ़्तगू के फ़न में अपना एक अलग मक़ाम रखते हैं। अपने असलाफ़ के नक़्शे क़दम पर चलते हुए उसी दर्दमन्द दिल, ग़ुरबा परवरी, सख़ावत, इन्किसार के जज़्बे से सरशार हैं। सिलसिलए बरकातिया की तरवीजो इशाअ़त के लिये अपने मन्सब की मसरूफ़ियात के बावुजूद कोशिशें और काविशें करते रहते हैं। अल–बरकात

सोसायटी के Founder और Executive member हैं। इदारा चलाने में आने वाली दुशवारियों को ह़ल करने में आपकी ज़ात ह़द दर्जा मुफ़ीद और मददगार है।

मुस्लिम यूनिवर्सिटी से मदारिसे अह्ले सुन्नत का इलह़ाक़ आप ही की पुर असर पेशक़दमी का नतीजा है। अफ़ज़ल मियाँ साह़ब को तह़रीर और तक़रीर में मलका ह़ासिल है। अ़लीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के सीरत के जलसे में एक मर्तबा राक़िम की गुज़ारिश पर तक़रीर फ़रमाई तो मजमे की ह़ैरानी का आ़लम था, एक IPS ऑफ़िसर और रजिस्ट्रार सीरत के ह़वाले से ऐसी जामे और मालूमाती गुफ़्तगू फ़रमा रहे हैं।

अफ़ज़ल मियाँ साह़ब को अल्लाह तआ़ला ने ख़िताबत की ख़ुदादाद सलाह़ियत के अ़लावा कहानियाँ और सवानेह़ी ख़ाके लिखने का फ़न अ़ता फ़रमाया है। उनकी कहानियाँ और मज़ामीन हिन्दुस्तान के मयारी रिसालों में शाए होते हैं।

अफ़ज़ल मियाँ साह़ब का ह़लक़ा बहुत वसी है और वह अपने अख़लाक़, मुतह़र्रिक और फ़आ़ल तबीअ़त की बिना पर अफ़सरान के ह़लक़े में बहुत मशहूर भी हैं और मह़बूब भी। आपको ख़िलाफ़तो इजाज़त वालिदे माजिद हुज़ूर अह़सनुल उल्मा रह़मतुल्लाह अ़लैह से ह़ासिल है।

सय्यद मुह़म्मद अफ़ज़ल मियाँ का अ़क़्द ह़ज़रत अमीने मिल्लत की बेगम की छोटी बहन सय्यदा राशिदा ख़ातून साह़िबा से हुआ जो तालीम के ज़ेवर से आरास्ता हैं। आपके एक बेटे सय्यद बरकात ह़ैदर और एक बेटी सय्यदा कायनात हैं। माशा अल्लाह दोनों ज़ेरे तालीम हैं। अल्लाह तआ़ला उनकी उ़म्र और सेह़त में बरकत अ़ता फ़रमाए और उनके फ़ैज़ को मख़लूक़े ख़ुदा पर आ़म रखे। **(आमीन)**

रफ़ीक़े मिल्लत हज़रत सय्यद शाह नजीब हैदर नूरी
सज्जादानशीन, आस्तानए आलिया बरकातिया, मारहरा शरीफ़

रफ़ीक़े मिल्लत सय्यद शाह नजीब हैदर हुज़ूर अहसनुल उल्मा के सबसे छोटे साहबज़ादे हैं। आप 1 जुलाई 1967 में मारहरा शरीफ़ में पैदा हुए। कुरआने अ़ज़ीम अपनी फूफी सय्यदा हाफ़िज़ा ज़ाहिदा ख़ातून से और कुछ हिस्सा अपने वालिदे माजिद हुज़ूर अहसनुल उल्मा से पढ़ा। उर्दू की तालीम वालिदा माजिदा ने दी। आगरा यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन करने के बाद आप अपने वालिदे माजिद हुज़ूर अहसनुल उल्मा अ़लैहिर्रहमा के साथ ही रहे और ख़ानक़ाहे बरकातिया की ख़िदमात अन्जाम देने में उनकी मदद फ़रमाते रहे। हुज़ूर अहसनुल उल्मा ने आपकी तरबियत इस अन्दाज़ से की है कि आप ख़ानक़ाह, दरगाह, उ़र्स और जायदाद की मामलात और इन्तिज़ामात की निगरानी में माहिर हो गए। सिलसिले के मुरीदीन व मुतवस्सिलीन से आपका रब्त ज़्यादा रहा। अपनी ख़ुशमिज़ाजी और नर्म अख़लाक़ के बाइ़स बहुत मक़बूल हैं।

हज़रत रफ़ीक़े मिल्लत को बैअ़त हज़रत मुफ़्ती–ए–आज़म अ़लैहिर्रहमा से है। सिलसिलए क़ादरिया बरकातिया में ख़िलाफ़त व इजाज़त अपने वालिदे माजिद हुज़ूर अहसनुल उल्मा और हज़रत वारिसे पंजतन रहमतुल्लाह अ़लैहिमा से है। हज़रत अमीने मिल्लत ने अपनी रस्मे सज्जादगी के मौक़े पर सबसे पहली ख़िलाफ़त

रफ़ीक़े मिल्लत को अ़ता फ़रमाई। इन बुज़ुर्गों की ह़यात में ही मारफ़त की चाहत रखने वाले ह़ज़रात आपकी ख़ुदादाद सलाह़ियतों और कैफ़ियते जज़्ब को देखकर आपके हाथ पर बैअ़त होने लगे।

आपको आपके ताऊ ह़ज़रत वारिसे़ पंजतन अ़लैहिर्रह़मा ने गोद लिया और आपको अपना वारिस़ व वलीअ़हद और सज्जादानशीन अपनी ह़याते ज़ाहिरी में फ़रमा दिया। उनके चहल्लुम के दिन उल्मा व मशाइख़ की मौजूदगी में आप सज्जादए आ़लिया नूरिया पर जलवा अफ़रोज़ हुए।

अपने क़सबे मारहरा में आप बहुत मक़बूल हैं और यहाँ के लोग आपको बहुत चाहते भी हैं। आपको ख़ुदा–ए–तआ़ला ने दिले दर्दमन्द की दौलत से नवाज़ा। आप जहाँ तक हो सकता है बन्दगाने ख़ुदा की हर जाइज़ ख़िदमत करने के लिये तैयार रहते हैं। मेहमाननवाज़ी में भी अपने बुज़ुर्गों के नक़्शे क़दम पर चलते हैं। आपकी इन्हीं ख़ूबियों की वजह से उ़लमा–ए–केराम भी आपसे बड़ी मुह़ब्बत फ़रमाते हैं। मस्जिदे बरकाती में जहाँ आपके वालिदे माजिद ह़ज़रत अह़सनुल उल्मा अ़लैहिर्रह़मा ने 54 बरस तक ख़िताबत की ख़िदमत अन्जाम दी अब वह ख़िदमत आपके सुपुर्द है। अल्लाह तआ़ला ने आपको तक़रीर का जौहर अ़ता किया है। हज़ारों लाखों के मजमे में बरजस्ता तक़रीर करते हैं और जब तक़रीर करते हैं तो एक अ़जीब जज़्ब की कैफ़ियत तारी रहती है जो अपने सुनने वालों को अपने अन्दर समेट लेती है।

ख़ानक़ाहे बरकातिया में तामीर, दरगाह के इन्तिज़ाम, तमाम उ़र्सों, मशाइख़ के सालाना फ़ातिह़ा,

ज़ायरीने दरगाह से मुलाक़ात जैसे तमाम काम हज़रत रफ़ीक़े मिल्लत बख़ूबी करते हैं। रफ़ीक़े मिल्लत पीरे तरीक़त होने के साथ साथ एक अच्छे मुन्तज़िम हैं, उनको काम करने व कराने का हुनर और सलीक़ा ख़ूब आता है।

अपने वतन मारहरा शरीफ़ में क़सबे के लोगों के लिये आला तालीम के वास्ते हज़रत रफ़ीक़े मिल्लत ने ''मारहरा पब्लिक स्कूल'' शुरू किया जिसमें 900 बच्चे मयारी तालीम हासिल कर रहे हैं। दीनी तालीम के लिये ''जामिया अहसनुल बरकात'' उनकी निगरानी में चल रहा है और उम्मीद है कि आने वाले दिनों में यह दारूल उ़लूम अह्ले सुन्नत का फ़ख़्र होगा।

हुज़ूर अहसनुल उल्मा के विसाल के बाद हज़रत रफ़ीक़े मिल्लत ने मुल्क के कोने कोने में तब्लीग़ी दौरे किये और सिलसिलए बरकातिय के फ़रोग़ के लिये बड़ी मुख़लिस कोशिशें कीं। हज़रत रफ़ीक़े मिल्लत उ़लमा–ए–किराम से बहुत मुहब्बत फ़रमाते हैं, उनकी ख़ातिर तवाज़ो में रफ़ीक़े मिल्लत का अंदाज़ दाद देने के क़ाबिल होता है।

रफ़ीक़े मिल्लत की सीरत का एक पहलू उनकी शख़्सियत को इम्तियाज़ी सफ़ में लाकर खड़ा करता है और वह है उनका समाजी ख़िदमात का ज़ौक़। बीमारों का इलाज कराने, बच्चियों की शादियाँ कराने, लोगों के घर तामीर कराने में वह ख़ुद को हमेशा अव्वल सफ़ में रखते हैं। उनका दस्तरख़्वान बहुत वसी है। ख़ानक़ाह में उनके दम से सख़ावत और ज़ियाफ़त की बहारें हैं।

अल्लाह तआ़ला अपने नबी–ए–करीम के सदक़े व तुफ़ैल में आपको लम्बी उ़म्र अ़ता फ़रमाए और बन्दगाने ख़ुदा आपसे यूँ ही फ़ैज़याब होते रहें।

आपकी शादी अपनी सबसे छोटी ख़ाला की सबसे छोटी बेटी सय्यदा शबिस्ता साहिबा से 1994 ई0 में हुई। आपकी अह्लिया ज़ेवरे तालीम से आरास्ता हैं। उनसे आपकी एक साह़बज़ादी सय्यदा आ़रिफ़ा और दो साह़बज़ादे सय्यद ह़सन हैदर और मुह़म्मद मोह़सिन। तीनों अभी तालीम ह़ासिल कर रहे हैं।

आपके ख़ुलफ़ा में ये नाम ख़ुसूसियत के साथ ज़िक्र किये जाते हैं:

सय्यद मुह़म्मद अमान क़ादरी, सय्यद ह़सन ह़ैदर क़ादरी, मुफ़्ती आफ़ाक़ अह़मद साह़ब मुजद्दिदी क़न्नौज, मुफ़्ती मुह़म्मद ह़नीफ़ बरकाती कानपुर, मुह़म्मद उवैस रज़ा साह़ब क़ादरी पाकिस्तान, मौलाना मुजीब अशरफ़ साह़ब, मौलाना सग़ीर अह़मद जोखनपुरी या जौनपुरी, मुफ़्ती क़लन्दर साह़ब कर्नाटक, ह़ाजी अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार परदेसी, ह़ाजी मुह़म्मद आ़रिफ़ परदेसी।

ख़ानक़ाहे बरकातिया में रस्मे सज्जादगी का बयान

ख़ानदाने बरकातिया की रस्मे सज्जादगी किस तर्ज़ से अदा की जाती है, इसका बयान ह़ज़रत ताजुल उल्मा के क़लम से मुलाह़ज़ा कीजिए। ताजुल उल्मा फ़रमाते हैं:

''हमारे ख़ानदान में सज्जादानशीनी की रस्म इस तरह चली आती है कि सज्जादानशीन विसाल पाने वाले के इन्तिक़ाल के बाद उसके चहल्लुम के दिन कुन्बा व बिरादरी और शहर और आस पास के अ़ज़ीज़ और क़रीबी रिश्तेदार और सिलसिले के लोग, ख़ुलफ़ा–ए–ख़ानदान, अ़वाम और ख़ास जमा होते हैं और उसके बेटे या उसकी ग़ैरमौजूदगी में भाई वग़ैरा शरई वारिस़ को (जो उस शख़्स से बैअ़त या सज्जादानशीनी की इजाज़त भी रखता हो जिसकी जगह वह सज्जादानशीन होना चाहता है) ख़ानदान के बुज़ुर्गों और पुर्खों और सिलसिले के बड़े लोग तबर्रूकाते ख़ानदानी जैसे ख़िरका और इमामा और सैली और तसबीह़ वग़ैरा (जो हर एक घर में अपने अपने बुज़ुर्गों के अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा भी हम लोगों के पास हैं और कुछ तबर्रूकात में सब का ह़िस्सा है) साथ लेकर दरगाह शरीफ़ ले जाते और वहाँ जिस बुज़ुर्ग का वह सज्जादानशीन होना चाहता है, उसके मज़ार या हुज़ूर साहि़बुल बरकात रह़मतुल्लाह अ़लैह के मज़ारे मुबारक पर तबर्रूकात और लिबास रख कर बुज़ुर्गाने सिलसिला से वसीला और मदद माँग कर फ़ातिह़ा पढ़ कर फिर उन तबर्रूकात से उस शख़्स को सँवार कर फ़क़ीर और ख़ादिम ह़ज़रात आगे आगे **''अल्लाह''** पुकारते हुए मजमा के साथ वापस लाते और सज्जादानशीनी के मकान में जो अपने अपने अलग हैं, सज्जादानशीनी की मसनद पर बिठाते हैं और उसके बाद हाज़िरीन नज़रें पेश करते हैं और अ़क़ीदतमंद ह़ज़रात

बैअ़त करते हैं और सज्जादानशीनी की रस्म तमाम हो जाती है। (तारीख़े ख़ानदाने बरकात, पेजः 103)

तबर्रूकाते ख़ानक़ाहे बरकातिया, मारहरा शरीफ़ की तफ़सील

अल–ह़म्दुलिल्लाह मारहरा शरीफ़ का यह इम्तियाज़ मुसल्लम है कि यहाँ बड़ी तादाद में सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम और अह्ले बैते अतहार के तबर्रूकात मौजूद हैं। उ़र्सों के मौक़ों पर ख़ास व आ़म सभी तरह के लोगों को इनकी ज़ियारत कराई जाती है। तफ़सील यह हैः

1– हुज़ूर पाक की दाढ़ी के बाल (मूए मुबारक), हुज़ूर के क़दम शरीफ़ का नक़्श, हुज़ूर का जूता मुबारक

ये तीनों तबर्रूकात ख़ानक़ाहे बरकातिया में इस तरह आए कि ह़ाजी जाफ़र बिन ह़ाजी जमालुद्दीन बिलाली ह़र्बी मारहरा लाए और ह़ज़रत सय्यद शाह ह़मज़ा ऐनी रह़मतुल्लाह अ़लैह को इनकी ज़ियारत कराई। इन तबर्रूकात की ज़ियारत करते ही ह़ज़रत ह़मज़ा के दिल में ख़्याल पैदा हुआ कि काश ह़ाजी साह़ब मेरी कुल जायदाद ले लें और यह तबर्रूकात मुझे इ़नायत कर दें। यह ख़्याल पैदा होते ही आपने ह़ाजी साह़ब से ज़िक्र किया मगर ह़ाजी साह़ब राज़ी नहीं हुए और इन तबर्रूकात को लेकर मारहरा से चले गए। तबर्रूकात न मिलने पर ह़ज़रत शाह साह़ब को बड़ा दुख हुआ। उसी रात ख़्वाब में हुज़ूर सल्लल्लाहु

तआ़ला अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई आपने फ़रमायाः साह़बज़ादे! रंजीदा क्यों होते हो? हमको तुम्हारी ख़ातिर सब कुछ मन्ज़ूर है। तुमको तुम्हारी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ मैंने वह तीनों तबर्रूकात दे दिये। चुनान्चे एक दिन ह़ाजी साह़ब वह तबर्रूकात लेकर मारहरा ह़ाज़िर हुए और सनद के साथ ह़ज़रत की ख़िदमत में पेश कर दिया। यह तबर्रूकात सनद के साथ ख़ानक़ाहे बरकातिया में अब तक मौजूद हैं।

2– ह़ज़रत इमामे ह़सन और ह़ज़रत इमामे हुसैन शहीदे करबला की दाढ़ी के बाल मुबारक

ये तमाम तबर्रूकात हुज़ूर साहि़बुल बरकात रह़मतुल्लाह अ़लैह के एक मुरीदे ख़ास नवाब रूहुल्लाह ख़ान साह़ब मेरठी ने अपने पीरो मुर्शिद को नज़्र किये थे। इन तबर्रूकात के पहुँचने से पहले ही हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह व सल्लम ने हुज़ूर साहि़बुल बरकात को ख़्वाब में बशारत दी थी। उसके बाद नवाब रूहुल्लाह ख़ान साह़ब मारहरा ह़ाज़िर हुए और यह तबर्रूकात ह़ज़रत को नज़्र किये थे। यह तबर्रूकात सनद के साथ ख़ानक़ाह शरीफ़ में मौजूद हैं।

3– ह़ज़रत अ़ली रदियल्लाहु अ़न्हु की दाढ़ी का बाल

ये मूए मुबारक सादाते ज़ैदिया का आबाई और निहायत मुस्तनद है और ह़ज़रत ज़ैद शहीद रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से सिलसिला ब सिलसिला सय्यद मुह़म्मद रौशन बिलग्रामी की बीबी साहि़बा तक पहुँचा। यह बीबी साहि़बा ह़ज़रत अच्छे मियाँ और ह़ज़रत सुथरे मियाँ की ह़क़ीक़ी नानी थीं। जब इन दोनों ह़ज़रात को इनके मामू नव्वाब सय्यद नूरूल ह़सन ख़ाँ साह़ब बहादुर ने अपनी

जागीर क़स्बा कुवात ज़िला आरा में बुलवाया और ख़ूब साज़ो सामान दिया उस वक़्त इनकी नानी ने यह मूए मुबारक यह कहकर दिया कि ''तुम्हारे मामू ने तुमको बहुत कुछ दिया मैं भी यह यादगार तुमको देती हूँ जो मुझे मेरे आबा व अजदाद से सिलसिला ब सिलसिला पहुँचा है।'' यह तबर्रुकात आज भी मौजूद हैं।

4– हज़रत मौला अ़ली का जुब्बा मुबारक

ये जुब्बा हज़रत हसन बसरी रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पास था और उनसे हज़रत महबूबे सुबहानी सय्यदना शेख़ अ़ब्दुल क़ादिर सुबहानी रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु तक पहुँचा फिर उनसे हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु तक पहुँचा फिर वास्ता ब वास्ता हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया और हज़रत साहिबुल बरकात रहमतुल्लाह अ़लैहिमा तक पहुँचा। यह जुब्बा आज तक ख़ानक़ाह शरीफ़ में मौजूद है और सज्जादानशीनी के दिन जो ख़रक़ापोशी की रस्म होती है तो दूसरे ख़रक़ों के साथ यह जुब्बा भी पहनाया जाता है और यही ख़रक़ा सबसे ऊपर होता है लेकिन चूँकि यह चौदह सौ साल पहले का है इसलिये अब तबर्रुक के तौर पर सिर्फ़ कंधों पर डाल दिया जाता है।

5– संगे ख़ैबरी (मोहरा संग)

ये पत्थर हज़रत अ़ली की करामत का नमूना है। किसी मैदान में आपको घोड़ा बाँधने की ज़रूरत पेश आई थी, आपके पास डोरी नहीं थी जिसकी वजह से एक पत्थर से रेशम खींच कर उसे अपने घोड़े से बाँध दिया था, यह मोहरा संग उसी पत्थर का टुकड़ा है, इससे आज तक रेशम निकलता है। यह मोहरा संग भी इस ख़ानदान का

मौरूसी और क़दीमी निहायत मुस्तनद है और हज़रत ज़ैद शहीद रदियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से इस वक़्त तक नस्ल दर नस्ल इस घरने में चला आ रहा है। इसकी सनद भी मौजूद है।

6– मूए मुबारक (दाढ़ी का बाल) हज़रत ग़ौसे़ पाक रदियल्लाहु तआ़ाला अन्हु व तसबीह़ के दाने

ये मूए मुबारक शम्से मारहरा हज़रत अच्छे मियाँ साहब के ज़माने में इस ख़ानदान में पहुँचा। जिस दिन यह मूए मुबारक आपको मिला आप बहुत ख़ुश हुए और सजद–ए–शुक्र अदा करने के बाद फ़रमायाः ''आज हमारे घर में असलाफ़े किराम और मुर्शिदाने एज़ाम के तमाम तबर्रूकात की तकमील हो गई।'' हज़रत ग़ौसे़ आज़म की तसबीह़ के सात दाने भी तबर्रूकात में हैं जिनको ग़ौसे़ आज़म ने बूअ़ली शाह क़लन्दर पानीपती के हाथ भेजकर सात कुतुबों की बशारत दी थी।

इन तबर्रूकात के अ़लावा ख़ानवाद–ए–बरकातिया के तक़रीबन सारे मशाइख़े किराम के बहुत से तबर्रूकात ख़ानक़ाह में मौजूद हैं और इन तबर्रूकात की उ़र्सों के मौक़े पर ज़ियारत कराई जाती है।

मज़ाराते औलिया पर हाज़िरी के आदाब

- मज़ारात–ए–औलिया पर पायती (पैरों) की जानिब से हाज़िर हों और ज़रा फ़ासले से क़ब्र–ए–मुबारक के बायीं जानिब वहाँ खड़े हों जहाँ मय्यत का चेहरा होता है फिर अदब से सलाम अर्ज़ करें "अस्सलामु अलैक या सैय्यदी व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू"। उसके बाद फ़ातिहा पढ़ें।
- दूसरे लोग भी फ़ातिहा पढ़ रहे हों तो बुलन्द आवाज़ से न फातिहा पढें, न सलाम।
- मज़ारात को बोसा देना जायज़ है लेकिन बेहतर यह है कि मज़ारात को न हाथ लगायें और न चूमें।
- मज़ारात–ए–मुबारका पर पेशानी हरगिज़ हरगिज़ न रखें कि ये सख़्त मना है।
- कपड़े की चादर पेश करना भी जायज़ है, लेकिन बेहतर यह है कि फूलों की चादर पेश करें। इससे औलिया–ए–किराम की मुबारक रूहें ज्यादा खुश होती हैं।
- अगरबत्ती मज़ारात से ज़रा हट कर जलायें क्योंकि इसका फ़ायदा ख़ुशबू है और आग

की चीज़ों को कब्र से दूर रखने का हुक्म है।

- रोशनी पहले से मौजूद हो तो मोमबत्ती न जलायें क्योंकि यह फुजूलख़र्ची है। वरना ज़रा फ़ासले से मोमबत्ती रोशन करें।
- मज़ार की जानिब पीठ न होने पाये क्यों कि ये बे अदबी है। इसका ज्यादा ख़्याल उन लोगों को रखना चाहिए जो बेश्तर औक़ात (अधिकतर समय) दरगाह में हाज़िर रहते हैं। ताकि लोग उनसे अदब सीखें।
- रौज़ा–ए–मुबारक में किसी के साथ बेतकल्लुफ बुलन्द आवाज़ से गुफ्तगू न करें कि ख़िलाफ़े अदब है।
- औरतों को जब मस्जि़द में नमाज़ पढ़ने के लिए हाज़िर होने की इज़ाज़त नहीं, तो इस दौर–पुर–फितन (फितने के ज़माने) में मज़ारात–ए–औलिया पर हाज़िरी की इजाज़त कैसे दी जा सकती है ? औरतें हरगिज़ मज़ारात–ए–औलिया पर हाज़िर न हों, यही हुक्मे शरियत है।

मज़ाराते औलिया पर हाज़िरी के यही आदाब इमामे अह्ले सुन्नत आला हज़रत इमाम अह़मद रज़ा क़ादरी बरकाती अलैहिर्रह़मा ने अपने फ़तावा में बयान फ़रमाया है।

फ़ातिहा का आसान तरीक़ा

पहले तीन या पाँच या सात मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ें, फिर चारों कुल शरीफ़ मय सूरह फातिहा और आलम मुफ़्लिहून तक पढ़ें।

दुरूद शरीफ़: सल्लल्लाहु अलन–नबिय्यिल उम्मिय्यि व आलिहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सलातुंव व सलामन अलैका या रसुलूल्लाह।

बिस्मिल्लाहिर्रहामनिर्रहीम

- अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन। अर्रह़मानिर्रहीम। मालिकि यौमिद्दीन इय्या–क नअ्बुदु व इय्या–क नस्तअ़ीन। इह्दिनस्सिरातल–मुस्तक़ीम। सिरातल्लज़ी–न अन अ़म–त अ़लैहिम। ग़ैरिल–मग़ज़ूबि अ़लैहिम व लज़्ज़ाल्लीन। **(आमीन)**
- कुल् या अय्युहल काफ़िरून। ला अअ्बुदु मा तअ्बुदून। वला अन्तुम् आबिदू–न मा अअ्बुद। व ला अ–न आ़बिदुम्–मा अ़बत्तुम्। व ला अन्तुम् आ़बिदू–न मा अअ्बुद। लकुम दीनुकुम् व लि–य दीन।

- कुल् हुवल्लाहु अ—हद। अल्लाहुस—समद्। लम् यलिद् व लम् यूलद्। व लम् यकुल्—लहू कुफ़ुवन् अ—हद।
- कुल् अऊ़जु बिरब्बिल् फ़—लक़। मिन् शर्रि मा ख़—ल—क़। व मिन् शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा व—क़ब्। व मिन् शर्रिन्—नफ़्फ़ासाति फ़िल्—उ—क़द्। मिन् शर्रि हासिदिन् इज़ा ह—सद्।
- कुल् अऊ़जु बिरब्बिन्नासि। मलिकिन्नासि। इलाहिन्नास। मिन् शर्रिल् वस्वासिल—ख़न्नास। अल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नासि। मिनल्—जिन्नति वन्नास।

फिर आख़िर में तीन या पाँच या सात मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ें और बारगाहे इलाही में दोनों हाथ उठाकर यूँ दुआ करें:— या अल्लाह! हमने जो कुछ दुरूद शरीफ़ पढ़ा है और कुरआन मजीद की आयतें तिलावत की हैं उनका सवाब (अगर खाना या शीरीनी हो तो इतना और कहें कि इस खाने और शीरीनी का सवाब) मेरी जानिब से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नज़र पहुँचा दे, फिर उनके वसीले से जुमला अम्बिया—ए—इकराम अलैहिमुस्सलाम व सहाबा और तमाम औलिया उलमा को अता फ़रमा (फिर अगर किसी ख़ास बुज़ुर्ग को इसाले सवाब करना हो तो उनका ख़ुसूसीयत से नाम लें मसलन यूँ कहें कि हज़रत ग़ौस पाक रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु या ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को नज़र पहुँचा दें) और फिर जुमला मोमिनीन व मोमिनात की अरवाह को सवाब अता फ़रमा और अगर किसी आम आदमी को इसाले सवाब करना हो तो उसका ज़िक्र ख़ुसूसी से करें मसलन यूँ कहें कि ख़ुसूसन हमारे

वालिद, वालिदा या दादा, दादी या नाना, नानी की रूह को सवाब पहुँचा दे और फिर जुमला मोमिनीन व मोमिनात की अरवाह को सवाब पहुँचा दे।
मिनजानिबः अलबरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, अलीगढ़।

शजरए उ़लया ह़ज़राते आ़लिया क़ादरिया बरकातिया

या इलाही रह़म फ़रमा मुस्तफ़ा के वास्ते,
या रसूलल्लाह करम कीजिये ख़ुदा के वास्ते।

मुश्किलें ह़ल कर शहे मुश्किलकुशा के वास्ते,
कर बलाएँ रद शहीदे करबला के वास्ते।

सय्यदे सज्जाद के सदक़े में साजिद रख मुझे,
इ़ल्मे ह़क़ दे बाक़िरे इ़ल्मे हुदा के वास्ते।

सिदक़े सादिक़ का तसद्दुक़ सादिक़ुल इस्लाम कर,
बे ग़ज़ब राज़ी हो काज़िम और रज़ा के वास्ते।

बहरे मारुफ़ो सरी मारुफ़ दे बे ख़ुदसरी,
जुन्दे ह़क़ में गिन जुनैदे बा सफ़ा के वास्ते।

बहरे शिबली शेरे ह़क़ दुनिया के कुत्तों से बचा,
एक का रख अ़ब्दे वाह़िद बे–रिया के वास्ते।

बुल फ़रह का सदक़ा कर ग़म को फ़रह़ दे हुस्नो सअ़द,
बुलह़सन और बूसईदे सादज़ा के वास्ते।

क़ादरी कर, क़ादरी रख, क़ादरीयों में उठा,
क़द्रे अ़ब्दुल क़ादिरे कुदरतनुमा के वास्ते।

अह़सनल्लाहु लहुम रिज्क़न से दे रिज़्क़े ह़सन,
बन्दए रज़्ज़ाक़ ताजुल असफ़िया के वास्त।

नस्र अबी सालेह का सदक़ा सालेहो मन्सूर रख,
दे ह़याते दीं मुहीये जाँ फ़िज़ा के वास्ते।

तूरे इरफ़ानो उलूवो ह़म्दो हुस्ना वो बहा,
दे अ़ली मूसा ह़सन अह़मद बहा के वास्ते।

बहरे इब्राहीम मुझ पर नारे ग़म गुलज़ार कर,
भीक दे दाता भिकारी बादशा के वास्ते।

ख़ानए दिल को ज़िया दे रुए ईमाँ को जमाल,
शह ज़िया मौला जमालुल औलिया के वास्ते।

दे मुह़म्मद के लिये, रोज़ी कर अह़मद के लिये,
ख़्वाने फ़ज़्लुल्लाह से ह़िस्सा गदा के वास्ते।

दीनो दुनिया के मुझे बरकात दे बरकात से,
इ़श्क़े ह़क़ दे इ़श्क़िये इ़श्क़िन्तमा के वास्ते।

हुब्बे अह्ले बैत दे आले मुह़म्मद के लिये,
कर शहीदे इ़श्क़ ह़मज़ा पेशवा के वास्ते।

दिल को अच्छा तन को सुथरा जान को पुरनूर कर,
अच्छे प्यारे शम्से दीं बदरुल उ़ला के वास्ते।

दिल को अच्छा तन को सुथरा जान को पुरनूर कर,
सुथरे प्यारे नूरे ह़क़ शम्सुद्दुह़ा के वास्ते।

शजरए क़ुदसिया अमीरिया

दोनों आ़लम में हो मुझ पर तेरी रह़मत का नुज़ूल
शह अमीरे आ़लमे अह्ले सफ़ा के वास्ते

नामे नामी जिनका है हज़रत गुलामे मुह्ये दीं
बख़्श दे मुझको तू उनके इत्तिक़ा के वास्ते

शजरए मुबारका सादिक़ीया

मुझ को औलादे रसूले बा सफ़ा का रख गुलाम
शाह औलादे रसूल बाज़िया के वास्ते

क़ौलो फे़लो ह़ाल सब में मुझको तू सच्चा ही रख
शह मुह़म्मद सादिक़े मर्दे ख़ुदा के वास्ते

शजरए आ़लिया नूरिया

दो जहाँ में ख़ादिमे आले रसूलुल्लाह रख
ह़ज़रते आले रसूले मुक़्तदा के वास्ते

नूरे ईमाँ नूरे क़ल्बो नूरे क़ब्रो ह़श्र दे
बुलहुसैने अह़मदे नूरी ज़िया के वास्ते

मेरी क़िस्मत की बुराई नेकी से कर दे बदल
ह़ज़रते बुलक़ासिमे ख़ैरूलहुदा के वास्ते

हुब्बे औलादे रसूले पाक दे दिल में रचा
शाह औलादे रसूले रहनुमा के वास्ते

या इलाही बहरे ह़ज़रत मुस्तफ़ा ह़ैदर ह़सन
हुस्नो सफ़वत कर अ़ता उनके गदा के वास्ते

या इलाही अम्नो ईमाँ दे अमानतदार रख
मुरशिदी सय्यद अमीने बेरिया के वास्ते

सदक़ा इन अअ़याँ का दे छः ऐन इ़ज़्ज़ो इ़ल्मो अ़मल
इ़ल्मो इ़रफ़ाँ आ़फ़ियत इस बेनवा के वास्ते

किताबियात (ह़वाले)

1—सिराजुल अ़वारिफ़ — सय्यद शाह अबुल हुसैन अह़मदे नूरी

2— असहहुत्तवारीख़ — सय्यद शाह औ।लादे रसूल मुहम्मद मियाँ

3— तारीख़े ख़ानदाने बरकात — सय्यद शाह औलादे रसूल मुहम्मद मियाँ

4— मदाहे हुज़ूरे नूर क़लमी — क़ाज़ी गुलाम शब्बर क़ादरी

5— तज़किरए नूरी (मतबूआ़) — मौलाना उसैदुल ह़क़

6— बरकाते मारहरा — मौलाना तुफ़ैल अह़मद मुतावल्ली

7— अह्ले सुन्नत की आवाज़ शुमारा 1, 2, 3 — सय्यद शाह नजीब हैदर नूरी (मुदीर)

8— ह़याते शम्से मारहरा — मौलाना उसैदुल ह़क़ क़ादरी

9— मुस्तफ़ा से आले मुस्तफ़ा तक — सय्यद शाह आले रसूल ह़सनैन मियाँ नज़्मी

10— ह़याते आले रसूल — मौलाना मह़मूद अह़मद रिफ़ाक़ती